THE BOOK WAS DRENCHED

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_186436

UNIVERSAL
LIBRARY

H491.438 H3534
C49R
चन्द, ठाकुर.
रचना और व्याकरण. 1951

OUP—68—11-1-68—2,000

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H491.438 C49R Accession No. H3536

Author चन्द्र, ठाकुर.

Title रचना और व्याकरण. 1951.

This book should be returned on or before the date last marked below.

H491.438 H3532
C49R

चन्द, ठाकुर.
रचना और व्याकरण. 1951

JP—68—
O

रचना और व्याकरण

तृतीय भाग

(कक्षा ८ के बालक तथा बालिकाओं के लिए)

लेखक—

श्री० ठाकुर चन्द, एम० ए०

तथा

पं० एन० आर० सूतल—'साहित्यरत्न'

(Ex,) प्रधान, अध्यापक म्यू० बो०, आगरा

प्रकाशक—

पी० सी० द्वादशश्रेणी एण्ड कं० लि०

अलीगढ़ ।

प्रथमबार
२०००

सन् १९५१

मूल्य १=)

निवेदन

प्रस्तुत पुस्तक शिक्षा-विभाग द्वारा निर्धारित नवीन पाठ्य-क्रम के अनुसार लिखी गई है। इस बात का पूर्ण ध्यान रक्खा गया है कि व्याकरण जैसा शुष्क और नीरस विषय विद्यार्थियोंके लिए यथा सम्भव मनोरंजक और सरल हो। उदाहरणों द्वारा विषय समझाया गया है ताकि छात्रों को रटन्त बहुत कम करना पड़े, एक-दो बार पढ़ने से ही 'विषय' भलीभाँति हृदय मे घर कर जाता है। कक्षा की मस्तिष्क-सम्बन्धी योग्यता के अनुसार ही भाषा की शैली और शिक्षा-पद्धति रक्खी गई है। कठिन से कठिन विषय सरलतापूर्वक समझाया गया है। यथा-सम्भव नवीन शिक्षा-प्रणाली का अनुसरण और उदाहरणों द्वारा ज्ञात से अज्ञात की ओर ले जाने का प्रयत्न किया है।

बहुधा देखा गया है कि विद्यार्थियों का रचना-ज्ञान अधूरा ही रहता है। अतः रचना-ज्ञान के विकास के लिए इस पुस्तक में पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। भाषा की वृद्धि के लिए अनेक बातों का समावेश किया गया है। निबन्धादिक के लिखने के ढंग भी बतलाए गये हैं। इस छोटी-सी पुस्तक में पाठ्य-क्रम की रचना-व्याकरण संबंधी सभी बातें व्याख्या करके समझाई गई हैं। आशा है कि यह पुस्तक विद्यार्थियों के लिए विशेष लाभप्रद सिद्ध होगी।

Checked 1983

कूँचा साधूराम, आगरा।
जौलाई सन् १९५१

—एन० आर० सूतल

विषय-सूची

क्रम संख्या विषय Checked 1969 पृष्ठ

पहला प्रकाश

१—मौखिक भाव प्रकाशन:—

(अ) किसी दिये गये विषय पर संक्षिप्त व्याख्यान देने और वादविवाद में भाग लेने की योग्यता। १

(आ) अन्त्याक्षरी। १०

(इ) अभिनय और वार्तालाप करना। ३६

(ई) चुनी हुई कविताओं का सुपठन प्रोत्साहित करना। ४४

दूसरा प्रकाश

(२)—लिखना:—

(क) प्रार्थना-पत्र, पत्र-व्यवहार, निमंत्रण-पत्र, सूचना, विज्ञापन, शोक-प्रकाश, बधाई-पत्र, क्षमा-याचना। ४७

(ख) घटनाओं, चित्रों, दृश्यों और भवनादि का वर्णन। ७२

(ग) वार्तालाप का लिखना। ७०

(घ) स्वतन्त्र रचना, कहानी लिखना। ८३

(ङ) व्याख्या। ९३

(च) अपनी कक्षा की मासिक पत्रिका के लिए लेख लिखना तथा साप्ताहिक समाचार-पत्र के लिए तैयारी। ९४

(छ) श्रुतिलेख और सुलेख। ९६

(अ) विद्यार्थियों द्वारा चुने हुए छोटी-छोटी पुस्तिकायें तैयार करना। ९९

(आ) संक्षेप करना। १०१

(इ) एकांकी नाटक। १०२

तीसरा प्रकाश

३—पढ़ना:—
(अ) हिंदी के विख्यात कवियों और लेखकों की रचनाओं से उद्धृत गद्य एवं पद्य खंड १०७
(आ) भाषा तथा साहित्य का संक्षिप्त इतिहास

चौथा प्रकाश

४— व्याकरण और अलंकार:—
(अ) समास और व्युत्पत्ति। १३१
(आ) वाक्य और उनकी रचना। १४५
भाषा तथा अच्छी शैली के तत्व। १४६

पाँचवाँ प्रकाश

५—गति और भाव ग्रहण के लिए सहायक पठन। १५१
नीचे दिये हुए विषयों पर पचास-पचास पृष्ठ की कम से कम चार पुस्तकें पढ़ी जावें।
(१) हरिजनों का उत्थान। १५२
(२) सामाजिक विषय। १५५
(३) महात्मा गाँधीजी के जीवन की संस्मरणात्मक घटनाएँ। १६४
(४) देश-विदेश के त्याग, साहस और धैर्य की कहानियाँ। १७१

परिशिष्ट

१—शीर्षकों को सहायता से निबन्ध लिखना। १७७
२— बिना शीर्षक के लेखों के नमूने १८१

विशेष सूचना—नवीन भूगोलिक यात्रा में तथा एवरेस्ट पर्वत, उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव यात्रा, सामाजिक सेवा और सामाजिक स्वास्थ्य, भारत एवं अन्य देशों की कृषि, भारत तथा अन्य देशों के कृषकों का जीवन इत्यादि। (कक्षा ७ के निर्दिष्ट विषय।)

पहला प्रकाश

१—मौखिक भाव प्रकाशन: —

पाठ १ (अ) किसी दिये गये विषय पर संक्षिप्त व्याख्यान देने और वाद-विवाद में भाग लेने की योग्यता।

(१) 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' इस विषय के पक्ष में बोलने के लिए व्याख्यान देना।

बालको ! किसी विषय के पक्ष में बोलने के लिए निम्नलिखित ढंग से अपना व्याख्यान तैयार करना चाहिए :—

'श्रीमान् सभापति' से ही सम्बोधन करना चाहिए। वाद-विवाद में अपने तर्क-वितर्क 'सभापति' से ही सम्बोधन करना चाहिए। 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' यह बड़ी पुरानी कहावत है जिसका अर्थ है कि शारीरिक शक्ति वाला ही सदा विजयी होता है। इसमें शरीर की शक्ति का ही बड़प्पन दिखलाया गया है। इसमें हिंसा और युद्ध की भावना है किन्तु आधुनिक युग में सत्य और अहिंसा का सन्देश हमारे पूज्य बापू ने दिया है। इसलिए यह कहावत अब निरर्थक है।

व्याख्यान में तर्क-वितर्क के साथ इस कहावत की पूर्ण व्याख्या करना चाहिए तथा अन्त में अपना मत देना चाहिए। आरम्भ में 'देवियो और सज्जनो' आदि लिखना ठीक नहीं। यदि वाद-विवाद के अतिरिक्त किसी सभा में व्याख्यान दो तो देवियो और सज्जनो से सम्बोधन होना चाहिये।

सभा में व्याख्यान देना

श्रीमान् सभापति जी तथा उपस्थित देवियो और सज्जनो ! मैं आपको हृदय से धन्यवाद देता हूँ कि आज मुझे आप लोगों के सामने कुछ टूटे-फूटे शब्द कहने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। आशा है कि आप शान्तिपूर्वक सुनने की कृपा करेंगे।

प्यारे भाइयो तथा बहिनो ! देखिए, जिसकी लाठी उसकी भैंस वाली कहावत को आप नित्य प्रति अपने व्यवहार में प्रयोग करते हैं। यह कहावत आजकल की नहीं, बहुत पुरानी है। इसका साधारण अर्थ यह है कि बलवान मनुष्य की ही सदा जीत होती है। आजकल इस कहावत का महत्त्व कुछ नहीं रहा, क्योंकि शान्ति का युग है। कांग्रेस के उद्देश्य के विरुद्ध है। इसमें हिंसा और युद्ध की भावना पाई जाती है। कुछ भी सही इस कहावत का आजकल भी पूर्ण तरह उपयोग हो रहा है। अब जरा प्राचीन बातों की ओर दृष्टि डालिये। देखो, भारतवर्ष में जब हिन्दुओं के छोटे-छोटे राज्य थे, तब पृथ्वीराज चौहान दिल्ली का राजा था। यह सब राजाओं से बड़ा और शक्तिशाली था। महुबे में राजा परमाल राज्य करते थे। उनके यहाँ आल्हा और ऊदल दो बड़े नामी बलवान बनाफरों के नाम से प्रसिद्ध योद्धा थे। इनका चचेरा भाई मलखान था जो सिरसा में राज्य करता था। आल्हा-ऊदल के साथ और भी कई नामी सामन्त थे जिनका नाम आप आल्हा में सुना करते हो। आल्हा-ऊदल आदि बनाफरों ने लड़-लड़ कर हिन्दू राजाओं को शक्तिहीन कर दिया। इन्होंने केवल पृथ्वीराज चौहान को छोड़कर भारत के सभी राजाओं को पराजित करके अपने आधीन कर लिया तथा उनसे रिश्तेदारी जोड़ ली। पृथ्वीराज से कई बार इनका युद्ध हुआ परन्तु पृथ्वीराज को पूरी तरह से हरा नहीं पाये। पृथ्वीराज का मौसेरा भाई जयचन्द था। इसकी लड़की संयोगिता को पृथ्वीराज स्वयंवर में से वर लाया। इस बात पर जयचन्द पृथ्वीराज के खिलाफ़ हो गया। लेकिन वह पृथ्वीराज से कमज़ोर था। उसका कुछ वश न चला। वह उसे नीचा दिखाने का यत्न सोचने लगा। उसको ज्ञात हुआ कि ग़ोर देश का मुहम्मद ग़ोरी एक शक्तिशाली बादशाह है और वह भारत पर चढ़ाई करना चाहता है। फिर क्या था? जयचन्द ने मुहम्मद ग़ोरी को पत्र दिया कि आप दिल्ली पर

चढ़ाई कर दीजिए मैं आपकी सहायता करूँगा। पत्र पाते ही गोरी ने दिल्ली पर चढ़ाई कर दी। बड़ी घमासान लड़ाई हुई। अन्त में पृथ्वीराज हार गया और उसे पकड़ कर गोरी अपने देश को ले गया वहीं वह चन्द्र भाट द्वारा आपस में तलवार मार कर मर गया। इसके तदनन्तर 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' वाले बहुत से मुसलमान बादशाहों ने भारत पर हमले किये और अपना राज्य स्थापित किया। भारत की लूट मार की तथा खून की नदियाँ बहाईं। सब से शक्तिशाली मुग़ल बादशाह हुए जिनमें अकबर, औरंगज़ेब प्रसिद्ध हैं। उनका राज्य समस्त भारत में था। अन्त में इनके पीछे अँग्रेज़ शक्तिशाली बादशाह हुए। उन्होंने समस्त भारत को अपने आधीन कर लिया और बड़ी शान-शौकत के साथ लगभग ३०० वर्ष राज्य किया। किसी का समय एकसा नहीं जाता। भारत में फिर स्वतन्त्रता की आग भड़की। कांग्रेस की एक विशाल संस्था क़ायम हुई। उसके संचालक भारत के बड़े-बड़े नेता गांधी, नेहरू, पटेल, सुभाष, आज़ाद आदि हुए। भारत की जनता पर कांग्रेस ने अपना घर कर लिया। इस तरह कांग्रेस एक शक्तिशाली संस्था हो गई। ब्रिटेश साम्राज्य ने दबाने की अनेक कोशिशें कीं, परन्तु असफल ही रहा। अन्त में भारत को स्वतन्त्र करके अपने देश को अंग्रेज़ चले गये। कांग्रेस एक महान संस्था है जिसका सारे संसार में बोल बाला है। यह सब क्या है? भाई! 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' वाली ही करामात है। यह तो ऐतिहासिक बातें हुईं।

भाइयो! अब भारत स्वतन्त्र है और उसमें प्रजातन्त्र राज्य है। बापू का सन्देश शान्ति का है जिसमें सत्य और अहिंसा की पूजा होती है। फिर भी 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' लोगों के ऊपर अपना पूरा प्रभुत्व जमाये है। अब भी कमज़ोर का ठिकाना नहीं। प्रत्येक बलवान अपने से कमज़ोर मनुष्यों को सताने में नहीं चूकता। इस शांति युग में भी लोगों ने इस कहावत को पूरी तरह निभाया है।

अब मेरे बोलने में केवल ५ मिनट है। अब मैं आप लोगों के सामने अपना मत भी निर्धारित करता हूं कि चाहे कोई जमाना हो। इस कहावत का अधिकार सदा बना रहेगा। क्योंकि बिना इसके दुनियां का काम चल नहीं सकता। हाँ, राज्य-नियम की पाबन्दी से इसका अनुचित प्रयोग न होना चाहिए। इसी कहावत ने अब तक बड़े-बड़े साम्राज्योंको स्थिर रक्खा और भविष्य में भी यही राज्य को स्थिर रख सकती है। साधारण लोगों से मेरा यही निवेदन है कि कमजोर को सताना पाप है। इसलिए जहां तक हो वे सदा अपने से कमजोर व्यक्ति की सहायता करें। सत्य और न्याय से काम लें। इन्हीं बातों से ईश्वर प्रसन्न रहता है। इसीमें मनुष्य का कल्याण है। अन्त में मैं आपसे फिर कहता हूँ कि बलवान पुरुष की ही सदा विजय होती है इसलिए इस कहावत पर लोगों को सोच-समझ कर चलना चाहिए। इस कहावतका बोलबाला सदा रहा है और आगे भी रहेगा। जै हिन्द! लोगों का तालियां बजाना और व्याख्यानदाता का अपने स्थान पर बैठ जाना।

वाद-विवाद में भाग लेने की योग्यता

(२) (विषय) 'आज़ादी अच्छी है या गुलामी'

आज़ादी—आज़ादी के लिए सबका मन चाहता है। इसके नाम से सबके मन में जोश की लहर दौड़ जाती है। पिंजड़े में बन्द हुआ पक्षी भी फड़फड़ा कर मुक्त होने का प्रयत्न करता है। हमारा देश सदियोंसे गुलाम था तो भी हम लोग इस गुमी हुई आज़ादीकी कीमत पहिचानते थे। हमारे देश के बड़े-बड़े नेता स्वाधीनता प्राप्त करने के लिए विदेशियों से लड़े थे। उन्होंने जेलों मे अनेक प्रकार के कष्ट सहे थे। आज हमारा भारत आजाद है और हम सब भारतीय आज अपने को स्वतंत्र समझते है। देखो, अमेरिका वालों ने इसी के लिए खून की नदियाँ बहाई थी। रूस वाले भी इसीलिए जर्मन से लड़े थे। और चीन वाले इसी स्वतंत्रता की रक्षा के लिए अपने प्राण देरहे है।

आजकल कोरिया में भी इसी आजादी के लिए अमेरिकावालों से युद्ध हो रहा है। संसार में जितने भी बड़े आंदोलन हुए वे सब किसी न किसी की आजादी पाने के लिए हुये।

गुलामी—गुलामी के लिए भी आजकल सबका मन चाह रहा है। जब हमारा भारत ब्रिटिश के आधीन था और सब भारतवाले उनके गुलाम थे तब हम सब सुखी थे। शेर-बकरी एक घाट पानी पीते थे। चोर-डाकुओं का इतना डर न था जितना अब आजादी के जमाने में है। आजकल धनी पुरुषोंका रहना दुश्वार है। उनका माल दिन-दहाड़े लूट लिया जाता है। कमजोरों को सबल मनमानी तौर से सता रहे है। आजकल जिसकी लाठी उसकी भैंस वाली कहावत ही चारों ओर चरितार्थ हो रही है। गुलामी में किसी के धर्म में कोई बाधा न थी। अब छुआछूत मिटाकर सब एक हो रहे हैं। सनातनधर्म की जड़ काटी जा रही है। काँग्रेस का ध्येय सबको सुखी रखने का था, पर आज उसकी विरुद्धता दिखलाई दे रही है। आजकल इस आजादी-युग में अधिकांश काग्रेंस वाले ही सुखी हैं। गुलाम देशोंकी साधारण जनता गुलामी में ही प्रसन्न थी। पूंजीपतियों के लिए आजादी और गुलामी एक ही कोटि की बात है। वे लोग आजादी में भी खुश हैं तो वे गुलामी में भी बहुत खुश रहते थे। देखना साधारण जनता का है। साधारण लोग आजादी से गुलामी में प्रसन्न रहते हैं। यह मानना पड़ेगा कि गुलामी आजादी की जननी है। यदि गुलामी से लोगों को शिक्षा न मिलती तो आज भारत स्वतंत्र न होता इसलिए गुलामी ही आजादी से अधिक सुख देने वाली है।

आजादी—आजादी के अर्थ हैं अन्याय तथा अत्याचार से मुक्ति पाना। इसके कई रूप होते हैं—जैसे सामाजिक आजादी, राजनैतिक आजादी, धार्मिक आजादी आदि। हमारा देश जब विदेशी राज्य का गुलाम था तब हमारे देश के नेता लोग राजनैतिक स्वतन्त्रता के

लिए लड़े थे। जब हमारा ध्येय विदेशी राज्य के भार से मुक्ति पाना था। हम सब यही चाहते थे कि हमारे देश में अपना ही राज्य हो और अपनी ही आवाज़ हो, सो यह सब बातें ईश्वर की इच्छा से पूरी हो गई। हमारे पूज्य बापू गांधी की हत्या इसी आजादी के लिए हुई। यह भारत के ऊपर बड़ा भारी ऋण है। इसका चुकाना हम सब भारतवासियों का मुख्य कर्तव्य है।

गुलामी— गुलामी के अर्थ हैं लाखों आदमियों का जीवन एक व्यक्ति के हाथ में देना तथा राज्य के नियमों के अनुसार चलना। दिन भर कड़ा परिश्रम करके पेट भरना और 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' के साये में रहना। राज्य के विरुद्ध आंदोलन न करना, किसी के धर्म को बुरा न बताना, आदि।

जब हमारा देश गुलाम था। तब सरकार के यहाँ न्याय था। कमज़ोर मनुष्यों की भी जल्द सुनाई हो जाती थी। कोई भी शक्तिशाली मनुष्य निबलों को नहीं सता सकता था। यदि कोई सताता भी था तो राज्य-नियम के अनुसार उसे सजा मिलती थी। गुलामी में किसी का पक्षपात नहीं किया जाता था। क्योंकि यहाँ विदेशी राज्य था। हम भारतीय उनके देश तथा जाति के न थे। आजकल आजादी में पक्षपात का बोल बाला है। जो काँग्रेस के अनुयायी तथा काँग्रेस वालों के रिश्तेदार हैं उन्हीं लोगों का जीवन सुखी है।

आजादी— जब भारत गुलाम था। हम भारतवासी किसी भी मामले में अपनी स्वतन्त्र राय नहीं दे सकते थे और यदि देने का साहस करते थे तो कारागार में बंद कर दिये जाते थे। किन्तु स्वतन्त्र देशों की बात और ही है। स्वतन्त्र देश के महापुरुष अपने ही देश में नहीं वरन सारे संसार में एक महान आत्मा की भाँति पूजे जाते है। स्वतन्त्र देश की अपनी सत्ता होती है। वे अपने विचारों के अनुसार काम कर सकते हैं। उनकी सरकार उनकी उन्नति के लिए, आर्थिक उन्नति के लिए तथा अपने देशवासियों की उन्नति के लिए

प्रयत्न करती है। आज अमेरिका में सौ फीसदी लोग पढ़े लिखे हैं। उनका व्यापार बढ़ा-चढ़ा है। इंगलैन्ड जो आबादी तथा भूमि के क्षेत्रफल के विचार से भारत से कई गुना छोटा है आज वही संसार में सबसे बड़ा देश है। वहाँ की जनता पूर्णरूप से पढ़ी-लिखी है और आज वहाँ के थोड़े से आदमी संसार के बड़े भाग के स्वामी हैं। अब भारत में उनका राज्य नहीं रहा तो भी वे एक महान सम्राट गिने जाते हैं।

गुलामी—गुलामी की बेड़ी पहिन कर किसी भी मामले में अपनी स्वतंत्र राय देने की कोई आवश्यकता ही नहीं पड़ती। क्योंकि सब राज्य की आज्ञा का पालन करते हैं। किसी को राज्य के माफिक रहकर कारागार की सैर नहीं करनी पड़ती। गुलाम देश के महापुरुष भी अन्य स्वतंत्र देशों मे उनके गुणों की खातिर पूजे जाते हैं। मनुष्य की आत्मा पर किसी का अधिकार नहीं। उस पर अधिकार तो केवल एक परमेश्वर का है। इसलिए गुलामी की दशा में भी सबको अपने को स्वतंत्र समझना चाहिए। गुलाम देश के लोग भी अपनी उन्नति के लिए तथा आर्थिक उन्नति के लिये और दूसरों की उन्नति के लिए अनेक प्रकार के प्रयत्न करते हैं। अमेरिका और इंगलैंड के लोग बड़े चतुर, पढ़े-लिखे और दस्तकार हैं। हमारे भारत के लोग न तो हर बात में चतुर ही हैं और न दस्तकार ही हैं। यहाँ पढ़ने की भी रुचि कम है। इसलिए भारत की जनता कम पढ़ी-लिखी है। पढ़ने से लोगों का दिल बुरे से बुरे कार्य करने के लिए तैयार हो जाता है। बिना पढ़े लोगों को इससे डर लगता है। वे नब्बे फीसदी अच्छे चालचलन के होते हैं। पढ़े-लिखे अपने चाल-चलन का ध्यान नहीं रखते। अमेरिका और इंग-लैंड की स्त्रियाँ पतिव्रत धर्म को नहीं समझतीं। गुलाम भारत की कई एक पतिव्रता स्त्रियों के उदाहरण प्रसिद्ध हैं। अमेरिका और इंगलैंड की जनता पढ़ी-लिखी जरूर है बल्कि वह अय्याशी में डूबी

रहती है मादकता के नशे में चूर रहती है। गुलामी में जनता अधिकांश सदाचार वाली होती है।

आजादी—प्रत्येक देश के लिए आवश्यक है। इसके बिना एक देश का अपना अस्तित्व ही नहीं रहता। राजनैतिक स्वतंत्रता राष्ट्र की जान है। इसी राष्ट्र में व्यापारकी उन्नति होती है। देश की सामाजिक उन्नति, नैतिक उन्नति तथा आर्थिक उन्नति भी बहुत कुछ इसी पर निर्भर है।

गुलामी—प्रत्येक देश के लिए अच्छी रहती है। सब लोगों को पक्षपात रहित नौकरियाँ मिल सकती है। चीजों की मंहगाई का भी ध्यान रक्खा जाता है। रिश्वत कम ली जाती है। उसे डर रहता है कि कहीं कोई बड़ा कर्मचारी न सुन ले। आजकल आजादी मे रिश्वत का बाजार गर्म है। अदालतों मे तथा अन्य काम की जगहों में बिना रिश्वत के काम चलता ही नहीं। इससे धनी लोग अपना स्वार्थ बना लेते है। निर्धन लोगों को सब प्रकार दुःख उठाने पड़ते है। ऐसी आजादी भी कोई आजादी है जिसमे पक्षपात तथा रिश्वत से काम हो।

आजादी—देखो, गुलामी! मैं तुम्हारी बहुत देर से बातें सुन रही हूं। गुलामी में भी पक्षपात और रिश्वतें जारी थीं। किसी भी गुलाम देश ने आज तक अपनी उन्नति नहीं की। सबने स्वतंत्र होकर ही अपनी उन्नति की है। अब तू अधिक क्या कहेगी? चाहे कैसे ही देख ले संसार में आजादी ही अच्छी है। इसे पशु-पक्षी भी पसन्द करते हैं। मनुष्यों की चर्चा ही क्या? इसलिए अब इस वाद-विवाद को छोड़कर तू भी अपने दिल से गुलामी का भाव निकाल दे। गुलामी किसी भी दशा में अच्छी नहीं है।

गुलामी—आजादी की बात सुनकर गुलामी ने अपना सिर नीचा कर लिया और विनती की कि बहिन मैं गलती पर थी। आपने जो कहा वह बिलकुल ठीक है। गुलामी तो आखिर गुलामी ही है।

यह आजादी की क्या समता कर सकती है। संसार मे आजादी ही अच्छी है न कि गुलामी। ....आदि। समाप्त ।

अभ्यास

१—स्वतंत्रता के लाभों पर एक छोटा व्याख्यान दो।

२—'विद्या बड़ी है या धन' इसको वाद-विवाद द्वारा सिद्ध करो।

३—नीचे लिखे विषयों पर व्याख्यान तथा सम्वाद लिखो :—

(क) (१) (व्याख्यान) व्यापार तथा दस्तकारी ही राष्ट्र की उन्नति की जड़ है।

(२) अन्य संस्थाओं से काँग्रेस की संस्था ही एक अच्छी संस्था है।

(३) देश के भ्रष्टाचार को रोकना प्रत्येक भारतीय के हाथ में है।

(ख) १—(सम्वाद) पढ़ना अच्छा है या दस्तकारी सीखना।

२—अध्यापक बनना अच्छा है या सिपाही।

पाठ—२ (आ)

अन्त्याक्षरी

भाषा की उन्नति के लिए अन्त्याक्षरी का ज्ञान होना परमावश्यक है। अन्त्याक्षरी अक्षरों के ऊपर पद्य में की जाती है। पद्य उसी अक्षर से आरम्भ करनी चाहिए जिस अक्षर पर अन्त्याक्षरी करनी है। अभ्यास के लिए अन्त्याक्षरी के कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं। बालक इनके अतिरिक्त और भी पद्य याद कर सकते है। यदि उनमें योग्यता हो जाय तो वे अपनी बनाई हुई पद्य भी याद कर सकते हैं। इससे लड़कों में कविता करने की रुचि उत्पन्न होगी और उनकी वाक् शक्ति और स्मरण-शक्ति की उन्नति होगी।

(अ)

दोहा

अवगुन[1] मेरे बाप जी, बकसु गरीब निवाज।
जो मै पूत कपूत हौं, तऊ पिता को लाज ॥ १ ॥
असन[2] बसन[3] बहु बिध दये, औसर औसरआनि।
मात पिता भैया मिले, नइ रुचहि पहिचानि ॥ २ ॥
—कबीर

अन्तरयामी[4] आप हरि, जानि भक्ति की रीति।
सुहृद सुदामा विप्र सों, प्रकट जनाई प्रीति ॥ ३ ॥
—नरोत्तमदास

अस्थि चरम मय देह मम, तामें जैसी प्रीति।
तैसी जो श्रीराम महँ, होति न तौ भव भीति ॥ ४ ॥
—तुलसी

(१—बुराई, दोष। २—भोजन। ३—वस्त्र, कपड़े। ४—घट घट की जानने वाले।)

(आ)

दोहा

आज कहै कल्ह भजूँगा, काल कहै फिर काल।
आज काल के करत ही, औसर जासी चाल ॥ १ ॥
आछे दिन पाछे गये, गुरु से किया न हेत[1]।
अब पछतावा क्या करै, चिड़ियाँ चुग गईं खेत ॥ २ ॥
आये हैं सो जाँयगे, राजा रंक[2] फकीर।
एक सिंघासन चढ़ि चले, एक बधे जजीर ॥ ३ ॥
आसपास जोधा खड़े, सभी बजावैं गाल।
मंझ[3] महल से लै चला, ऐसा काल कराल ॥ ४ ॥

—कबीर

(१—प्रीति, २—गरीब, ३— बीच)

(इ)

चौपाई

इनते और कौन बड़भागी। ब्रह्म धर्‌यो नर तन जिन लागी॥
बन्दौं नन्द महर के चरना। सहित यशोमति मङ्गल करना ॥१॥
इहि बिधि बिहरत बाल कन्हाई। कछु दिन में सन्तन सुखदाई॥
लागे चलन घुटरुवाने आँगन। लगे मात सों माखन मांगन ॥ २॥
इक दिन श्री बसुदेव विज्ञानो। पठये बोलि गर्ग मुनि ज्ञानी॥
करि पूजा विधिवत बैठायो। युग पद कमल शीश तब नायो ॥३॥
इनके नाम अमित जग माहीं। तदपि कहौं मैं कछु तुम पाहीं॥
इन कबहूँ बसुदेव के धामा। लियो जन्म सुन्दर बर श्यामा ॥ ४ ॥

—बृजबासीलालजी

(ई)

चौपाई

ईस रजाइ [1]सीस सब ही के उत्पति [2]थिति लय[3] बिषहु अमी [4]के ।।
देखि मोह बस सोचिय बादी[5], विधि प्रपंच अस अचल [6]अनादी ।। १।।
ईति भीति[7] जनु प्रजा दुखारी, त्रिविध[8] ताप पीड़ित ग्रह मारी ।।
जाइ सुराज सुदेस[9] सुखारी, होइ भरत गति[10] तेहि अनुहारी[11] ।।२।।

—तुलसी

(१—आज्ञा । २ उत्पत्ति पालन । ३—नाश । ४—अमृत । ५—वृथा । ६—चला आता है । ७—डरा हुई । ८—तीन प्रकार के । ९—सुन्दर देश । १०—दशा । ११—अनुसार)

(उ)

दोहा

उततें कोइ न बाहुरा[1], जातें बूझूँ धाय ।
इततें सबही जात है, भार लदाय लदाय ।। १ ।।

उततें सतगुरु आइया, जा की बुधि है धीर ।
भवसागर[2] के जीव को, खेइ लगावै तीर ।। २ ।।

—कबीर०

उपदेसन आये हुते, मोहि भयो उपदेस ।
ऊधो यदुपति पै चले, धरे गोप[3] को भेस ।। ३ ।।

—सूरदास

उरग[4] तुरंग[5] नारी नृपति, नर नीचो हथियार ।
तुलसी परखत रहब नित, इनहिं न पलटत बार ।। ४ ।।

—तुलसी

(१—लौटा, वापस आना । २—संसार रूपी समुद्र अर्थात् संसार । ३—अहीर । ४—सर्प । ५—घोड़ा)

(ऊ)

दोहा

ऊधो अरु अक्रूर जे, सखा श्याम के साथ।
मिलि बैठत खेलत हँसत, इनके सँग यदुनाथ ॥ १ ॥
ऊधो ब्रज मे जाय कै, बिलम[1] न रहियो[1] जाइ।
तुम बिन हम अकुलाय हैं, श्याम करत मन राइ ॥ २ ॥

—बृजबासीलाल

ऊधो ब्रज को नेम, प्रेम बरनो सब आई।
उमग्यो नैनन नीर[2] बात कछु कह्यो न जाई ॥ ३ ॥
ऊधो कहि मतभाय, न्याय तुम्हारे मुख साँचे।
योग प्रेम रसमय कथा, कहो कंचन की काँचे ॥ ४ ॥

—सूरदासजी

(१—देर न करना, अनघना मत। २—पानी, भाव है आँसू।)

(ऋ)

दोहा

ऋच्छराज बन महँ फिरत, निज इच्छा अनुसार।
असुर दैत्य जहँ तहँ मिलैं, सब कहँ डारत मार ॥ १ ॥

—तुलसी०

चौपाई

ऋतु बसन्त बह त्रिविध बयारी। सब कहँ सुलभ पदारथ चारी ॥
स्रक[1] चंदन बनितादिक[2] भोगा। देखि हरष बिस्मय[3] बस लोगा ॥१॥
ऋषि निकाय[4] मुनिवर गति देखी। सुखी भए निज हृदय बिसेषी ॥
अस्तुति करहिं सकल मुनि बृन्दा। जयति प्रनत हित करुना कन्दा ॥२॥

—तुलसी०

(१—माला। २—स्त्री आदि। ३—दुःख। ४—झुण्ड।)

(ऐ)

चौपाई

एक वीर को सबै डरत हैं । घेरि क्यों न रथ धाय धरत हैं ।
बालक देखु करी यह करणी । सेना जूझि परी सब धरणी ॥ १ ॥

—सबलसिंह चौहान

एक निमेष[1] बरष सम जाई । इहि विधि भरत अवध नियराई ।
असगुन होहिं नगर पैठारा[2] । रटहि कुभाँति कुखेत[3] करारा[4] ॥ २ ॥

—तुलसीदास

(१—पल । २—घुसते ही । ३—बुरी जगह-जगह पर । ४—कौवा)

(ऐ)

दोहा

ऐसी बानी बोलिये, मनका आपा [1] खोय ।
औरन को सीतल करै, आपहु सीतल होय ॥ १ ॥
ऐसी गति संसार की, ज्यों गाड़र [2] की ठाट[3] ।
एक पड़ा जेहि गाड़ में, सबै जाहि तेहि बाट ॥ २ ॥
ऐसा कोई ना मिला, सत्त नाम का मीत ।
तन मन सौंपे मिरग ज्यों, सुनै बधिक[4] का गीत ॥ ३ ॥

—कबीरदास

चौपाई

ऐसी मारु खम्भ सों कीन्हे । दश सहस्र[5] राजा बध कीन्हे ॥
मारि सबै राजा बिचलाये । कर लै गदा कुरूपति[6] धाये ॥ १ ॥

—सबलसिंह चौहान

(१—घमंड । २—भेड़ । ३—झुंड । ४—बहेलिया । ५—दस हजार । ६—दुर्योधन ।)

(ओ)

दोहा

ओछे नर के पेट में रहै न मोटी बात ।
आध सेर के पात्र[१] में, कैसे सेर समात ॥
—वृन्द कवि

चौपाई

ओहट[२] होहु रे भाँट भिखारी । का तू मोहिं देहि असि गारी ॥
को मोहिं जोग जगत होइ पारा[३] । जा सहुँ हेरौं जाइ पतारा ॥ १ ॥
ओनई[४] घटा आइ चहुँ फेरी । कंत ! उबारु मदन[५] हौं[६] घेरी ॥
दादुर मोर कोकिला, पीऊ[७] । गिरै बीजु, घट[८] रहै न जीऊ ॥ २ ॥
ओहि[९] के गुन सँवरत भइ माला । अबहुँ न बहुरा[१०] उड़िगा[११] छाला ॥
बिरह गुरू, खप्पर कै हीया । पवन अधार रहै सो जीया ॥ ३ ॥
ओहू नारि कर परा बिछोवा । एही समुद महँ फिरि फिरि रोवा ॥
तोहि बल नाहि, मूँद अब आँखी । लाकैं तीर, टेकु[१२] बैसाखी[१३] ॥४॥
—जायसी

(—१—बरतन । २—हट जा । ३—सका । ४—उमड़ी । ५—कामदेव । ६—मुझे । ७—पपीहा । ८—शरीर ९—उसी के । १०—लौटा । ११—उसके नाम की माला फेरते-फेरते उंगलियों की खाल उड़ गई । १२—पकड़ कर । १३—लकड़ी ।)

(औ)

दोहा

औगुन कहौं सराब का, ज्ञानवंत सुनि लेय ।
मानुष से पसुआ करै, द्रव्य[१] गाँठि को देय ॥ १ ॥
—अज्ञात

और कहा कहिये जहाँ, कञ्चन[२] ही के धाम
निपट कठिन हरि[३] को हियो, मोको दिये न दाम ॥ २ ॥
—नरोत्तमदास

(१—धन । २—सोना, स्वर्ण । ३— श्रीकृष्णजी ।)

(अं)

दोहा

अंतर अँगुली चार को, साँच झूठ में होय ।
सब मानैं देखी कहो, सुनी न मानै कोय ॥ १ ॥

—वृन्द

अंतर[1] दाव[2] लगी रहै, धुँआ न प्रगटै कोय ।
कै जिय जाने आपनो, कै जा सिर बीती होय ॥ २ ॥

—अज्ञात

अंशु[3], गभस्ति, मयूष, कर, गो मरीचि, वसु ज्योति ।
रश्मि, परसि शशि सूर की, जगमग जगमग होति ॥ ३ ॥

(किरण नाम) —नंददास

अंबर,[4] पुष्कर, विष्णुपद, अन्तरिक्ष, नभ, व्यास ।
व्योम, अनन्त, विहाय सख, सुर वर्त्म, आकास ॥ ४ ॥

(नभ नाम) —नंददास

(१—हृदय । २—अग्नि । ३—किरण, दोहा ३ में किरण के पर्यायवाची शब्द हैं । ४—आकाश, दोहा ४ में आकाश के पर्यायवाची शब्द हैं ।)

(क)

दोहा

कर बोलै कर ही सुनै, स्रवन[1] सुनै नहिं ताहि ।
कहैं पहेली बीरबल, सुनिये अकबर साहि ॥ १ ॥

(नाड़ी) —बीरबल

कटे एक रघुनाथ[2] सँग, बाँधि जटा सिर केस[3] ।
हम तो चाखा प्रेम रस, पतिनी के उपदेश ॥ २ ॥

—तुलसीदास

कटक[3] सुदल, बलवाहिनी, चमू, बरूथ, सु सेन।
सैना बिना न नृप बनै, नृप बिन बनै न सन ॥ ३ ॥
(सैना नाम)—नंददास

कर गज सुण्ड अरु हस्त[4] कर, करजु किरण कर दान।
कर विष जैसे तजि विषय, भजि हरि अमी निधान ॥४॥
(कर के अनेकार्थ)—नंददास

कुसुम[5] प्रसून, समद, सुमन, पुष्प, फलपिता, नाम।
फूल मंजरी गेंद कर, खेलत छवि सों बाम ॥ ५ ॥
(फूल नाम)—नंददास

(१—कान। २—बाल। ३—सेना, दोहा ३ मे सेना के पर्याय-वाची शब्द है। ४—हाथ, दोहा ४ मे कर के अनेकार्थ है। ५—फूल, दोहा ५ मे फूल के पर्यायवाची शब्द है।)

(ख)

दोहा

खर राक्षस खर स्थान[1] खर, खर तीक्ष्न को नाम।
खर गरदभ[2] जग में सोई, जे न भजे हरि नाम ॥ १ ॥
(खर शब्द) —नन्ददास

खग मृग मीत पुनीत किय[3], बनहुँ राम नयपाल[4]।
कुमति[5] बालि दसकंठ[6] घर, सुहृद बंधु कियो काल[7] ॥२॥
—तुलसी०

खिन गोपी के पाँ परैं, धन्य सोइ है नेम।
धाइ धाइ द्रुम[8] भेंटहीं, ऊधो छाके प्रेम ॥ ३ ॥
—सूरदासजी

खैर खून खाँसी खुशी, बैर प्रीति मधुपान[1]।
रहिमन दाबे ना दबे, जानत सकल जहान ॥ ४ ॥

(—१—कुत्ता। २—गधा, दोहा १ में खर के अनेकार्थ वाची शब्द हैं। ३—पशु पक्षियों तक को सच्चा-मित्र बना लिया। ४—नीति के अनुसार चलने वाले। ५ नीच बुद्धि। ६—दसकंठ रावण। ७—मृत्यु। ८—वृत्त। ९—शराब पीना।)

(ग)

छन्द

गौरव गुमान मान[1] दे चुके थे कौड़ियों में—
हिन्दुओं की एकता का छिन्न-भिन्न तार था।
किये थे गुलाम इसलाम की लगाम लगा—
उसका अगाड़ी कुछ और ही बिचार था॥
हो न सकी पूर्ण अभिलाषा परिभाषा क्योंकि
जीवन में बाधक हमेशा एक खार[2] था।
अकबर यदि बे लगाम का तुरग[3] था तो—
चढ़ने को राणा बे लगाम का सवार था॥ १॥
गंगा जी के दर्शन करके, लौट रहे थे घर अपने।
उसी मार्ग पर रत्न पड़ा था, मोतीलाल लगे झुकने॥
लेकर देखा कढ़ा जवाहर, ऐसा मायाजाल हुआ।
रत्न जवाहर मिलते ही घर, पुत्र जवाहरलाल हुआ॥२॥

—भागीरथ भास्कर

(१—राजा मानसिंह। २—काँटा। ३—घोड़ा)

(घ)

चौपाई

घन[1] समान सो गर्जि अभागा। शीश भुजा काटे नृप[2] नागा[3]॥
शीश परेउ धरणी पर जाई। भुजा दाहिनी नभहिं पराई॥१॥
घर समान परिजन[4] जनु भूता। सुत हित मीत मनहु जम दूता॥
बागन बिटप[5] बेलि कुम्हिलाहीं। सरित[6] सरोवर[7] देखि न जाहीं॥२॥

—तुलसी

छन्द

घोर अवज्ञा[८] का कर ध्यान
बोला सिसक-सिसक कर मान[९]।
"तेरे जीते-जी सुलतान[१०]
ऐसा हो मेरा अपमान[११] ॥१॥

—श्यामनारायण पाण्डेय

(१—बादल। २—राजा। ३—राजा। ४—कुटुम्ब। ५—वृक्ष। ६—नदी। ७—तालाब। ८—निरादर, आज्ञा न मानना। ९—राजा मानसिंह। १०—अकबर बादशाह से तात्पर्य है। ११—निरादर, बेइज्जती।)

(च)

छन्द

चली विकराल[१] असि[२] दामिन दमक सी तो,
कट्ट-कट्ट रुण्ड-मुण्ड झुण्डों को बिछाती थी।
तेज धार चलती थी तेज धार सरिता-सी,
हाहाकार हुँकार से वीरों को बहाती थी॥
कायर बिचारे जब भूलते थे पंथ—निज,
जग-पंथ रोक जम-पंथ दिखाती थी।
उज्ज्वल पै श्याम मुख करती थी शत्रुओं के,
लाल-लाल लालन को काल से मिलाती थी॥१॥

—भागीरथ भास्कर

चलते चलते जब थक जाता,
दिनकर[३] करता आराम वहीं॥२॥
अपनी तारक[४] —माला पहने,
हिमकर[५] करता विश्राम वहीं॥२॥

चावल–कण दो—एक बाँधकर
गरज उठा बादल सा ।
मानो भीषण क्रोध–वह्नि[6] से,
गया अचानक जल सा ॥ ३ ॥
—श्यामनारायण पाण्डेय

(१—भयंकर, विकट । २—तलवार । ३—सूर्य । ४—तारा-गण । ५—चन्द्रमा । ६—क्रोध की अग्नि ।)

(ख)

चौपाई

छत्र मेघ[1] डंबर सिर धारी । सो प्रभु जलद[2] घटा अति कारी ॥
मन्दोदरी स्रवन ताटंका[3] । सो प्रभु जनु दामिनी दमंका[4] ॥१॥
छुधा[5] न रही तुमहिं तब काहू । जारत नगर न कस धरि खाहू ॥
सुनत नीक आगे दुख पावा । सचिवन्ह असमत प्रभुहिं सुनावा ॥२॥
—तुलसीदास

छन्द

छा जाता अंधेरा घोर शाश्वत[6] प्रदेश प्रान्त,
सघन निकुञ्ज[7] जब जीव जन्तु सोते हैं ।
कानन-कलोलिनी दुकूल[8] पार्श्व[9] पादपों[10] पै,
आसीन विहङ्ग[11] तब फूट–फूट रोते हैं ॥

चीरते निशा का वृन्त दृगों से गिरा के अश्रु,
तेरी वे समाधि[12], पर मुक्त—बीज बोते हैं ।
ऊपर रखा है दीप बिम्ब प्रतिबिम्ब नीर,
एक के हजार से हजार लाख होते हैं ॥१॥
छाई हैं लताएं बेल मण्डप बनाए घोर,
तेरी न समाधि पर कभी धूप आती है ।

प्रतिमा पुनीत पग—पंकज[13] परवाने को,
सरिता हिलोर मार नीर डाल जाती है।
गौरव-गुरूत्व ओज लालिमा बनाती हुई,
स्वर्गिक[14] प्रभा सी ऊषा, ऊषमा गिराती है।
इसीलिए सो रहा है, मुख की अनन्त नींद,
जागता है क्यों न तुझे जननी बुलाती है ॥ २ ॥
—भागीरथ भास्कर

१—मेघ समान नील। २—बादल। ३—कुंडल। ४—चमकनी हैं। ५—भूख। ६—नित्य, जो सदा स्थायी रहे। ७—लता-गुट। ८—वस्त्र, कपड़ा। ९—पास, निकटता। १०—वृत्ती। ११—पत्नी। १२—कब्र। १३—चरण-कमल, कमल रूपी चरण। १४—स्वर्ग की।)

(ज)

छन्द

जग अधर विकल हिलते थे,
चलदल[1] के दल से थर-थर।
ओसों के मिस नभ—दृग से,
बहते थे आँसू झर—झर ॥ १ ॥
जयमल ने जीवनदान किया,
पत्ता ने अर्पण प्राण किया।
भल्ला ने इसकी रक्षा मे,
अपना सब कुछ कुर्बान[2] किया ॥२॥
जिसने जौहर को जन्म दिया,
वह वीर पद्मिनी रानी है
राणा ! तू इसकी रक्षा कर,
यह सिंघासन अभिमानी है ॥ ३ ॥
—श्यामनारायण पाण्डेय

(१—पीपल। २—न्योछावर करना।)

(झ)

दोहा

झूठे सुख को सुख कहैं, मानत हैं मन मोद[1]।
जगत चबेना काल का, कुछ मुख में कुछ गोद ॥१॥

—कबीरदास

झूठहु ऐसी बोलिये, साँच बरोबर होय।
ज्यों अँगुरी सों भीत पर, चाँद बतावै कोय ॥२॥

—वृन्द

चौपाई

झरना झरहिं मत्तगज गाजहिं। मनहु निसान[2] बिबिध बिधि बाजहिं ॥
चकचकोर चातक सुक[3] पिकगन। कूजत मंजु मराल[4] मुदित मन ॥१॥
झूठैं लेना झूठै देना। झूठै भोजन झूठ चबेना ॥
बोलहिं बचन मधुर जिमि मोरा। खाहिं महा अहि हृदय कठोरा ॥२॥

—तुलसीदास

(१–खुशी। २–बाजे। ३–तोता। ४–हंस।)

(ट)

छन्द

टका करै कुलहूल टका मिरदङ्ग बजावै।
टका चढ़े सुखपाल[1] टका सिर छत्र धरावै ॥
टका माय अरु बाप टका भैयन को भैया।
टका सास अरु ससुर टका सिर लाड़ लड़ैया ॥
अब एक टके बिनु टकटका रहत लगाये रातदिन।
बैताल कहै विक्रम सुनो धिक जीवन एक टके बिन ॥१॥

—बैताल

टूटे नख[1] रद केहरी, वह बल गयो थकाय।
हाय जरा[2] अब आइ कै, यह दुख दियो बढ़ाय॥
यह दुख दियो बढ़ाय, चहूँ दिसि जंबुक[3] गाजैं।
ससक[4] लोमरी आदि, स्वतन्त्र करैं सब राजैं॥
बरनै दीनदयाल, हरिन बिहरै सुख लूटे।
पंगु भयो मृगराज[5], आज नख रद के टूटे॥ २॥

—दीनदयाल गिरि

(१—रथ। २—दाँत। ३—बुढ़ापा। ४—गीदड़। ५—खरगोश। ६—सिंह, नाहर।)

(ठ)

दोहा

ठाढ़ो[1] द्वार न दै सकैं, तुलसी जे नर नीच।
निदरहिं[2] बलि हरिचन्द को, का कियो करन दधीच?॥१॥

—तुलसीदास

ठौर ठौर ऐसी दशा, कहत न आवत बैन।
बढ़ी श्याम बिछुरन व्यथा[3], ढरत उमँग जल नैन॥२॥

—बृजबासीलाल

चौपाई

ठाढ़ कीन्ह तहँ प्रभु कहँ आनी। निशिचर बहु आयुध[4] धरि पानी।
धरे गदा कोउ अरु धनु बाणा। शक्ति शूल तरवारि कृपाणा॥१॥
ठाढ़ रहा अति कंपित गाता। गयउ बिभीषन जहँ जन त्राता॥
पुनि रावन तहिं हतेउ प्रचारी। चला गगन कपि पुच्छ[5] प्रसारी॥२॥

—तुलसीदास

(१—दरवाजे पर खड़े हुए भिखारी को। २—बुराई करते हैं। ३—पीड़ा, दुःख। ४—हथियार। ५—पूँछ।)

(ङ)

बरवै

डहकनि[1] है उजियरिया निसि नहिं घाम।
जगत जरत अस लागै मोहिं बिनु राम ॥१॥

—रहीम

दोहा

डरै सदा चाहै न कछु, सहै सबै जो होय।
रहै एक रस चाहि कै, प्रेम बखानौ सोय ॥१॥

—रसखान

डग डुडगनि सी चलि ठठकि, चितई चली निहारि।
लिये जात चित चोरटी, वहै गोरटी[2] नारि ॥२॥

—बिहारीलाल

डर बेपत पानिप[3] हरत, मुक्ता[4] जनि बिलखाय।
नाक बास लहि है गुनी, दे अधरन सिर पाय ॥३॥

—कुलपति मिश्र

चौपाई

डगमग भे निशिचर अभिमानी। मारुत[5] बह जिमि सागर पानी ॥
तेहि छण कपि लीन्हे दोउ भाई। हते लागि निशिचर समुदाई ॥१॥
डारि शैल दोउ भिरे रिसाई। खल्लन हने वीर वरिआई[6] ॥
कपिन कोप करि उर हन तेहीं। जिमि खग मशक[7] चाटि मज्जदेहीं ॥२॥

—तुलसी दास

(१—फैलती है। २—गोरे रंग वाली। ३—पानी, कान्ति। ४—मोती। ५—हवा। ६—जबर्दस्ती। ७—मच्छर।)

(६)

बरवै

ढील ओखि[1] जल अँचवनि, तरुनि[2] सुगानि ॥
धरि बसकाइ चइलना, मुरि मुसुकानि ॥ १ ॥

—रहीम

छन्द

ढरत दीप्त अङ्गार बिंब सम गिरि-तट दिनकर[3],
पसरति आभा अरुन खेत औ खरियानन पर।
जुगजुगात पुनि तहँ तहँ निकसत नभ में तारे,
मिलि कै मंगल वाद्य[4] उठत बजि पुर के सारे ॥ १ ॥

— रामचन्द्र शुक्ल

ढाहे महीधर[5] सिखर कोटिन्ह बिबिध बिधि गोला चले।
घहरात जिमि पबिपात गरजत जनु प्रलय के बादले ॥
मरकत बिकट भट जुरत कटत न लटतं तन जरजर भये।
गहि सपल[6] तेहि गढ़ पर चलावहिं जहँ सो तहँ निसिचर हये ॥२॥

—तुलसीदास

ढालता रहता वह अविराम[7],
उमर पात्रों में मदिरा धार,
सुनहले स्वप्नों का मधुफेन
हृदय मे उठता बारंबार!
डूबते हमसे तुमसे, प्राण,
सहस्रों उसमें बिना विचार!
भरा रहता साक़ी[8] का जाम[9],
बिगड़ते बनते शत[10] संसार! ॥३॥

—सुमित्रानन्दन 'पन्त'

(१—सूखना। २—जवान स्त्री। ३—सूर्य। ४—बाजे। ५—पहाड़ की चोटी। ६—पर्वत, पहाड़। ७—लगातार। ८—शराब पिलाने वाला, तात्पर्य माशूक खुदा से है। ९—प्याला। १०—सैकड़ों।)

(त)

छन्द

तलवार निकाली, चमकाई,
अम्बर[1] में फेरी घूम-घूम ।
फिर रखी म्यान में चम-चम-चम,
खरधार-दुधारी चूम-चूम ॥ १ ॥

तब-तक आये रणधीर[2] भील,
अपने कर में हथियार लिये ।
पा उनकी मदद छिपा राणा ।
अपना भूखा परिवार लिये ॥ २ ॥

तुझ में चूँड़ा सा त्याग भरा,
बापा-कुल का अनुराग[3] भरा ।
राणा-रतार सा रग-रग में,
जननी-सेवा का राग भरा ॥ ३ ॥

—श्यामनारायण पाण्डेय

(—१—आकाश । २—शूरवीर, योद्धा । ३—प्रेम ।)

(थ)

दोहा

थल जल भरे अपूर[1] सब, धरति गगन मिलि एक ।
धनि जोबन अवगाह[2] महँ, दे बूड़त[3] पिउटिक[4] ॥१॥

—जायसी

थाली, पटनी, फलनुहा, वामा स्यामा नाम ।
अंबरस्य मधु तीय सै, पाटल[5] करत प्रनाम ॥ २ ॥

(पाटल नाम)—नंददास

थोरेई गुन रीझते, बिसराई वह बानि ।
तुमहू कान्ह मनो भये, आज काल के दानि ॥ ३ ॥

—बिहारीलाल

छन्द

था जब तक उस गिरि का बन्धन,
व्याकुल रहता था मेरा मन।
यही सोचती थी मैं क्षण-क्षण,
कब मैं बाहर आती हूँ ॥ १ ॥

—पदमलाल पुन्नालाल बख्शी

(१—भरपूर। २—अथाह। ३—डूबती हुई को। ४—सहारा। ५—पाडर या पाढर का पेड़, इस दोहे में पाटल के अनेकार्थवाची शब्द हैं।)

(द)

दोहा

देनो हुतो सो दे चुके, विधि न जानी गाथ।
चलती बेर गुपालजी, कछू न दीनों हाथ ॥१॥

—नरोत्तमदास

चौपाई

देखि करहिं सब दंड प्रनामा। कहि जय जानकि जीवन रामा।
प्रेम मगन अस राज समाजू। जनु फिर अवध चले रघुराजू ॥१॥
देखि भरत गति अकथ अतीवा। प्रेम मगन खग मृग जड़ जीवा।
सखहिं सनेह बिबस मगु भूला। कहि सुपंथ सुर बरषहिं फूला ॥२॥

—तुलसीदास

(ध)

दोहा

धरती करते एक पग, समुद्र करते फाल।
हाथन परबत तौलते, तिनहूँ खाया काल ॥

—कबीर

धनि रहीम गति मीन[1] की, जल बिछुरत जिय जाय।
जियत कंज तजि अंत बसि, कहा भौंर को भाय ॥ २ ॥

—रहीम

धात्री कहिये आंवरो, धात्री धाय[2] बखान।
धात्री धरनी सेस सिर, सोहत तिल परमान ॥ ३ ॥

(धात्री शब्द)

धाराधर[3], जलधर, जलद, जगजीवन, जीमूत।
मुदिर, बलाहक, तड़ितपति, पुरजन जग्य सुपूत ॥ ४ ॥

(मेघनाम)

(१—मछली। २—दूध पिलाने वाली, इस दोहे में धात्री के अनेकार्थवाची शब्द हैं। ३—मेघ (बादल), इस दोहे में मेघ के पर्यायवाची शब्द हैं।)

(न)

दोहा

नयना देत बताय सब, हिय को हेत अहेत।
जैसे निर्मल आरसी, भली बुरी कहि देत ॥ १ ॥

—वृन्द

नाम भजो तो अब भजो, बहुरि भजोगे कब्ब।
हरियर हरियर रूखड़े, ईंधन हो गये सब्ब ॥ २ ॥

— कबीर

नाद[1] रीझि तन देत मृग, नर धन हेत समेत।
ते रहीम पशु ते अधिक, रीझेहु कछू न देत ॥ ३ ॥

—रहीम

नीलकंठ, केकी, बरहि, सिखी, शिखण्डी[1], होय।
शिवसुत बाहन, अभिभषी[2], मोर कलापी सोय ॥ ४ ॥

(मयूर नाम) —नन्ददास

(१—शब्द, आवाज । २—सर्प खाने वाला अर्थात् मोर, इस दोहे मे मयूर (मोर) के पर्यायवाची शब्द है ।)

(प)

दोहा

पतिबरता पति को भजै, और न आन सुहाय ।
सिंह बचा जो लंगना[1], तो मी घास न खाय ॥ १ ॥
पर नारी पैनी छुरी, मत कोइ लावो अङ्ग ।
रावन के दस सिर गये, पर नारी के सङ्ग ॥ २ ॥

—कबीर

चौपाई

पथिक[2] अनेक मिलहिं मग जाता । कहहिं सप्रेम देखि दोउ भ्राता ॥
राज सुलक्षण अंग तुम्हारे । देखि सोच हिय होत हमारे ॥१॥
पय पयोधि तजि अवध विहाई । जहँ सिय राम लषन रह आई ॥
कहि न सकहिं सुख भा जस कानन[3] । जो सत सहस होहि सहसानन ॥२॥

—तुलसीदास

छन्द

पथ[4] तक जकड़े हैं झाड़ियाँ डाल घेरा,
उपवन वन सा हा ! हो गया आज मेरा ।
प्रियतम वनचारी गेह में भी रहेंगे,
कह सखि, मुझमे वे लौट के क्या कहेंगे ? १ ॥

—मैथिलीशरण गुप्त

(१—डाँकना, लांघना । २—राहगीर । ३—वन । ४—मार्ग ।)

(फ)

दोहा

फिर घर को नूतन पथिक, चले चकित चित भागि ।
फूल्यो देखि पलास[1] बन, समुझे समुझि दवागि[2] ॥ १ ॥

फीकी पै नीकी लगै, कहिये समय बिचारि।
सबको मन हर्षित करै, ज्यौं बिबाह में गारि ॥ २ ॥
फेर न ह्वै है कपट सो, जो कीजे ब्यौपार।
जैसे हाँडी काठ की, चढ़ै न दूजी बार ॥ ३ ॥

—वृन्द

(१—ढाक। २—दावाग्नि, बन की आग।)

(ब)

चौपाई

बहुरि लषन पाँयन सोइ लागा। कीन्ह उठाइ उमगि अनुरागा[1]।
पुनि सिय चरन रेनु धर सीसा। जननि जानि सिसु दीन्ह असीसा ॥१॥
बरिन न जाइ मनोहर जोरी। सोभा अमित मोरि मति थोरी।
राम लषन सिय सुन्दरताई। सब चितवहिं मति मन चितलाई ॥ २ ॥

—तुलसी

छन्द

बहु बिकास बिलसित हो बारिधि[2],
यदि पयोधि[3] बन जाता है।
तो लघु से लघुतम सरवर भी,
तुमसे शोभा पाता है ॥ १ ॥

—अयोध्यासिंह उपाध्याय

(१—प्रेम। २—समुद्र। ३—समुद्र)

(भ)

चौपाई

भरतहिं देखि मातु उठि धाई। मूर्छित अवनि परी झुइ[1] आई ॥
देखत भरत बिकल भए भारी। परे चरन तनु दसा बिसारी ॥ १ ॥
भये ज्ञान बरु मिटै न मोहू[2]। तुम रामहिं प्रतिकूल न होहू ॥
मत तुम्हार यह जो जग कहहीं। सो सपनेहुँ सुख सुगति न लहहीं ॥२॥

—तुलसीदास

भौंरे ! भूलि न बेभरम[6] लखि इक[7] सोभित भेस ।
कढ़िगो सौरभ[8] सुमन ते रही लालिमा सेस[9] ॥
रही लालिमा मेस कहूँ मकरंद[10] न यामै ।
पौन[11] पराग[12] उड़ाय गयो कहु मोहन कामै ॥
बरनै दीनदयाल साँझ ढिग आई बौरे ।
चले बिहंग बसेर[13] कहा अब भूले भौंरे ॥ ३ ॥

—दीनदयाल गिरि

(१—घुमेर खाकर । २—अज्ञान । ३—निश्चिन्त । ४—केवल । ५—सुगन्ध । ६—बाकी । ७—पुष्परस । ८—हवा । ९—पुष्प रज । १०—डेरा, घौंसला ।)

(म)

दोहा

मधुकर[1] भ्रमर, द्विरेफ, अलि, बहुरि सिलीमुख, भृंग ।
चंचरीक, रोलंब, पुनि, कीलालै, सारंग ॥ १ ॥
मधुप[2], मधुव्रत, मधुरसिक, मधुबावन, रसधेर ।
भ्रमर, बिना नहिं केतकी, केतकि बिना न भौंर ॥ २ ॥

(भ्रमर नाम)—नन्ददास

मधु बसन्त मधु चैत द्रुम, मधु मदिरा[3] मकरन्द ।
मधुकर मधु पै मधु सुधा, मधुसूदन गोविन्द ॥ ३ ॥

(मधु शब्द)—नंददास

माया छल माया दया, माया नेह[4] कहन्त ।
माया मोहन लाल की, जिन मोहे सब सन्त ॥ ४॥

(माया शब्द) —नन्ददास

(१—भौंरा । २—भौंरा, दोहा १ और २ में भ्रमर (भौंरे) के पर्यायवाची शब्द हैं । ३—शराब, इस दोहे में मधु के अनेकार्थवाची है । ४—स्नेह, प्रेम, इस दोहे में माया के अनेकार्थवाची शब्द हैं ।)

(य)

चौपाई

यहि अन्तर बोले कुरुराजा[1] । धनुष नाहि भाजत केहि काजा ॥
यह कहि कै दुर्योधन आये । शब्द वीर आगे ह्वै धाये ॥१॥
यहि अन्तर सेना सब धाये । मारु मारु कै मारन आये ॥
यहि विधि किये भयानक भारत[2] । साहस धन्य धन्य पुरुषारथ[3] ॥२॥

—सबलसिंह चौहान

छन्द

यह मेरी गोदी की शोभा,
सुख-सुहाग की है लाली ।
शाही शान[4] भिखारिन की है,
मनोकामना[5] मतवाली ॥ १ ॥

—सुभद्राकुमारी चौहान

यह बात सुनी भृगुनाथ[6] जबै ।
कहि रामहिं लै घर जाहु अब ॥
इन पै जग जीवत जो बचि हौ ।
रण हौ तुम सौं फिरि कै रचि हौं ॥ ३ ॥

—केशवदासजी

(१—दुर्योधन । २—युद्ध । ३—बल, वीरता । ४—राजसी । ५—मन की इच्छा । ६—परशुराम जी ।)

(र)

दोहा

रदन[1], दशन[1], द्विज[1], दन्त[1], रद[1], मदन[2] करत रंग भोज ।
जनु नव नीरद[3] मध्य में, शोभत बिद्युत[4] बीज ॥ १ ॥

(दशन नाम)—नन्ददास

रसना काँची[४] कहत कबि, रसना बहुरो दाम ।
रसना जिह्वा तासु की, जो भज ले हरि नाम ॥ २ ॥
(रसना शब्द)—नन्ददास

रुक्म[६], रजत[६], दुर्दान[६] लघु, जातरूप[६], खज्जूर ।
रूपे[६], के गीशाल तहं, भूप भवन ते दूर ॥ ४ ॥
(रूपा नाम)—नन्ददास

रंभा कहिये अपसरा, रंभा कदली[७] नाम ।
रंभा गोकुल की बधू, जिन मोहे घनश्याम ॥ ५ ॥
(रंभा शब्द)—नन्ददास

(१—दांत । २—कामदेव । ३—बादल । ४—बिजली । ५—करधनी । ६—चाँदी । ७—केला ।)

(ल)

दोहा

लगन महूरत योग बल, तुलसी गनत न काहि ।
राम भये जेहि दाहिने[१], सबै दाहिने ताहि ॥ १ ॥
लाज न लागत आपु को, दौरे आयहु साथ ।
धिक् धिक् ऐसे प्रेम को, कहा कहौं मैं नाथ ॥ २ ॥
—तुलसीदास

चौपाई

लखि रिस भरेउ लषन लघु भाई । बरत अनल घृत आहुति पाई ॥
हुमकि[२] लात तकि कूबरि मारा । परि मुंह भरि[३] महि करति पुकारा ॥ १
लोभी लँपट[४] लोल[५] लबारा[६] । जे ताकहिं परधन परदारा ॥
पावउँ मैं तिनकी गति घोरा[७] । जो जननी यह सम्मत मोरा ॥ २ ॥
—तुलसीदास

(१—सीधे, अनुकूल । २—क्रोधकर । ३—बल, तरफ । ४—ठग । ५—लालची । ६—उठाईगीरे । ७—कठिन ।)

(व)

चौपाई

विधि न सकेउ सहि मोर दुलारा। नीच बीच जननी मिसु पारा॥
यहउ कहत मोहिं आजु न सोभा। आपनि समुझ साधु सुचि कोभा॥१॥
विषयी साधक[1] सिद्ध[2] सयाने। त्रिविध जीव जग वेद बखाने॥
राम सनेह सरस मन जासू। साधु सभा बड़ आदर तासू॥२॥

—तुलसीदास जी

छन्द

वक्ष[3] भरा रहता अकबर का
सुरभित[4] जय-माला से।
सारा भारत भभक रहा था
क्रोधानल-ज्वाला से॥ १॥
वसुधा[5] का कोना धर कर
चाहूं तो विश्व हिलादूँ।
गगन-मही का क्षितिज[6] पकड़
चाहूं तो अभी मिला दूँ॥ २॥

—श्यामनारायण पाण्डेय

(१—साधना करने वाले। २—मुमुक्ष, मुक्ति पाने का इच्छुक। ३—छाती, हृदय। ४—सुगन्धित। ५—पृथ्वी। ६—दृष्टि की पहुंच पर वह वृत्ताकार स्थान जहां आकाश और पृथ्वी दोनों मिले हुए जान पड़ते हैं।)

(ष)

चौपाई

षट[1] विकार जित अनघ[2] अकामा[3]। अचल अकिंचन सुचि[4] सुख धामा।
अमित बोध[5] अनीह मित भोगी। सत्य सार[6] कवि कोबिद[7] जोगी॥१॥

षष्टि सहस बर सूर[८] जुझारा। लवणासुर संग अनी[९] अपारा।
सुभट प्रचारत गज रथ आवा। देख कटक[१०] निज अति सुख पावा।२।

दोहा

षष्टि सहस[११] दस बीरबर, रामानुज रणधीर।
मध्य ताहि आनेहु तहाँ, जहां राम रघुबीर॥ ३॥

१—छः, २—पाप रहित, ३—इच्छा रहित, ४—पवित्र, ५-भारी ज्ञान, ६—सत्य प्रतिज्ञा वाला, ७—पंडित, ८—योद्धा, ९—सेना, १०—फौज, सेना, ११—साठ हज़ार।

श

चौपाई

शत्रु मित्र सुख दुख जग माहीं। मायाकृत[१] परमारथ नाहीं।
बालि परम हित जासु प्रसादा। मिलेहु राम तुम समन[२] बिषादा॥१॥
शक्ति शूल[३] असि चर्म[४] सुहाई। गदा परशु[५] धनु बाण बनाई।
धरु धरु मारु मारु सुर करहीं। लरत न भट[६] बिस्मित[७] हो रहहीं॥२॥

—तुलसीदास जी

छन्द

शत-शत तुम को धन्यवाद है,
सुखी रहो जीवन भर।
झरें शीश पर सुमन सुयश के,
अम्बर तल से झर-झर॥ १॥
शर-दण्ड चले, कोदण्ड[८] चले,
कर की कटारियाँ तरज उठीं।
खूनी बरछे-भाले चमके,
पर्वत पर तोपें गरज उठीं॥ २॥

—श्यामनारायण पाण्डेय

(१—किये हुए। २—नाश हो गये। ३—त्रिशूल। ४—ढाल। ५—कुल्हाड़ा। ६—योद्धा। ७—चकित। ८—धनुष।)

(स)

दोहा

सदन[1], सद्म[1], आरामगृह[1], गेह[1], वेश्म[1], संकेत[1]।
लै मधिष्म[1] पद, आश्रम[1], आलय[1], निलय[1], निकेत[1] ॥ १ ॥

(धाम नाम)—नंददास

सारंग[2] ने सारंग[3] गह्यो, सारंग[4] बोल्यो आय।
ज्यों मुख ते सारंग[5] कह्यो, तौ मुख सारंग[3] जाय ॥ २ ॥
सारंग[7] लै सारंग[8] चली, करि सारंग[9] की ओट।
सारंग[10] पाछे आइ करि, सारंग[11] कर दई चोट ॥ ३ ॥
सुत नहिं अबला[12] करि सकै, यश नहिं सिन्धु[13] समाय।
धर्म न पावक[14] मे जरै, नाम काल नहिं खाय ॥ ४ ॥

—अज्ञात

(१—घर, इस दोहे में धाम (घर) के पर्यायवाची शब्द हैं। २—मोर। ३—सर्प। ४—बादल। ५—शब्द। ६—सर्प। ७—स्त्री। ८—दीपक। ९—करिया, पल्ला। १०—हवा। ११—दीपक। १२—स्त्री। १३—समुद्र। १४—अग्नि।)

(ह)

चौपाई

हम सब भाँति सहित परिवारा। देखि नयन भरि दरस तुम्हारा।
कीन्ह बास भल ठाम विचारी। इहाँ सकल ऋतु रहब सुखारी ॥ १ ॥
हम सब भाँति करब सेवकाई। करि केहरि अहि बाघ बराई[1]।
बन बेहड़ गिरिकंदर खोहा। सब हमार प्रभु पगु पगु जोहा ॥ २ ॥

—तुलसीदासजी

छन्द

हय-नरम-माँस खा, नर के
कंकाल[1] मधुर चुभलाते।
कादर समान कर-कर-कर
गज-खाल फार कर खाते॥ १॥
हल्दी घाटी संगर का तो
हो गया धरा पर आज अन्त
पर, हा, उसका ले व्यथा-भार
बन-बन फिरता मेवाड़[2]-कन्त॥ २॥

—श्यामनारायन पाण्डेय

(१—सूकर। २—इड्डियों का ढांचा। ३—महाराणा प्रताप।)

(छ)

दोहा

छत्रि जाति रघुकुल जनम, राम अनुज जग जान।
लातहुँ मारे चढ़त सिर, नीच को धूरि समान॥ १॥

—तुलसीदास जी

चौपाई

छमा सील जे पर उपकारी। ते द्विज प्रिय मोहिं यथा खरारी[1]।
मोर साप द्विज[2] व्यर्थ न जाइहि। जन्म सहस्त्र अवसि यह पाइहि।१॥

—तुलसीदास जी

छन्द

छण भर छल बल कर लड़ा अड़ा,
दो पैरों पर हो गया खड़ा।
फिर अगले दोनों पैरों को,
हाथी-मस्तक पर दिया गड़ा॥ १॥

—श्यामनारायण पाण्डेय

(१—श्रीरामचन्द्र जी । २—ब्राह्मण ।)

(त्र)

चौपाई

त्रिजग योनि नर जोइ तनु धरेउँ । तहँ तहँ राम भक्ति अनुसरेऊँ ।
एक सूल मोहिं बिसरु न काऊ । गुरु कर कोमल सील सुभाऊ ॥ १ ॥
त्रिविध[1] पाप संभव जो तापा । मिटहि दोष दुख दुसह कलापा ।
परम सांति सुख रहै समाई । तहं उतपात न भेटै आई ॥ २ ॥
त्रेता ब्रह्म[2] मनुज तनु धरि है । तासु नारि निसिचरपति[3] हरि है ।
तासु खोज पठइब प्रभु दूता । तिन्हहि मिले तुम होब पुनीता ॥ ३ ॥

—तुलसीदास

(१—तीन प्रकार का । २—भगवान । ३—रावण ।)

(ज्ञ)

चौपाई

ज्ञान मान जहँ एकौ नाहीं । देखत ब्रह्मरूप सब माही ॥
कहिये तासों परम[1] बिरागी । तृन सम सिद्धि तीनि गुन त्यागी ॥ १ ॥
ज्ञानहि भक्तिहिं अन्तर केता । सकल कहहु प्रभु कृपा निकेता ॥
सुनि उरगारि[2] बचन सुख माना । सादर बोलेउ काग[3] सुजाना ॥ १ ॥
ज्ञानहिं भक्तिहिं नहि कछु भेदा । उभय हरहिं भव[4] संभव[5] खेदा[6] ॥
नाथ मुनीस कहहिं कछु अन्तर । सावधान होइ सुनु बिहंगवर[7] ॥ ३ ॥
ज्ञान बिराग योग विज्ञाना । ए सब पुरुष सुनहु हरियाना[8] ॥
पुरुष प्रताप प्रबल सब भाँती । अबला अबल सहज जड़ जाती ॥ ४ ॥

—तुलसीदास

१—परमहंस । २—गरुड़जी । ३—कागभुशुडिजी । ४—संसार ।
५—नाश करनेवाले । ६—दुःखों का । ७—गरुड़जी । ८—गरुड़जी ।

अभ्यास

१—बालक प्रत्येक अक्षर पर अपनी कविता बनाकर याद करें।

२—उपर्युक्त कविता की भांति अन्य कवियों की सरल कविताएँ बच्चे स्वयं कण्ठस्थ करें।

पाठ ३ (इ)

अभिनय और वार्तालाप करना

'अभिनय' का अर्थ है 'नकल करना'। अभिनय में दूसरे मनुष्य का भेष बनाकर उसी की सी बातचीत और क्रियाएँ की जाती है। इसमें सफलता प्राप्त करने के लिए नीचे लिखी हुई बातों पर ध्यान रखना चाहिये:—

१—भेष, बातचीत और क्रियाएँ स्वाभाविक हों।

२—बातचीत और क्रियाएँ सजीव हों।

३—बातचीत संक्षिप्त और रोचक हो।

४—भाषा प्रभावित और ज़ोरदार हो।

५—विचार हाव-भाव के साथ प्रकट किए जायँ।

६—प्रश्नोत्तर अथवा उत्तर-प्रत्युत्तर साथ-साथ आवें।

७—आरम्भ और अन्त आकर्षक हो।

दुकानदार और ग्राहक का अभिनय

(राधे बाजार में जाता हुआ एक दुकान की ओर देखता है)

दुकानदार—कहिए बाबूजी, क्या चाहिए?

राधे—एक कापी चाहिए, भाई।

दुकान०—कैसी कापी, सादा या लाइनदार?

राधे०—लाइनदार।

दुकान०--(कापियों का बंडल खोलकर सामने रखता हुआ) लीजिए, पसन्द कर लीजिए।

राधे०-(एक कापी छाँटकर दिखाता हुआ)-इसकी क्या कीमत है?

दुकान०--छः आने।

राधे--(अचम्भे में आँखें फाड़कर) छः आने! हमारे स्कूल के कई लड़के कल ही पाँच-पाँच आने की ले गए हैं।

दुकान०--बाबूजी, कोई घटिया कागज की कापी होगी।

राधे--नहीं भाई, मैंने अपनी आँखों से उन्हें देखा है, बिलकुल ऐसी ही है।

दुकान०--(मुस्कराकर)--अच्छा, आप साढ़े पांच आने दे दीजिए।

राधे--नहीं, पाँच आने से अधिक नहीं दूँगा।

दुकान०--तो आपकी इच्छा, इससे कम में नहीं आएगी।

(राधे कापी रखकर ज्यों ही आगे बढ़ता है त्यों ही दुकानदार आवाज देता हुआ हाथ के संकेत से उसे बुलाता है।)

दुकान०--बाबूजी, लौटिए। आपको वापिस नहीं जाने दूँगा। आज एक कापी बिना नफा ही सही।

राधे--(लौटकर हाथ बढ़ाता हुआ)-लाइए।

दुकान०--(छटी हुई कापी देता हुआ)--लीजिए।

राधे--(बटुए में से दाम निकाल कर)-ये लीजिए पाँच आने।

दुकान०-(हाथ बढ़ाकर) लाइए। और कुछ चाहिए?

राधे-(सिर हिलाकर) नहीं भाई।

(कहकर आगे बढ़ता है।)

वार्तालाप (सम्वाद) करना

एक दृश्य

स्थान—राजमहल।

समय—दिन।

पात्र—पन्ना, उदयसिंह, पन्ना का इकलौता बेटा, नाई और बनवीर, महल की स्त्रियाँ।

घटना—बनवीर का उदयसिंह को मारने के लिए आना।

बनवीर (अपने आप)—मैंने अपने बल तथा अपनी बुद्धि से राज्य प्राप्त कर लिया, पर अभी एक काँटा और है। जब तक उदयसिंह का, जो कि इस गद्दी का हक़दार है, काम तमाम न किया जायगा, तब तक मैं आराम से राज नहीं कर सकूँगा। अच्छा तो आज मैं अवश्य उसका काम तमाम करूँगा।

नाई—(जो कि गुप्त रूप में बनवीर की बात सुन रहा था) भगवान्! उदयसिंह की इस दुष्ट से रक्षा कर। इस समय मेरा कर्तव्य है कि मैं जाकर पन्ना को बनवीर के बुरे इरादे से सूचित कर दूँ। (जाता है)

नाई—(हाँफता हुआ)-पन्ना, पन्ना! ग़ज़ब हो गया।

पन्ना - (घबराई हुई)-क्या हुआ, क्या हुआ? तुम इतने क्यों घबरा रहे हो?

नाई—बनवीरसिंह अपने राज को बेफ़िक्र बनाने के विचार से नंगी तलवार लिए, तुम्हारे मालिक हमारे छोटे महाराज उदयसिंह को मारने के लिए बड़ी तेज़ी से दौड़े आरहे हैं।

पन्ना—मुझे तुम्हारी बात का विश्वास नहीं होता।

नाई--यह बहस करने का समय नहीं है पन्ना ! मैं जो कुछ कहता हूँ बिलकुल ठीक है। इन बातों को छोड़कर महाराज कुमार के बचाने का उपाय करो।

पन्ना--(घबराई हुई) उपाय ! मुझे तो केवल एक उपाय सूझता है और उसमें तुम्हारी सहायता की आवश्यकता है।

नाई—कहो, जल्दी कहो। मै जी-जान से तुम्हारी सहायता करने को तैयार हूँ।

पन्ना—तो जाओ वह सामने की टोकरी उठा लाओ और उसमें उदयसिंह को लिटाकर किले से बाहर निकाल ले जाओ।

नाई—बहुत अच्छा, पर इसमे पता चल जाने का भय है।

पन्ना—महाराज को लिटाकर उनके ऊपर थोड़े से पत्ते और कपड़े डाल दो फिर कुछ भय न रहेगा। पर जल्दी करो। ऐसा न हो कि दुष्ट आ जाय। देखना क़िले के बाहर कहीं पर कुछ देर तक ठहरना। मैं भी जल्दी से आती हूँ।

नाई—बहुत अच्छा। (कहता हुआ महाराज को लेकर नाई रवाना हो जाता है और निश्चित स्थल पर ठहर जाता है।)

पन्ना—(बेचैन दशा मे) अब क्या करूं ! (थोड़ी देर ठहर कर और अपने बच्चे का मुख चूमकर) ठीक है, जा बेटा, अपने स्वामी की रक्षा कर (कहती हुई उदयसिंह की जगह उसे पालने में सुला देती है)।

बनवीर—(नंगी तलवार लिये आता है)—पन्ना ! बता उदयसिंह कहाँ है ?

पन्ना—(छटपटाती हुई और पालने में सोये अपने इकलौते पुत्र की ओर इशारा करके)—सामने···पा···ल···ने·· !

बनवीर—(पालने में सोये बालक को तलवार से दो टुकड़े करता हुआ) आज मेरे दिल का कांटा निकल गया। अब बे-फिक्र राज्य करूँगा।

पन्ना—(पछाड़ खाकर गिरती हुई) उदयसिंह, उदयसिंह! हा, मेरे जीवन के आधार उदयसिंह।

महल की सब स्त्रियाँ 'हा नाथ! यह क्या किया?' कहती हुई रो पड़ती हैं। पन्ना अपने इकलौते पुत्र की दाह-क्रिया करके तुरन्त नदी के किनारे नाई के पास जाती है। दोनों फिर कमलमीर के आशशाह नाम के सरदार के यहाँ जाते हैं और उदयसिंह के बड़े होने तक वहीं रहते हैं।

अभ्यास

१—अध्यापक और विद्यार्थी का अभिनय करो।

२—नीचे दिये हुए आधार पर अपने मास्टर साहब की सहायता से संवाद-रूप में कहानी कहो।

(क) स्थान—राजमहल।

समय—दिन।

पात्र—पन्ना तथा उसका नाई।

घटना—नाई द्वारा बनवीर के मारने की खबर पन्ना को मिलना।

(ख) स्थान—यज्ञशाला।

पात्र—लक्ष्मण और परशुराम।

घटना—धनुष टूटने पर लक्ष्मण परशुराम की परस्पर बातचीत।

पाठ—४ (ई)

चुनी हुई कविताओं का सुपठन प्रोत्साहित करना।

३—नीचे लिखी कविताओं को सुपठन द्वारा पढ़ो :—

(क) जग में बुरा कोइ नहीं, जो मन सीतल होय।
यह आपा[1] तूँ डालदे, दया करै सब कोय॥
(दोहा—कबीरदास)

(ख) चरण कमल बन्दौं हरि राई।
जाकी कृपा पंगु[2] गिरि लंघहि, अन्धे कौ सब कछु दरसाई॥
बहिरो सुनै, मूक[3] पुनि बोलै, रंक[4] चलै सिर छत्र धराई।
'सूरदास' स्वामी करुणामय, बार-बार बन्दौं तेहि पाई॥
(पद—सूरदास)

(ग) लेत चढ़ावत खैंचत गाढ़े। काहु न लखा देख सब ठाढ़े॥
तेहि छन राम मध्य[5] धनु तोरा। भरेउ भुवन[6] धुनि घोर कठोरा॥
(चौपाई)

रानी मैं जानी अजानी[7] महा, पबि[8] राइन[9] हूँ तें कठोर हियो है।
राजहु काज अकाज न जान्यो, [10] कह्यो तिय को जिन कान कियो है॥
ऐसी मनोहर मूरति ये, बिछुरे कैसे प्रीतम लोग जियो है।
आँखिन में, सखि, राखिबे जोग, इन्हैं किमि [11] कै बनबास दियो है॥
—तुलसीदास

(घ) सीस पगा[12] न झगा तन में, प्रभु जाने को आहि बसै केहि ग्रामा।
धोती फटी-सी लटी दुपटी, अरु पाँय उपानह[13] की नहिं सामा॥
द्वार खड़ो द्विज[14] दुर्बल देखि, रह्यो चकि-सो बसुधा[15] अभिरामा[16]।
पूछत दीन दयाल को धाम, बतावत आपनो नाम सुदामा॥ १॥
ऐसे बेहाल बेवाइन सों पग, कंटक-जाल[17] लगे पुनि जोये।
"हाय! महादुख पायो सखा[18]! तुम आये इतै न कितै दिन खोये॥
देखि सुदामा की दीन दशा, करुना करिकै करुना-निधि रोये।
पानी परात को हाथ छुयो, नहिं नैनन के जल सों पग धोये॥ २॥
—नरोत्तमदास

(ङ) १—माँगे घटत 'रहीम' पद, कितो करो बड़ि काम।
तीन पैंग बसुधा करी, तऊ बावनै[२१] नाम॥
—रहीम

२—घर घर डोलत दीन ह्वै, जन जन जाँचत जाइ।
दिये लोभ चसमा चखनि,[२२] लघु पुनि बड़ो लखाइ॥
—बिहारीलाल

३—(शुक)—हे सुक प्रीति न कीजिए, इन कागन के संग।
कहुँ भुलाय लै जाय कै, करि हैं चोंचहिं भंग॥
करि हैं चोंचहिं भंग, नारियल फल के माँहीं।
निरफल जै है सकल, कहा पैहै कछु नाहीं॥
बरनै दीन दयाल, जान इनको दुख-हेतुक[२३]।
न तु पछितैहै अंत, खोय अपनो गुन हे सुक[२४]॥
—दीनदयाल गिरि

४—आँख का आँसू ढलकता देखकर
जी तड़प करके हमारा रह गया।
क्या गया मोती किसी का है बिखर
या हुआ पैदा रतन कोई नया॥
—अयोध्यासिंह उपाध्याय

५—आते ही उपकार याद हे माता! तेरा,
हो जाता मन मुग्ध[२५] भक्ति भावों का प्रेरा,
तू पूजा के योग्य, कीर्ति तेरी हम गावें,
मन होता है तुझे उठाकर शीश चढ़ावें;
वह शक्ति कहाँ, हा! क्या करें,
क्यों हमको लज्जा न हो,
हम मातृ-भूमि केवल तुझे
शीश झुका सकते अहो!
—मैथिलीशरण गुप्त

६—मृत्यु एक सरिता [२७] है जिसमें,
श्रम [२८] से कातर जीव नहाकर।
फिर नूतन [२९] धारण करता है,
काया-रूपी वस्त्र [३०] बहाकर॥

—रामनरेश त्रिपाठी

(अर्थ—१-घमंड, २-लंगड़ा, ३-गूँगा, ४-कंगाल, ५-धनुष, ६-संसार, लोक, ७-आवाज़, ८-अज्ञानी, ९-बज्र, १०-पत्थर, ११-भले बुरे का विचार न किया, १२-कहा मान लिया है, १३-किस कारण या हृदय से, १४-पगड़ी, १५-पनही, जूता, १६-ब्राह्मण, १७ पृथ्वी, १८-सुन्दरता, १९-काँटों का जाल, २०-मित्र, २१-राज बलि से दान लेने के लिए भगवान ने वावन (५२) अँगुल का शरीर बनाया था इससे भगवान के इस अवतार को 'वावन' कहते हैं, २२-नेत्र, आँख, २३-छोटा, २४-दुःख का कारण, २५-तोता, २६-मोहित, २७-नदी, २८-मेहनत, २९-नवीन, नया, ३०-शरीर रूपी कपड़ा।)

अभ्यास

१—अपनी पाठ्य-पुस्तक में से उत्तम कवियों की सुन्दर कविताओं को सुपठन तथा लय से पढ़ो और उनके अर्थ समझने का प्रयत्न करो।

२—रामायण की चौपाइयाँ गा कर पढ़ो।

———

दूसरा प्रकाश

२--लिखना

पाठ ५ (क) प्रार्थना-पत्र आदि लिखना (राज-काजी पत्र)

(१) प्रार्थना-पत्र नौकरी के लिए।

श्रीमान कलेक्टर साहब बहादुर जिला मथुरा की सेवा में,

सविनय निवेदन,

मान्यवर महोदय,

मुझे विश्वस्त सूत्र से ज्ञात हुआ है कि आपके कार्यालय में एक लेखक की आवश्यकता है। उस पद के लिये मैं प्रार्थी हूँ। मैंने आगरा कालेज से इण्टरमीडियेट की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की है। टाइप राइटिंग भी जानता हूं। मुझे दृढ़ आशा है कि श्रीमान मेरे कार्य से सदा प्रसन्न रहेंगे। आशा है कि श्रीमान उक्त पद पर मुझे नियुक्त करने की कृपा करेंगे।

आपका विनीत सेवक—

वेदीराम शर्मा 'वेद'

शीतलागली, आगरा।

उत्तर

महाशय वेदीराम जी,

आप को सूचित किया जाता है कि आपकी नियुक्ति कलक्टरी के मुहाफिज खाने दफ्तर में मुख्य क्लर्क के पद पर १२५) वेतन तथा मय भत्ता मँहगाई पर की जाती है। यह नियुक्ति एक वर्ष के लिए परीक्षार्थ है। यदि कार्य संतोषजनक सिद्ध हुआ तो इसकी सम्पुष्टि कर दी जायगी।

आपको चाहिए कि पहली सितम्बर तक अवश्य काम पर आ जायँ।

प्रेम बिहारी माथुर, आई०सी०एस०
कलक्टर

(२) छुट्टी के लिए प्रार्थना पत्र

सेवा में,

श्रीयुत इन्स्पेक्टर साहब
शिक्षा-विभाग,
कानपुर।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मेरी बहिन का विवाह १०जून सन् १६५० को होना निश्चित है। मेरे घर में मेरे अतिरिक्त और कोई प्रबन्ध करने वाला नहीं हैं; अतः प्रार्थना है कि मुझे अर्द्ध वेतन पर डेढ़ मास का अवकाश प्रदान किया जाय। मेरे अवकाश की तिथि १५ मई से लेकर ३० जून तक रहेगी। सूचनार्थ निवेदन है कि मैंने दो वर्ष से किसी प्रकार का अवकाश नहीं लिया।

यदि मेरी प्रार्थना स्वीकृत हो गई तो मेरे पद का कार्य्य मेरे सहायक लेखक रघुवीर प्रसाद सक्सेना कर सकेंगे।

प्रार्थी—

छैलबिहारलाल गुप्ता

उत्तर

महाशय छैलबिहारी लाल,

आपको विदित हो कि आप को १५ मई से लेकर ३० जून सन् १६५० ई० तक आधे वेतन पर अवकाश दिया जाता है, परन्तु छुट्टी पर जाने से पूर्व आपका कर्त्तव्य है कि उस तारीख तक समस्त कार्य्य सम्पादित हो जायँ। कुछ शेष न रहे।

जिस प्रबन्ध का आपके प्रार्थना-पत्र में प्रस्ताव है, उसे स्वीकार किया जाता है।

मुकटबिहारीलाल 'घोष'
इन्सपेक्टर ऑफ स्कूल्स,
कानपुर

अस्वीकृति का उत्तर

महाशय छैलबिहारीलाल जी,

खेद है कि आपको इस समय अवकाश नहीं मिल सकता। सरकारी कार्य्य का इस समय इतना आधिक्य है कि बिना आपके कार्य्य न चलेगा। मैं किसी प्रकार आपको नहीं छोड़ सकता।

मुकटबिहारीलाल 'घोष'
इन्सपेक्टर ऑफ स्कूल्स,
कानपुर

(३) वेतन वृद्धि के लिये

सेवा मे,

श्रीयुत डाइरेक्टर साहब,
कृषि-विभाग
उत्तर प्रदेश,
आगरा।

महोदय,

सेवा में सविनय निवेदन है कि आज तीन वर्ष से मेरी वेतन-वृद्धि नहीं हुई। इस मास में पदाधिकारियों में जो परिवर्त्तन होने वाले हैं, उनमें मेरे काम तथा योग्यता पर भी ध्यान दिया जायगा।

मै बारह वर्ष से सेवा कर रहा हूँ और इतने समय में मुझसे एक भी अपराध (काम खराबी आदि का) नहीं हुआ। मेरे सभी अफ़सर मुझसे प्रसन्न रहे। इसकी पुष्टि मेरे प्रमाण-पत्रों से होगी, जो इस प्रार्थना-पत्र के साथ नत्थी हैं।

गत वर्ष ज़िले के मैदान में कृषि-सम्बन्धी जो नुमाइश हुई थी, वह भी मेरे ही उद्योग से हुई थी। मैंने अपने ज़िले में कृषि की उन्नति के लिये जो प्रयत्न किये है उनमें अधिकतर तो श्रीमान् को ज्ञात हैं। मेरे फ़ार्म का श्रीमान् ने गत वर्ष निरीक्षण किया था।

आपका नम्र सेवक—
बाबूलाल शर्मा
सुपरिण्टेंडेंट
फ़ार्म बिचपुरी

उत्तर

महाशय बाबूलालजी,

आपको विदित हो कि १ जौलाई सन् १६५० ई० से आपका वेतन १२०) से १५०) मासिक कर दिया गया। उचित कार्य्यार्थ सूचना है।

बी० डी० बागची
डाइरेक्टर
कृषि-विभाग

(४) एक निम्नाधिकारी की शिकायत

सेवा में,

श्रीयुत डिप्टी इन्सपेक्टर साहब,
शिक्षा-विभाग डि० बो०,
एटा

सं० १२१

ता० १८ जौलाई, १६५० ई०

महोदय,

मुझे यह सूचित करते खेद होता है कि पं० अनन्तराम शर्मा, सहायक अध्यापक का कार्य्य अत्यन्त असन्तोषजनक है। मैंने इनको कई बार मौखिक और कई बार लिखकर कहा कि सावधानी से कार्य्य करना चाहिये; परन्तु वे अपने को सुधारने का प्रयत्न नहीं करते।

गत फ़रवरी मास में जब श्रीमान्‌जी इस स्कूल के निरीक्षणार्थ पधारे थे, उस समय भी उनका काम अच्छा नहीं पाया गया। विद्यार्थियों की लिपी-पुस्तकों पर हस्ताक्षर न थे। बहुत सी तो देखी भी नहीं गई थीं और जो दो-चार देखी गईं, उनमें भी बहुत सी अशुद्धियाँ थीं।

उनके आचरणों की भी मुझे बड़ी शिकायत है। वे कभी समय पर स्कूल नहीं आते और उनका प्रभाव विद्यार्थियों पर अच्छा नहीं पड़ता।

मैं यह तो नहीं चाहता कि उनकी जीविका में किसी प्रकार का विघ्न पड़े, परन्तु सरकारी काम भी तो करना ही है; अतः मेरा प्रस्ताव यह है कि उनका किसी दूसरे स्कूल को तबादिला कर दिया जाय। इसका परिणाम यह होगा कि वे आगे के लिये सावधान हो जायँगे। उनके स्थान पर एक ट्रेण्ड बेसिक अध्यापक यहाँ भेजने की कृपा की जाय।

आपका नम्र सेवक
बनवारीलाल हेडमास्टर
जूनियर हाई स्कूल, कासगंज

उत्तर माँगना (जवाब तलब)

डिप्टी इन्सपेक्टर का कार्य्यालय, एटा
सं० क १२०५, २४ जौलाई, १९५० ई०

पं० अनन्तराम शर्माजी, सहायक अध्यापक,

विदित हो कि हेडमास्टर महाशय ने आपके कार्य्य से असन्तोष प्रकट किया है। गत निरीक्षण के अवसर पर मैंने भी आपको अच्छा काम करते नहीं पाया। आपकी कक्षा के विद्यार्थियों को साधारण बातों का भी ज्ञान न था। लिपि-पुस्तकों में बहुत सी त्रुटियाँ थीं। शीघ्र उत्तर दीजिये कि आपको क्यों दण्ड न दिया जाय ?

जे० पी० श्रीवास्तव
डिप्टी-इन्सपेक्टर

उत्तर

सेवा में,

श्रीयुत डिप्टी इन्सपेक्टर साहब,
शिक्षा-विभाग डि० बो०,
एटा।

महोदय,

आपके आज्ञापत्र सं० क। १२०५, ता० २४ जौलाई, १९५० ई० के उत्तर में नम्र निवेदन है कि मेरा इतना अपराध नहीं है, जितना हेडमास्टर महोदय ने प्रकट किया है। वस्तुतः कक्षा के विद्यार्थी ही कमजोर थे। मैंने कक्षोन्नति के समय भी हेडमास्टर महोदय से निवेदन किया था कि ये विद्यार्थी उच्च कक्षा में न चल सकेंगे। अन्य कई ऐसे कारण हैं जिससे वे मुझसे अप्रसन्न रहते हैं। वह कारण मेरे पद से सम्बन्ध नहीं रखते, अतः उनका यहाँ उल्लेख ठीक नहीं। यदि श्रीमान् ने अन्वेषण किया तो मैं सम्पूर्ण कक्षा आपके समक्ष उपस्थित करूँगा। यदि मेरा अपराध हो तो मुझे दण्ड पाने में कुछ भी संकोच नहीं है; परन्तु मेरा अपराध सिद्ध न हो तो उस अवस्था में आप क्या करें, यह मैं निवेदन नहीं कर सकता। मुझे तो उच्चाधिकारियों की आज्ञा का हर समय ही पालन करना चाहिये और मैं करता हूँ। मेरी सेवा नई नहीं है। १० वर्ष से मैं प्रशंसनीय सेवा करता हूँ। १७) रु० से आरम्भ करके आज ३५) तक पहुँचा हूँ। यदि कार्य्य अच्छा न होता तो पहले ही वर्ष में निकाल दिया जाता। आप अपने दफ्तर की रिपोर्टों के निरीक्षण करने की कृपा करें।

मेरे आचरणों के विषय में ज़िले के अध्यक्ष तथा नगर के सम्मान-युक्त भद्र पुरुषों से भी पूछ-ताँछ कर लीजिये।

अधिक क्या लिखूँ, आपकी आज्ञा शिरोधार्य्य है।

आपका नम्र सेवक—

ता० २६-७-५० ई०

अनन्तराम शर्मा

सरकारी आदेश

डिप्टी इन्सपेक्टर का कार्यालय, एटा,
सं० क । १२१०, २८ जौलाई, सन १९५०,

सेवा में,

हेडमास्टर साहब,
जूनियर हाई स्कूल,
कासगंज ।

महोदय,

श्री पं० अनन्तराम शर्मा का तबादिला कासगंज से एटा किया जाता है । आप उनको आदेश कर देवें कि वे ता० ५ अगस्त, ५० को स्कूल खुलते ही जूनियर हाई स्कूल एटा में उपस्थित हों । उनको इस समय इससे अधिक दण्ड नहीं दिया जाता; परन्तु यदि उन्होंने असावधानी की तो उनके साथ सख्त कार्यवाही की जायगी ।

जे० पी० श्रीवास्तव
डिप्टी इन्सपेक्टर

पाठ ६

पत्र-व्यवहार करना

पिछली कक्षाओं में पत्र-लेखन की रीति बताई जा चुकी है । यहाँ हम हिंदी के कतिपय विद्वानों और कर्णधारों के तीन-चार पत्रों की प्रतिलिपियां देते हैं । इसका उद्देश्य यह है कि बालक पत्र लिखने के उस वर्तमान व्यावहारिक ढंग से परिचय प्राप्त करें, जिस प्रकार बड़े लोग लिखते हैं ।

यह देखा गया है कि बड़े लोग जैसा आचरण करते है, दूसरे लोग भी वैसा ही करने लगते हैं। महात्मा गांधी, आचार्य द्विवेदी और अन्य महानुभाव जिस ढंग के पत्र लिखते हैं, वह अन्य लोगों के लिए अवश्य ही आदर्श हैं ।

इन पत्रों के द्वारा ये बातें सीखनी चाहिए ।

१--अपने भावों को थोड़े शब्दों में प्रकट करना। बहुत-सा आल्हा-पवारों गाने से बचना।

२--हृदय की सीधी-सच्ची बातों को सादी किन्तु भाव-पूर्ण भाषा में लिखना।

३--लम्बे-चौड़े आडम्बरमय अभिवादनों और प्रशस्तियों से बचना।

(१) निम्न-लिखित पत्र साहित्यरत्न पं० शिवरत्न जी शुक्ल का लिखा हुआ है।

'सिरस'-साहित्य-माला'
बछरावां (रायबरेली)
ता० २७-१०-१९३४ ई०

प्रिय पं० .....जी,

आशीर्वाद,

पत्र आपका आया। "द्विवेदी-साहित्य-संघ" नाम-मात्र के लिए है। उसका मन्त्री बनना अपना उपहास करना है। लोग संघ के लिए कुछ करना तो चाहते नहीं, नाम के पीछे व्याकुल हैं। ऐसी दशा में उससे दूर रहना ही ठीक है।

भवदीय—
शिवरत्न शुक्ल

सूचना—सही और भाव-पूर्ण भाषा, वाक्यों के क्रम और भाव को थोड़े शब्दों में प्रकट करना,—इस पत्र की ख़ूबी है।

(२)—हिन्दी की प्रमाणिक और श्रेष्ठ मासिक पत्रिका के सुयोग्य और अनुभवी सम्पादक पं० देवीदत्त जी शुक्ल का एक पत्र नीचे दिया जाता है। उसमें सादगी और संक्षेप की छटा देखो।

इंडियन प्रेस, प्रयाग।
ता० ३१-८-३४

प्रिय महोदय,

जापान-सम्बन्धी लेख मिला। उपयोगी और सामयिक है। इस कृपा के लिए कृतज्ञ हूँ। कृपा-भाव बना रहे।

विनीत—
देवीदत्त

(३) हिंदी-साहित्य-सम्मेलन (१९३५ ई०) के सभापति-महात्मा गांधी के एक पत्र का कुछ अंश नीचे दिया जाता है।

भाई.....,

बहुत दिनों से खत मिला। खेती में सफलता होगी तो अच्छा है।

× × × ×

२३-४-३५ बापू के आशीर्वाद

सूचना—उक्त पत्र में प्रशस्ति और अभिवादन तथा पत्र के अन्तिम भाग पर ध्यान दो। पत्र लिखने की जो रीति तुम जान चुके हो उससे इसमें भिन्नता है। तारीख भी नीचे लिखी गई है। चूँकि यह एक महापुरुष के पत्र लिखने का ढंग है, अतएव इस प्रकार की प्रथा भी चलेगी। बहुत से लोग ऐसे ढंग पर पत्र लिखने लगे हैं।

(४) नीचे के पत्र में एक और ही अजीब छटा दिखाई देती है। भाव कैसे स्पष्ट हैं? भाषा भी सरस और सुबोध है।

नर्वदा जेल, बम्बई

मेरे प्यारे भाई,

.....मैंने सोचा था कि मृत्यु के हृदय-विदारक समाचार को तुम तक न पहुँचाऊँ; किन्तु प्रेम मनुष्य को आसक्त कर देता है इसलिए मैं तुम्हें पत्र लिखने का लोभ संवरण न कर सका। इस पत्र को तुम दिल कड़ा करके पढ़ना। आजकल मैं नर्वदा जेल में हूँ। मैंने ही सोचा, फाँसी पर कब झूलना होगा?

मेरे लिए दुःखी न होना। भैय्या .... परिवार वालों को यथा-योग्य तथा बच्चों को प्यार। बच्चू चिरंजीवी रहे।

तुम्हारा स्नेही,

कुछ अन्य पत्रों के नमूने और देखिए:—

पत्र मित्र की यात्रा के सम्बन्ध मे

आर्य मंदिर मंसूरी,

१०-७-४८

प्रिय रामदेवजी,

मैं ता० १० को शाम को अपना बोरिया-बँधना बाँधकर देहरा एक्सप्रेस पर जा बैठा। आपकी अनुपस्थिति का अनुभव करता हुआ सो गया। प्रातःकाल हरिद्वार के निकट आँख खुली। हरिद्वार स्टेशन आ गया। स्टेशन से चलकर एक धर्मशाला में अड्डा जमाया। धोती, तौलिया लेकर गंगा-स्नान को चल दिया। जिस 'हर की पैड़ी' की चर्चा कानों से सुना करता था उसके प्रत्यक्ष दर्शन कर हृदय परमानन्दित हुआ। थोड़ी देर घाट पर बैठे हुए नाना-प्रकार के स्त्री और पुरुषों की जल-क्रीड़ा देखता रहा। फिर स्नान करने के लिए गंगाजी में प्रवेश किया। जल की शीतलता देखकर जून मास में ही पूस माघ के ठंडे पानी की याद आ गई। स्नान करके पेट-पूजा की। हरिद्वार के प्रसिद्ध-प्रसिद्ध स्थानों के दर्शन किए। शाम को 'हरि की पैड़ी' के सामने वाले प्लेटफार्म पर अद्भुत आनन्द का दृश्य दृष्टिगोचर हुआ। ९ बजे के लगभग डेरे पर आया। दूसरे दिन प्रातःकाल ऋषिकेश की तैयारी करदी। यह स्थान किसी समय आध्यात्मिक साधु-सन्तों का वास-स्थान था। यहाँ हजारों सन्यासियों को भोजन मिलने के बीसों क्षेत्र हैं। यहाँ भी 'स्वर्गाश्रम' और 'लक्ष्मण-झूला' आदि आश्रम देखे। स्वर्गाश्रम माता भागीरथी के तट पर एक दिव्य स्थान है। मायामय संसार की माया से त्राण पाने का एक उत्तम साधना स्थल है।

ऋषिकेश से हमने देहरादून को प्रयाण किया। एक दिन देहरादून में ठहरकर मोटर द्वारा मंसूरी को प्रस्थान किया। राजपुर से ही मोटर नेगेसे चक्कर काटने शुरू किये कि बहुत से पुरुष और विशेषकर स्त्रियाँ घबड़ाने लगीं उनका जी मचलाने लगा। किन्तु मुझे पूर्ण आनन्द आया।

मंसूरी एक दिव्य और रमणीय स्थान है। यहाँ प्रकृति अपनी अठखेलियाँ करती हुई दृष्टिगत होती है। प्रकृति के अनुपम सौन्दर्य को देखकर मन मुग्ध हो जाता है। यहाँ पर राजा, महाराजा, अंगरेज और धनी मनुष्यों का मेला ग्रीष्म ऋतु में रहता है। यहाँ के प्रसिद्ध स्थान देख लिये हैं। दो-चार दिन बाद यहाँ से चलकर राजपुर में एक दिन ठहरकर सहस्त्र-धारा देखेंगे। फिर हरिद्वार होते हुए आगरा चले जावेंगे। शेष आनन्द है।

आपका स्नेह पात्र,
ज्वालाप्रसाद शर्मा

अब बालिकाओं के लिए कुछ पत्रों के नमूने दिए जाते हैं:—

पत्र पुत्री का माता को

(अज्ञानतावश ससुराल की बुराई पर)

मातागली,
मथुरा,
ता० १५-१२-४८ ई०

श्रीमती माताजी, सादर प्रणाम !

मैं आपके आशीर्वाद से सकुशल हूँ। और आशा करती हूँ कि घर पर भी सब आनन्दपूर्वक होंगे। मै जबसे यहाँ आई हूँ, मेरा चित्त नहीं लगता है। मुझे यहाँ कोई खेलने तथा किसी से बोलने नहीं देता है, हर समय सासुजी काम के लिये तिकतिकाती रहती हैं।

यदि कभी किसी काम को नहीं करती हूँ या अचानक कोई काम बिगड़ जाता है तो सास-नन्द दोनों ताने मारकर कहती हैं कि माँ के घर कुछ सीखा भी था या नहीं ? फिर चाचा जी और पतिदेव से कहकर उनसे भी बुरा-भला कहलवा देती हैं। इसके अतिरिक्त कभी-कभी उनके प्रहारों को भी सहना पड़ता है। अकारण ही जिठानी, दौरानी की जली-कटी बातों को सुनना पड़ता है इत्यादि अनेक कारणों से मैं यहाँ रहना नहीं चाहती हूँ। इसलिए पिता जी यहाँसे मुझे बुलवा लीजिये। पत्रोत्तर देने की कृपा कीजियेगा। ओमप्रकाश लल्लू को प्यार, सबको नमस्ते।

आपकी प्यारी बेटी,
अंगूरी

पत्र माता की ओर से पुत्री को शिक्षा पर

कूँचा साधूराम, आगरा।
२८-१२-४८

प्रिय पुत्री अंगूरी, प्रसन्न रहो।

पत्र तुम्हारा मिला, समाचार ज्ञात हुआ। हर्ष के स्थान में शोक हुआ। तुम्हारी राम-कहानी को पढ़कर यह अनुभव हुआ कि तुम पढ़ी-लिखी तो जरूर हो मगर अभी गुनी नहीं हो। तुम अपने कर्तव्य पालन से विमुख हो इसलिये तुम्हें कष्टों का सामना करना पड़ता है। तुम अपने कर्तव्य को भलीभांति समझ जाओ इसी उद्देश्य से यह शिक्षाप्रद पत्र आजतुमको लिख रही हूँ। आशा है, इस पढ़कर अवश्य लाभ उठाओगी। और आगे शिकायत का अवसर न आने दोगी।

देखो, स्त्री का मुख्य धर्म पति तथा उसके कुटुम्बीजनों की सेवा करना है। लेकिन सेवा धर्म जितना कठिन है उतना ही वह उत्तम फलदायक भी है। प्राचीनकाल की स्त्रियां इसी सेवा धर्म का

पालन करके जगत्पूज्य और परमपद की अधिकारी हुई हैं इसलिये तुम सेवा धर्म से मुँह न मोड़ो। इसके अतिरिक्त प्रेम वह वस्तु है जो पत्थर को भी पिघला कर मोम कर देता है। लिखा है कि मीठा बोल बोलने से पशु भी अपने वश में होजाते हैं। और शत्रु भी अपने मित्र होजाते हैं। इसलिये मीठी बोली बोलकर नम्रता का बर्ताव करो परिश्रम करके सबको अपना करने की कोशिश करो। स्त्रियों को सहनशील भी होना चाहिये। अगर अपने से बड़ा आदमी अनुचित बात भी कहे तो उसे सुनकर चुपचाप रहना चाहिये। जवाब देकर उनकी बराबरी नहीं करनी चाहिये इसीमें स्त्रियों की भलाई है।

बेटी! तुम्हें तो सदा उसी घर से काम है। इसलिये शांति, सन्तोष, धैर्य आदि गुणों को धारण करके जीवन को सफल बनाने की कोशिश करो। और यह भी याद रखो कि कभी किसी की बुराई मत करो। घर के आदमी की बुराई करने से स्त्री को लाभ होना तो दूर रहा उसको अपयश का पात्र बनना पड़ता है। और दिन-रात क्लेश रहने के कारण महान् कष्टों को भोगना पड़ता है। इसलिये सास, नन्द, देवरानी, जिठानी और पति आदि कोई हों, पर कभी बुराई न करो इसी में तुम्हारा कल्याण है।

तुलसी मीठे बचन से, सुख उपजत चहुँ ओर।
वशीकरण एक मंत्र है, तजि दे बचन कठोर॥

और किसी कवि ने यह भी लिखा है—

कागा काको धन हरै, कोयल काको देत।
मीठे बचन सुनाय के, जग अपना कर लेत॥

आशा है, तुम मेरी इन शिक्षाप्रद बातों पर ध्यान देकर अपने मैयके को बदनाम न करोगी॥इति॥

तुम्हारी शुभचिंतका माता,
गायत्रीदेवी।

पत्र भावज का ननद को

(विपत्ति मे धैर्य दिलाने पर)

बम्बई

ता० २-२-४८ ई०

श्रीमती पूज्य बीबीजी. सादर नमस्ते ।

छोटी जीजी के पत्र से ज्ञात हुआ कि आपके घर में चोरी होगई है। दुष्ट चोर सब धन चुराकर ले गये, जिसके कारण बाल-गोपाल अत्यन्त दुखी है। यह दुखदाई वृतान्त पढ़कर चित्त को बड़ा ही दुःख हुआ। परन्तु बीबीजी आप किसी प्रकार से घबड़ावें नहीं; मैं आपका इस विपत्ति मे तन, मन तथा धन से यथाशक्ति साथ दूँगी। यदि चोरी गया हुआ धन न मिले तो धीरज रखना चाहिये। क्योंकि विपत्ति के समय धीरज रखना ही मनुष्य का परम धर्म है। उस जगत पिता जगदीश्वर पर भरोसा रखना चाहिये। जिसने पहले दिया था वह फिर भी देगा। मै आपसे सच्ची सहानुभूति रखती हुई आपत्ति मे आपकी सहायता करना अपना धर्म समझती हुई चिरंजीव जगन्नाथ के हाथ अपना आधा जेवर, दस्तबन्द गुलूबन्द, मटरमाला, कड़े सोने के और चार चीजें पैरों की भेज रही हूँ। २०००) जीजाजी के नाम मनीआर्डर कर दिये गये हैं। इन रुपयों से जीजा महोदय अपना काम चलायें। मैं आशा करती हूँ कि आप तुच्छ भेंट को सहर्ष स्वीकार करेंगी और भेजी हुई वस्तुयें पहुँचने की सूचना शीघ्र देंगी।

आपकी कृपाभिलाषिणी भामी,

गार्गी

पत्र ननद का भावज को

(कृतज्ञता प्रगट करने पर)

भरतपुर स्टेट
८-२-४८ ई०

श्रीमती स्नेहमयी भाभीजी, सादर नमस्ते।

ईश्वर करे तुम खुश रहो, सदा फूलो फलो; तुम्हारा सुहाग अचल हो।

"जब लगि पृथ्वी गगन नभ, तब लगि शशि और भानु।
जुग जुग जीवें भाई भावज, गौरव होत महान्" ॥

प्रिय जगन्नाथ आपकी भेजी हुई पत्रानुसार सब चीजें लेकर आगया है।

भाभीजी! अगर आपने रुपये न भेजे होते तो जगन्नाथ के फूफाजी अवश्य कारागार में भेज दिये जाते। क्योंकि १८००) सरकारी चोरी में जाता रहा था। और रुपये दाखिल करने की तारीख ७ फरवरी थी। चूँकि जेवर सब जाता रहा था इसलिये रुपयों का दाखिल करने का कोई प्रबन्ध न था। मैं आपकी इस उदारता तथा सहानुभूति का कोई बदला नहीं दे सकती, केवल ईश्वर से यही प्रार्थना करती रहूँगी कि वह मेरे भाई-भतीजों को सदैव धन, धैर्य्य और प्रतिष्ठा से परिपूर्ण रक्खे। किसी कवि ने सच कहा है--

"धर्म के कारण लुटा देते हैं, धन धर्मात्मा।
उससे दूना कर उसे देते है परमात्मा" ॥

भाई साहब को नमस्ते। जगन्नाथ को पन्द्रह दिन के लिये रोक लिया है। इति॥

आपका कल्याण चाहने वाली ननद,
दुर्गावती।

लिफाफे और कार्डों पर लिखे जाने वाले पतों के कुछ नमूने जानकारी के लिये लिखे जाते है।

कार्ड और लिफाफे पर पता लिखने में कोई विशेष अन्तर नहीं है। केवल इतनी बात अवश्य है कि लिफाफे पर बाँई ओर भेजने वाले को एक लाइन खींचकर अपना पता लिख देना चाहिये। ताकि किसी कारण भेजा हुआ पत्र पाने वाले को न मिले तो लौट कर पत्र भेजने वाले के पास पहुँच जाय।

इन बातों को याद रक्खोः—

१—पहली लाइन में पाने वाले का नाम, पदवी, जाति, पेशा आदि लिखो।

२—दूसरी लाइन में पाने वाले के रहने के मुहल्ले का नाम लिखो। यदि वह गाँव में रहता है तो गाँव लिखो।

३—तीसरी लाइन मे शहर का नाम लिखो। यदि वह स्थान कोई कस्बा हो तो उसी तीसरी लाइन में डाकखाने का नाम लिखो।

४—पत्र गाँव को जा रहा हो तो चौथी लाइन में जिले का नाम लिखकर नीचे लाइन कर दो।

लिफाफे व पोस्टकार्ड पर पताः—

(१) पदवी सेः—

सेवा मेंः—

श्रीयुत डिप्टी इन्सपेक्टर साहब बहादुर,

शिक्षा-विभाग,

डिस्ट्रिक्ट बोर्ड,

मथुरा।

टिकिट

(२) नाम से (शहर में) :—

सेवा में—

बाबू बालमुकन्द वैश्य, एम० एस- सी०,

मुहल्ला ताजगंज,

आगरा।

टिकिट

(३) गाँव में:—

सेवा में:—

पंडित बटेश्वरदयाल,

गाँव जनौरा,

डाकखाना ढौकी,

जिला आगरा।

टिकिट

प्रेषक:—

ओमप्रकाश सूतल

आगरा।

पाठ ७—कुछ विशेष पत्रों के नमूने :—

१—निमन्त्रण-पत्र

प्रीतिभोज का

सेवा सदन

परतापपुरा, आगरा।

१५-६-४८

प्रियवर रमाकान्त जी !

आपको यह सूचित करते हुए अपार हर्ष होता है कि मेरी सुपुत्री कमला देवी ने इस वर्ष एम० ए० परीक्षा द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण की है। इसके उपलक्ष में मैंने परसों ८ बजे एक प्रीतिभोज देने का निश्चय किया है। अतः निवेदन है कि आप इस अवसर पर पधार कर मुझे अनुग्रहीत कीजियेगा।

भवदीय:—

यादराम मिश्रा।

२—विवाह-पत्र

* ओ३म *

सिद्धि-सदन, करिवर बदन, बुद्धिराशि गणराज।
विघ्न-हरन, मंगल-करन, सफल करहु मम काज॥

प्रिय महानुभाव,

आपको यह सूचित करते हुए अपार हर्ष होता है कि परमात्मा की असीम कृपा से चिरंजीव मदनलाल का पाणिग्रहण संस्कार आगरे के कूँचा साधूराम मुहल्ला निवासी पं० निनुआँराम सूनल की सुपुत्री अंगूरी देवी के साथ शुभ मिती माघ कृष्णा ११ वृहस्पति-वार सं० २००४ वि० तदनुसार ता० ५ फरवरी सन् १९४८ ई० को होना निश्चित हुआ है। अतः सविनय निवेदन है कि आप इस शुभ

अवसर पर अपने इष्ट जनों के सहित पधार कर विवाह की शोभा बढ़ाइयेगा और हमें अनुग्रहीत कीजियेगा।

मातागली,
बिहारीपुरा,
मथुरा।

आपके दर्शनाकांक्षी—
कुंजीलाल, नत्थीलाल।

वैवाहिक-कार्यक्रम

प्रीतिभोज—माघ कृष्णा १० बुधवार ता० ४ फरवरी सायं काल ८ बजे। बरात-प्रस्थान और पाणिग्रहण-संस्कार—माघ कृष्णा-११ बृहस्पतिवार ता० ५ फरवरी।

बढ़हार—माघ कृष्णा १२ शुक्रवार ता० ६ फरवरी।

विदा—माघ कृष्णा १३ शनिवार ता० ७ फरवरी।

३—चाय-पानी

प्रकाश-भवन,
भिड़ाकुर।
१०-१-४८

प्रिय हजारीलाल जी ,

कल सायंकाल ६॥ बजे मेरे यहाँ पधार कर चाय-पानी में सम्मिलित होने की कृपा कीजियेगा।

प्रेमपात्र—
रामसिंह जैन

स्वीकृति-पत्र

प्रकाश-भवन
भिड़ाकुर।
१०-१-४७

प्रिय रामसिंह जी,

चाय-पानी के निमन्त्रण के लिये अनेक धन्यवाद! मैं कल

ठीक ६॥ बजे आकर आपके दर्शन करूंगा।

स्नेही—
हजारीलाल।

अस्वीकृति-पत्र

प्रकाश भवन,
मिट्ठाकुर।
१०-१-४७

प्रिय रामसिंह जी,

चाय-पानी के निमंत्रण के लिये आपको अनेक धन्यवाद। खेद है कि कल ६॥ बजे एक मित्र मेरे यहाँ पधारेंगे। अतः उनके सत्कार में लगे रहने के कारण मैं आपके चाय-पानी के सुअवसर पर उपस्थित न हो सकूंगा।

स्नेही—
हजारीलाल

४—स्कूल का पुरस्कार-वितरण।

विक्टोरिया हाई स्कूल,
आगरा।
१४-२-४१

प्रिय महानुभाव,

कल सायंकाल ४ बजे से हमारे स्कूल में पुरस्कार वितरण का उत्सव मनाया जायगा। श्रीमान् रायबहादुर पं० उमेशप्रसाद उपाध्याय एम० ए० एल० एल० बी० सभापति का आसन सुशोभित करेंगे। अतः निवेदन है कि आप उक्त अवसर पर पधार कर उत्सव में शामिल होने की कृपा कीजियेगा।

निवेदक:—
रघुनाथ दास बी० ए० एल० टी०
हेडमास्टर।

उत्सव का कार्यक्रम :—

प्रार्थना—५ बजे।

गायन—५। से ५॥। तक।

हेडमास्टर द्वारा स्कूल की वार्षिक रिपोर्ट पढ़ना—६॥। से ६ तक।

पुरस्कार-वितरण—६ से ६॥ तक।

सभापतिजी का भाषण—६॥ से ३॥। तक।

प्रीतिभोज—६॥। से ७। तक।

५—आज्ञा-पत्र।

(पुस्तकों के लिए)

प्राइमरी स्कूल अछनेरा।
१५-७-४७

श्री पी० सी० द्वादशश्रेणी एण्ड कम्पनी लिमीटेड
बड़ा बाजार, अलीगढ़

प्रिय महोदय,

मुझे अपने विद्यार्थियों के लिए निम्नलिखित पुस्तकों की आवश्यकता है। कृपया उचित कमीशन काटकर वी० पी० से शीघ्र भेज दीजिएगा।

१—यादवचन्द्र चक्रवर्ती अरिथमैटिक हिंदी २ अदद
२—सच्चा इंगलिशटीचर हिन्दी ३ अदद
३—कताई बुनाई १ अदद
४—काष्ट-कला-पद्धति (लकड़ी की कारीगरी)

भवदीय
रामशरण
प्रधान अध्यापक

६—कपड़े के लिए।

आगरा।
१०-८-४७

श्री खैरातीलाल, बाबूलाल,
तिकोनिया बाज़ार, आगरा।

प्रिय महोदय;

जिन मखमली किनार की धोतियों को कल मैं आपकी दूकान पर पसन्द करके अलग रखवा आया था उन्हें उचित मूल्य लेकर पत्र-वाहक के हाथ भेज दीजिएगा। यदि मूल्य में कुछ दाम अधिक होंगे तो आपकी धोतियाँ लौटा दी जायँगी।

भवदीय
बिहारीराम शर्मा।

७—समाचार-पत्र का ग्राहक बनने के लिए।

मथुरा,
१२-८-४७

श्री व्यवस्थापक जी, 'अमर उजाला'
बेलनगंज आगरा।

प्रिय महोदय,

मैं आपके पत्र का ग्राहक बनना चाहता हूँ। अतएव वार्षिक चंदा ८॥) मनीआर्डर द्वारा भेज रहा हूँ। कृपया मेरा नाम ग्राहकों की सूची में लिख लीजियेगा और प्रत्येक अंक उचित समय पर भेजते रहिएगा।

भवदीय—
मदनलाल उपमन।

(८) चोरी की रिपोर्ट

सब-इन्सक्पेटर साहब,
थाना लोहामण्डी, आगरा।

श्री मान,

सेवा में निवेदन है कि आज रात को मेरे घर में चोरी होगई जिसमे लगभग ४००) का सामान चला गया। सामान का विवरण इस प्रकार है—दस-दस रुपये के दस नोट, पाँच-पाँच रुपये के बीस नोट, कड़े सोने के, तौल १॥ तोला, हँसली सोने की तौल २ तोला, छड़े चाँदी के, तौल ८० भर और १५) का ऊनी कम्बल। मुझे एक व्यक्ति पर सन्देह है जो डेढ़ माह से यहां आकर मेरे पड़ोस में रहता है और वह आज रात से ही घर पर नहीं है।

आशा है आप शीघ्र ही चोरी के सामान का पता लगाने की कृपा करेंगे।

निवेदक—
मथुराप्रसाद शर्मा

नयाबाँस १२ अगस्त १९४७

९—विज्ञापन

सर्व साधारण को विदित हो कि ता० १० मई सन १९४७ को कृष्णभवन रोशन मुहल्ला आगरे में दिन के तीन बजे से ५ बजे तक एक बड़ी सभा 'श्रीगाँधीस्मारक' बनवाने के लिए चन्दा एकत्रित करने के लिए होगी। श्रीमान सेठ अचलसिंहजी सभापति होंगे। सभा में सबका प्रवेश हर्ष पूर्वक किया जावेगा।

सेवतीलाल गुप्त
मन्त्री
नगर काँग्रेस कमेटी
आगरा।

ता० ६ मई सन १९४७

१०—डाक्टर का प्रमाण-पत्र

मैंने बनवारी दुबे अध्यापक का निरीक्षण किया। शीत ज्वर से पीड़ित है दो सप्ताह में स्वस्थ होने की संभावना है।

डाक्टर हेमचन्द्र चक्रवर्ती
३ जून १९४८ बी० ए०, एम० बी० बी० एस०

११—शोक प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य-विद्यालय, आगरा के अध्यापकों तथा विद्यार्थियों की यह सभा हिन्दी के उत्कृष्ट कवि, नाटककार, कहानी तथा उपन्यास लेखक बाबू जयशंकर प्रसाद की आसामयिक मृत्यु पर हार्दिक शोक प्रकट करती है। और ईश्वर से प्रार्थना करती है कि शोक संतप्त परिवार को यह असह्य दुःख सहने के लिए शक्ति तथा दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करे।

आगरा, २० नवम्बर १९३७ ई०

१२—बधाई-पत्र

आगरा,
१ मार्च १९४९।

प्रिय मूंगारामजी,
नमस्ते।

आपके पुत्र-रत्न उत्पन्न होने का शुभ समाचार जानकर मुझे अपार हर्ष प्राप्त हुआ है। इस लिये आपको बधाई है। परमात्मा नवजात शिशु को चिरंजीवी करे, और उसे माता-पिता सहित सदैव आरोग्य रखे।

आपका परम प्रिय,
गयाप्रसाद गुप्ता

१३—क्षमा-याचनापत्र

जाऊआ कटरा,
आगरा,
१०-७-५०

प्यारी बहिन रेशम,
नमस्ते।

आपके दो-तीन पत्र मुझे मिले। मैं उन दिनों ऐसे कार्य में फँसा था कि आगरे आना दुर्लभ हो गया। मैं जानता हूँ कि मेरे न पहुँचने से आपके कामों में बाधा हुई होगी। इसकी आपसे क्षमा माँगता हूँ और मैं ता० १५ जुलाई को अवश्य आरहा हूँ। अधिक क्या? शेष कुशल।

आपका प्यारा भैय्या,
बद्रीप्रसाद दुबे।

अभ्यास

निम्नलिखित पत्र लिखो—

(१) पुस्तकों का नमूना मँगाने को किसी प्रकाशक को।
(२) कोई समाचार छापने के लिए सम्पादक को।
(३) एक कल्पित पत्र अपने मित्र को जिसमें कल्पित सुख-दुःख का वर्णन हो।
(४) अपने बड़े भाई को किसी तीर्थ-यात्रा का वर्णन।
(५) अपने छोटे भाई के विवाह का निमन्त्रण-पत्र।
(६) तुम्हारे सहपाठी वार्षिक परीक्षा में फेल हो गये हैं। उनके लिये एक समवेदना पत्र लिखो।
(७) अपने एक मित्र को, जो एक उच्च पद पर नियुक्त हुए हैं, एक बधाई-पत्र मय पते के लिखो।
(८) किसी समाचार-पत्र में छपे हुए विज्ञापन के आधार पर अध्यापक के स्थान के लिए एक प्रार्थना-पत्र लिखो।

(९) अपनी बहिन को एक क्षमायाचना पत्र लिखो, मानो तुम एक बहुत आवश्यक कार्य से अपने भानजे के विवाह में शामिल न हो सके हो।

(१०) डिप्टी इन्सपेक्टर साहब को एक प्रार्थना-पत्र लिखो, कि तुम्हारे गाँव में एक प्राइमरी स्कूल खोल दिया जाय।

(११) नदद् अपनी भावज को एक पत्र लिखे, माना वह घर में अकेली है और उसके बच्चा होने वाला है, वह अपनी भावज को अपने जापे के समय बुलाना चाहती है। पत्र के साथ उसका पता भी लिखा जावे।

पाठ ८ (ख)

घटनाओं, चित्रों, दृश्यों और भवनादि का वर्णन

(१) घटनाओं का वर्णन लिखना।

घटनाओं का वर्णन लिखना पहले बताया जा चुका है कि किसी घटना के सम्बन्ध में लिखने के लिये पहले उसे आँखों के सामने लाने का प्रयत्न करो और जो बातें सामने आवें, उन पर संकेत लिखते जाओ, फिर प्रत्येक संकेत को क्रम देकर पैराग्राफ लिख डालो। यह ध्यान रहे कि घटना में जितनी बातें हों, उनको उसी क्रम से बयान किया जावे जिस क्रम से वे घटती हुई हों। देखी या सुनी हुई घटना का वर्णन ज्यों का त्यों लिखा जावे। उसमें अपनी तरफ से कुछ न मिलाया जाय।

१—सर्पों ने गाँव पागल कर दिया।

संकेत—कब, कहाँ, किस प्रकार—विवरण, सर्पों की कार्यवाही

तारीख २० मार्च सन् १९५० ई० के प्रातःकाल ८ बजे सेवल गांव के निकट बमरौली कटारा वाले दगड़े पर एक घटना घटी

गाँव मे २ खेत की दूरी पर दगड़े में पच्छिम की ओर एक पीपल का पुराना वृक्ष है । उसके नीचे एक साँपों का बमीठा है । वहां पर एक सपेरा आया और महुअर बजाने लगा । महुअर की मधुर ध्वनि को सुनकर बाँबी में से एक काला सर्प निकला और खेलने लगा । उसे सपेरे ने पकड़ लिया और उसे एक टोकरी के अन्दर बन्द करके झोले में धर कर अपने डेरा पर जो शमशाबाद मे थे चल दिया ।

जब सर्प को बांबी में से निकले देर हो गई और वह बाँबी के अन्दर न पहुँचा तो सर्पों ने जो उस बमीठे में थे जान लिया कि अभी हमारा भाई नहीं आया । या तो वह पकड़ा गया या किसी ने मार डाला । वे अपने एक बड़े-बूढ़े साँप की आज्ञा से उसे ढूँढ़ने के लिए कोई २००-२५० के लगभग साँप बांबी से बाहर निकल आए और वे सारे गांव मे फैल गए । उन्होंने चारों ओर से गाँव घेर लिया, रास्ते बन्द कर दिए । लोगो को खेत में सर्प ही सर्प दिखाई देते थे । बमीठे का साँप कहता था कि "मेरे बच्चे को छोड़ दो, नहीं तो सब गाँव को जला दूंगा ।" सर्प की बात सुनकर गांव वाले सपेरे की तलाश में चले । काफी घूमने के बाद वह सपेरा शमशाबाद मे मिल गया । उसने उस सर्प को बमीठे पर छोड़ दिया ।

तीसरे दिन सवेरा होते ही गाँव वालों ने कच्चा दूध नाँदों में भरवाकर बाँबी के पास रक्खा । दूध को देखकर उनका क्रोध शान्त हुआ और वे दूध पी-पी कर बमीठे मे घुस गये । तबसे फिर कोई साँप बाहर न निकला । सब गाँव आनन्द-पूर्वक पूर्व की भाँति रहने लगा ।

२—चित्र देखकर वर्णन लिखना

चित्रों द्वारा हाल लिखना पहले बताया जा चुका है । इनके हाल लिखने में कोई खास बात नहीं । पहले चित्र को ध्यानपूर्वक देखो, फिर उस चित्र के बारे में जो-जो प्रश्न तुम्हारे मन में उठें, उनके

उत्तर क्रमानुसार चित्र की सहायता से लिखते चले जाओ। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर पूर्ण वाक्य में हो और वह वाक्य सरल और शुद्ध हो।

दूसरे ढंग चित्रों द्वारा विवरण लिखने का यह है कि पहले चित्र को पहचानो फिर उस पर वर्णात्मक लेख लिखो। यह ढंग भी पहले बताया जा चुका है। अभ्यास के लिए नीचे देखो।

(आम)

१—आम का अत्यन्त उपयोगी वृक्ष, स्थान, आकार, प्रकार, भेद।
२—फूल-फल, उपयोगी लाभ।
३—आम के वृक्ष से उपदेश।

आम को लोग हिन्दुस्तान की मेवा के नाम से पुकारते हैं। भारत के लिए आम का वृक्ष परमेश्वर की एक विशिष्ट देन है। भारत की भूमि सुजला-सुफला और शस्य श्यामला के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें नाना प्रकार की अमृतमय बूटियाँ, वृक्ष, लतायें, फल और फूल उत्पन्न होते हैं।

आम का वृक्ष १५ से ४० फीट तक लम्बा होता है। यह मनुष्य जाति को अपनी सुन्दर शीतल छाया प्रदान करता है। इसकी शाखें छतनार होती हैं। आम दो प्रकार का होता है, एक कलमी दूसरा तुख्मी। क़लमी आम क़लम द्वारा तैयार किया जाता है। यह लम्बाई और फैलाव में छोटा होता है। इस फल को चूसकर नहीं बल्कि तराश

कर खाया जाता है। तुख्मी आम बीज से पैदा होता है, यह चूसकर खाया जाता है। स्वाद और स्थान के भेद से इनके अनेकों नाम है। भारत के अधिकांश प्रान्तों में पाया जाता है।

फागुन या चैत्र मे जब आम में बौर आता है तब बागों मे एक विलक्षण सुगन्ध प्रवाहित होने लगती है। पुष्पित आमकी शोभा को देखकर मन बाग-बाग हो जाता है। थोड़े दिनों के बाद गोल, लम्बे और नाना प्रकार के फलों से आम्र वृक्ष लद जाते है। वह शोभा अवर्णनीय होती है। कच्चे फलो से ही लोग आम का जायका लेना शुरू कर देते हैं। हरा पोदीना मिलाकर चटनी तैयार होने लगती है, गरीब, अमीर सब आम से अकृत्रिम प्रेम करते है। अचार, खटाई, पना आदि का जनक आम ही है।

जेष्ठ, आषाढ़ मे तो आमों की धूम मच जाती है। नित्य इच्छानुसार आम का रसपान करने पर भी अतृप्त से ही रहते हैं। गुठली के चाटने मे उन्हें बड़ा मजा आता है। घर-घर मे आम का साम्राज्य छाया रहता है। अब तो प्रतिवर्ष आम विलायत भी भेजा जाता है। यहां के लोगों ने इसकी खासी कदर की है। सफेद और बनारस के लंगड़े आम बहुत प्रसिद्ध है।

आम के वृक्ष से हम लोग बहुत कुछ शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। आम-महा उपकारी वृक्ष है। धूप, मेह और शीत को सहता हुआ हम सबको सुन्दर और शीतल तथा अमृत-फल सदा प्रदान किया करता है। शुष्क हो जाने पर उसकी लकड़ी से हम लोग बीसो काम लेते है। महात्मा तुलसीदास जी आम की प्रशसा मे कहते हैं कि :—

'तुलसी संत सुअंब तरु, फूलि फलै पर हेत।
इतते ये पाहन हनत, उतते वे फल देत॥

दृश्य का वर्णन लिखना

दृश्यों का वर्णन लिखना बताया जा चुका है। अभ्यास के लिए नीचे का उदाहरण पढ़िए :—

श्रावणी का मेला

आज रक्षाबन्धन का मेला है। स्त्री-पुरुषों के ठट्ठ यमुना तट के हाथी घाट की ओर उमड़े चले जा रहे हैं। इक्के और तांगों की खड़-खड़ाहट, मोटरों की भरभराहट तथा पैदलों की खटपट के आगे कोई किसी की बात नहीं सुन पाता। यह आगरा नगर का भुजरियों का मेला हर साल जुड़ता है।

जमुना किनारे की सड़क के दूकानदार हिन्दू और मुसलमान अपनी दूकानें लगाये अपना माल साफ कर रहे हैं। ग्राहक दूकानों पर टूट पड़ते हैं। सड़क पर नाना प्रकार के खोमचे वाले दृष्टिगोचर हो रहे हैं। हाथी घाट के निकट सड़क पर रहट गड़े हैं। रहट झुलाने वाले पैसे ले-ले कर झूलने वालों को गिन-गिन कर चक्कर झुलाते जाते हैं। खाली पलकियों के लिये उम्मीदवार डटे खड़े हैं। रहटों के पास ही झूलने के लिये छतरी गड़ी है जिनमें कुर्सियों और घोड़ों पर बैठ कर झूलते हैं। रहट और छतरियों के पास पुरुष-स्त्रियों की भीड़ का ठिकाना नहीं।

एक ओर बगीचियों में ढोला-आल्हा हो रही हैं। चारों ओर वीर रस के रसिक कोई बैठे, कोई खड़े राग में मस्त हो रहे हैं। दूसरी ओर भजनीक अपने भक्त-समाज को भजन सुना-सुना कर मुग्ध कर रहे हैं। यमुना का किनारा इन्द्र का अखाड़ा बन रहा है।

हाथी घाट से आगे क़िले के पास अखाड़ा है। यह मेले का मुख्य अङ्ग है। वहां दर्शकों की गणना नहीं हो सकती। अखाड़े के चारों ओर दर्शक ही दर्शक दृष्टि पड़ते हैं। पास खड़े हुए पेड़ भी दर्शकों से भर जाते हैं। अखाड़े में मल्ल-युद्ध होता है। दूर-दूर से सैकड़ों पहलवान जमा होते हैं।

हाथी घाट पर गृह देवियां अपनी-अपनी भुजरियां सिराने के हेतु एकत्र होती हैं। उनके सरल तथा प्रेम के गीत बड़े सुहावने लगते हैं। एक बगीचीमें झूले पड़े हैं। वहाँ स्त्रियाँ पेंग बढ़ाती हुई दिखाई देती हैं।

यह मेला भुजरियां सिराने का है। इस मेले में सबसे अधिक भीड़ बूरा खाने वाले लोगों की होती है। पुरुषों से स्त्रियाएँ अधिक आती हैं। क्योंकि यह मेला स्त्रियों ही का है। प्रत्येक स्त्री इसमें सम्मिलित होना आवश्यक समझती हैं। इसलिए इस मेले में काफी भीड़ हो जाती है।

भवनादि का वर्णन लिखना

भवनादि का लिखना पहले बताया जा चुका है। अभ्यासार्थ फिर एक उदाहरण देखिए:—

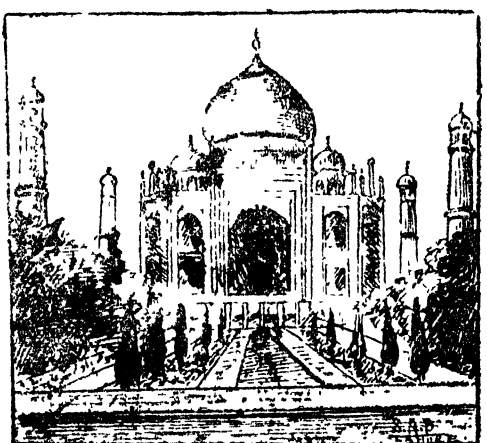

ताजमहल

आगरा एक बड़ा पुराना और प्रसिद्ध नगर है। यह यमुना नदी के दाहिने किनारे पर बसा हुआ है। आगरा फोर्ट नामक रेलवे स्टेशन से लगभग दो मील की दूरी पर से ही एक श्वेत वर्ण भवन दिखाई देता है। यही जग.दू विख्यात ताजमहल है। इसे मुग़ल सम्राट् शाह-जहाँ ने अपनी महिषी मुमताजमहल की यादगार में बनवाया था।

कहते हैं, शाहजहां मुमताजमहल से बड़ा प्रेम करते थे। एक दिन मुमताज ने किसी प्रसंग मे शाहजहां से पूछा कि आप जो मुझसे इतना प्रेम करते हैं, क्या मेरे मरने के बाद भी मुझे स्मरण करेंगे या नहीं? शाहजहाँ ने कहा कि केवल मैं ही स्मरण न करूँगा, किन्तु आपकी समाधि पर ऐसा विचित्र मंदिर बनवाऊँगा कि आपका नाम संसार भर मे प्रसिद्ध हो जायगा। और हुआ भी ऐसा ही। आजकल दुनियां भर मे कोई ऐसा भवन नहीं है जो ताजमहल की समता का हो।

यह लाल पत्थर और संगमर्मर का बना हुआ है। सन १६३१ मे शुरू होकर बीस हजार कारीगरों के बड़े परिश्रम से कहीं सत्रह वर्षों मे यह बन सका था। और इसे बनाने के लिए संसार भर के प्रसिद्ध देशों से भवन-निर्माण कारीगर बुलाए गए थे तथा भाँति-भाँति के पत्थर भी अनेक देशों से मँगवाये गये थे।

ताजमहल का फाटक बड़ा सुन्दर है। इसमे घुसते ही दर्शक मुग्ध सा हो जाता है। ज्यों-ज्यों वह भीतर घुसता है उसका विस्मय बढ़ता ही जाता है। ताजमहल के चारों ओर एक बहुत सुन्दर उद्यान है। सड़क के दोनों ओर बड़ी अच्छी तरह कटे-छटे वृक्ष खड़े हुए हैं। इनसे मानो यही प्रतीत होता है कि जंगी वेष मे सुसज्जित सिपाही चारों ओर इसकी रक्षा कर रहे हैं। आगे बढ़ने पर एक विस्तृत संगमर्मर का बना हुआ चबूतरा मिलता है जिसके चारों ओर चार मीनार खड़े हैं। मीनारों पर खड़े होकर देखोगे तो ताज और भी सुन्दर दीखेगा। चाँदनी रात मे भवन के भीतर की दस्तकारी और पच्चीकारी मनुष्य को लट्टू बना देती है। इसी सुन्दरता को देखने के लिए क्वार मास की पूर्णमासी को नगर के सहस्त्रों स्त्री-पुरुष 'मूनलाइट' देखने के लिए ताजमहल को जाते हैं।

जो समाधियाँ भवन में सामने जाते ही दृष्टिगोचर होती हैं वे वास्तव में असली नहीं हैं। उनके नीचे की छत पर शाहजहाँ और उसकी महिषी की समाधियाँ हैं। उन्हें देखते ही चित्त में शान्ति सी आ जाती है। शाहजहाँ ने यह मन्दिर बनवा कर भारतवर्ष का बड़ा उपकार किया है। इससे इसका मुख संसार भर में उज्ज्वल हो गया है कि किसी को भी उसके पूर्वजों के शिल्प-कौशल पर सन्देह नहीं रहा है।

ताजमहल की शोभा अवर्णनीय है। यह स्वयं संसार के भवनों का ताज है। इसने भारत के सिर पर वास्तव में ताज रख दिया है।

अभ्यास

नीचे लिखे विषयों पर वर्णन लिखो:—

१—(क) किसी के यहां चोरी हो जाना।

(ख) किसी पढ़ने वाले लड़के की टाँग टूट जाना।

२—(क) सन्ध्या का दृश्य। (ख) वर्षा का दृश्य। (ग) किसी मेले का दृश्य।

३—(क) पड़ोस के किसी मन्दिर का वर्णन। (ख) किसी बाग का वर्णन।

४—नीचे दिए हुए चित्रों को देखो और उनका संक्षेप में हाल लिखो।

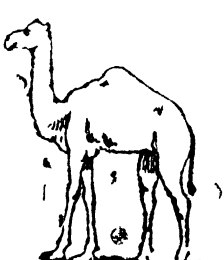

(क) ऊँट

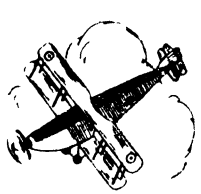

(ख) वायुयान

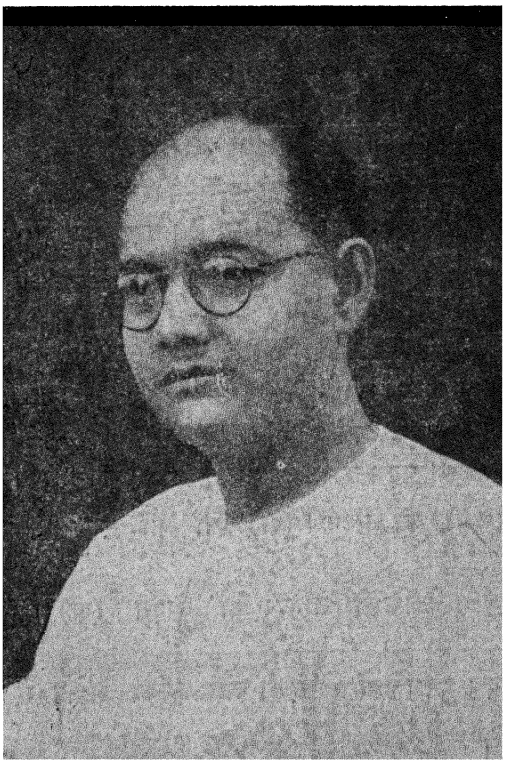

२--(ग) सुभाषचन्द्र बोस

पाठ ६ (ग)

वार्तालाप का लिखना

वार्तालाप लिखना पहले बताया जा चुका है। अभ्यास के लिए नीचे की बातचीत को पढ़ो।

तक़दीर और तदबीर

तक़दीर—संसार में मेरी समानता कोई नहीं कर सकता। मुझमें ऐसी विलक्षण शक्ति है कि क्षण भर में ही मैं जो चाहूँ वह करके दिखलादूँ। कहो तो रंक को महीपति और महीपति को रंक बनादूँ।

तदबीर—बहन, तुम्हारा कहना यथार्थ है। किन्तु यह गौरव तुमको मेरे ही आश्रय से मिला है। यदि मेरी सहायता तुम्हें न मिले तो तुम कुछ न कर सको।

तक़दीर—अच्छा, क्या तुम नहीं जानतीं कि मेरा नाम 'कर्मरेख' है? मैं ही मनुष्यों के सुख-दुःख की विधात्री भी हूँ। मन में तनिक सोचो तो कहाँ तुम? और कहाँ मैं? तुम मेरी होड़ किस तरह कर सकती हो?

तदबीर—मैं जानती हूँ कि तुम 'कर्म रेखा' हो और तुम्हारे गुणों का ज्ञान भी मुझे भली प्रकार है। किन्तु तुम्हारा आश्रय मैं ही हूँ। जगत में जो चहल-पहल तुम देखती हो, यह सब मेरी बदौलत है।

तक़दीर—मुझको सबने श्रेष्ठ माना है। सबकी बुराई-भलाई मेरे ही हाथ में है। संसार के सारे काम मेरे ही बनाने से बनते और बिगाड़ने से बिगड़ते हैं। मेरे बिगाड़े हुए काम को कोई नहीं सुधार सकता।

तदबीर—बोलो, इस पृथ्वी को जोतता, बोता कौन है? मैं अगर अन्न उत्पन्न न करूँ तो सब क्षुधा से पीड़ित होकर तड़प-तड़प कर मर जावें।

तक़दीर—अरे, तू क्या बक-बक करती है? यदि मैं चाहूँ तो आकाश के तारों को दम-भर में इधर से उधर कर सकती हूँ। अगर मैं किसी को मारना चाहूँ तो उसे बचाने की शक्ति किसी में नहीं है। मेरे रक्षित को कौन सता सकता है? यदि मैं बदल जाऊं तो सारा संसार ही बदल जावे। मेरे ही कारण लोग अपनों से शत्रुता रखने

लगते हैं। यदि संसार मे मेरा प्रबल प्रताप न फैला होता तो छोटे-बड़े सब बराबर हो जाते।

तदबीर—तुम अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनने की अभ्यासी हो। दूसरे के गुण देखने के लिए तो तुमने आँख ही बन्द करली हैं। देखो, यह तरह-तरह के स्वादिष्ट मेवे, सुस्वादु भोज्य-पदार्थ, मनमोहक रेशमी और जरी के वस्त्र किसकी बदौलत मिलते है? मेरी ही करामात से तो।

तक़दीर—अरे तू क्या बड़ी-बड़ी बातें बनाती है? संसार में ऐसा कौन है जो मुझको न माने। मेरे रहस्य को जानने की शक्ति मनुष्यों में नहीं है। मेरे सामने तेरी क्या बिसात है। देख, तुलसीदास जी ने मेरे लिए कहा है:—

"होइ है वही जो राम रचि राखा। को करि तर्क बढ़ावै साखा।"

तदबीर तू क्या डींग मारती है। सारे संसार की आशा मैं हूँ। लोहे का सोना बनाना ही मेरा काम है। मेरे ही द्वारा लोगों की किस्मत खुलती है। मैं ही किसी देश अथवा जाति को उन्नति के शिखर पर पहुँचाती हूँ। संसार की अद्भुत और अनुपम कारीगरी और आविष्कारों की जड़ मैं ही हूँ। मेरे लिए भी तो किसी कवि ने कहा है कि—

भाग्य भरोसे मन्द करि, करु पौरुष तजि रोष।

हाँ, यह बात मैं स्वीकार करती हूँ कि मेरे सब काम तेरे ही आश्रित हैं। तेरे बिना वे सब व्यर्थ हैं। जिस पर हम तुम दोनों मिल कर कृपा करें वही सबसे बड़ा मनुष्य होता है।

अभ्यास

वार्तालाप लिखो—(१) अक़्ल बड़ी है या भैंस।

(२) क़लम और तलवार का संवाद।

(३) विद्या बड़ी है या धन।

पाठ १० (घ)

स्वतन्त्र रचना-कहानी लिखना, मौखिक रचना

कहानी लिखना पहले बताया जा चुका है। रचना के लिए छोटी छोटी कहानी या गल्प लिखना अत्यन्त आवश्यक है। इनके लिखने से रचना बहुत जल्दी आ जाती है। इनसे कल्पना-शक्ति और स्मरण-शक्ति का विकास होता है। लिखना बोझ नहीं मालूम होता; इनसे लिखने की रुचि बनी रहती है। बच्चों को कहानियाँ सुनने और कहने का बड़ा चाव रहता है। वे उनको बड़े ध्यान से सुनते और सुनाते है।

कहानियाँ कुछ तो ऐतिहासिक होती हैं, और कुछ गढ़ी हुई। कहानी चाहे किसी प्रकार की हो उनसे अन्त में कोई न कोई शिक्षा अवश्य मिलनी चाहिए। यही कहानी का उद्देश्य है। प्रत्येक कहानी में कथानक और आधार होते हैं। कहानी घटनाओं का संक्षेप में वर्णन करना 'कथानक' कहलाता है। 'कथानक' बहुत थोड़ा होता है और 'आधार' उससे भी थोड़ा होता है। पहले कही जाने वाली बात को आधार मान कर कथानक की रचना की जाती है। फिर उसी के आधार पर कहानी रची जाती है। फिर कथानक को घटनाओं द्वारा बढ़ाया जाता है और फिर व्यक्तियों के वर्णनों का नामकरण किया जाता है। कहानी के व्यक्ति 'पात्र' कहलाते हैं। कथानक में आई हुई घटनाओं के लिए स्थान निश्चित करके उनका भी नाम-करण किया जाता है; जैसे:—

'एक ग़रीब किसान धनवान हो गया' (आधार)

कथानक—एक किसान बहुत ग़रीब था परन्तु वह खेती में बहुत परिश्रम करता था। एक वर्ष परमेश्वर की माया से उसके इतना

अनाज हुआ कि वह अपने गांव का सबसे बड़ा धनवान हो गया।

अब इसमें कल्पना-शक्ति तथा स्मरण-शक्ति द्वारा भिन्न-भिन्न घटनाओं को सोच कर और इस कथा में स्थान देकर इस कथानक को बढ़ाया जा सकता है। इस प्रकार कथा की स्थापना की जाती है तथा स्थान व पात्रों आदि के नामों का निश्चय करके कुल ढाँचा तैयार किया जा सकता है; जैसे—

ढाँचा—१—(स्थान) आगरे जिले में अछनेरे के पास दौलताबाद गाँव।

२—(पात्र) मुन्शीलाल।

३—(घटना) उसके पिता का मरते समय समझाना।

४—(स्थिति) खेती करके पेट पालना।

५—(घटना) एक साल खूब वर्षा का होना, खेतों को अच्छी तरह जोतना, कठिन परिश्रम से खेती की हिफाजत करना, गाँव में सबसे अधिक अनाज पैदा होना।

६—(पात्र) 'सूखा' के मरने पर।

७—(घटना) मुन्शी का एक धनवान के रूप में होना।

स्वतन्त्र कहानी रचना

आगरे में अछनेरे के पास ३ मील की दूरी पर नहर के किनारे दौलताबाद एक गाँव है। वहाँ पर एक सूखा नाम का ग़रीब किसान रहता था। जब वह मरने लगा तो उसने अपने पुत्र मुन्शी को समझा कर कहा—कि देखो, "परिश्रम से रोटी खाना चाहिए"। इतना कहते ही वह मर गया। इसके बाद मुन्शी ने अपनी खेती में खूब

परिश्रम किया। उस साल वर्षा भी खूब हुई। खेतों में काफी अनाज पैदा हुआ। उसके खेतों में परिश्रम करने का यह फल हुआ कि उसके सब गाँव वालों से अधिक अनाज पैदा हुआ। तब गांव वाले उससे कहने लगे "कि तू तो सूखा के मरते ही बड़ा धनवान हो गया"। तब मुंशी गाँव वालों से कहने लगा—"क्या तुम नहीं जानते कि परिश्रम करने का फल अच्छा ही होता है? मैं पहले एक गरीब किसान का बेटा था, अब अपने परिश्रम से मुझे परमात्मा ने धनवान कर दिया है।"

कहानी रचना के नियम

१—कहानी बच्चों को स्वयं पढ़ कर सुनावें या मौखिक कहें, अथवा छात्रों में से किसी से पढ़वावें।

२—सुनाई हुई कहानी पर प्रश्न करके कहानी का ढाँचा तैयार करें या करावें।

३—बच्चों को कहानी का ढाँचा देकर उसके सहारे कहानी लिखवावें।

(क) कहानियों पर संकेत बनवा कर ढाँचा तैयार कराना।:—

एक तालाब के किनारे कुछ लड़के खेल रहे थे। सहसा उनका ध्यान तालाब में रहने वाले मेंढ़कों की ओर गया। उनको चटपट एक खेल सूझा। वे उन पर पत्थर फेंकने लगे। कई मेंढकों के बहुत चोट आई। उनमें एक वृद्धा बुद्धिमान् मेंढक था। उसने बच्चों को समझाया कि इस निर्दयता के काम को बंद करो। क्योंकि जो काम तुम्हारे मन-बहलाव का साधन है वही हमारी मृत्यु का कारण है। दूसरों को दुःख पहुँचाना भले लड़कों का काम नहीं है। लड़कों ने उसका कहना मान लिया और पत्थर फेंकना बन्द कर दिया। इससे सब मेंढकों की जान बच गई।

उपर्युक्त कहानी पर प्रश्न करके संकेत निश्चय करना चाहिये जैसे:—

(प्र०) अध्यापक—तालाब के किनारे लड़के क्या कर रहे थे ?
(उ०) वहाँ विद्यार्थी कुछ खेल खेल रहे थे ।
(प्र०) अ० - लड़कों का ध्यान खेलते-खेलते कहाँ गया ?
(उ०) वि०—तालाब में रहने वाले मेंढकों पर गया ।
(प्र०) अ०—लड़को को फिर क्या सूझा ?
(उ०) वि०—उनको चटपट एक खेल सूझा ।
(प्र०) अ० —लड़के मेंढकों पर क्या करने लगे ?
(उ०) वि--वे उन पर पत्थर फेंकने लगे ।
(प्र०) अ०—पत्थरों से मेंढकों पर क्या हुआ ?
(उ०) वि०—कई मेढकों के बहुत चोट आई ।
(प्र०) अ०—उन मेंढकों में एक बूढ़ा मेंढक कैसा था ?
(उ०) वि० —उन मेंढकों में एक बूढ़ा बुद्धिमान मेंढक था ।
(प्र०) अ०—उसने लड़कों को क्या समझाया ?
(उ०) वि०—उसने कहा कि इस निर्दयता के काम को बन्द करो क्यों कि जो काम तुम्हारे मन बहलाव का साधन है वही हमारी मृत्यु का कारण है ।
(प्र०) अ०—फिर मेंढक ने लड़कों से क्या कहा ?
(उ०) वि० —देखो, दूसरों को दुःख पहुँचाना भले लड़कों का काम नहीं है ।
(प्र०) अ०—लड़कों ने उसके कहने पर क्या किया ?
(उ०) वि०—लड़कों ने उसका कहना मान लिया और पत्थर फेंकना बंद कर दिया ।
(प्र०) अ०—इसका परिणाम क्या हुआ ?
(उ०) वि०—सब मेंढकों की जान बच गई ।

प्रश्नों द्वारा निकले हुए सांकेतिक ढाँचे का क्रम

(१) तालाब के किनारे लड़के खेल रहे थे ।

(२) बच्चों का ध्यान मेढकों पर गया।
(३) मेढकों को देख कर बच्चे पत्थर मारने लगे।
(४) पत्थरों से बहुत से मेंढकों के चोट लगी।
(५) एक बूढ़े बुद्धिमान मेंढक ने लड़कों को समझाया।
(६) लड़कों को निर्दयता का काम करना।
(७) यह काम लड़कों के मन-बहलाव का होना।
(८) यही काम मेढकों की मृत्यु का होना।
(९) दूसरों को दुःख पहुंचाना अच्छा नहीं।
(१०) मेढक का कहना मान कर लड़कों का पत्थर फेंकना बंद कर देना।
(११) पत्थर न फेंकने से मेढकों की जान बचना।

नोटः—उपर्युक्त संकेतों के सहारे कहानी-रचना की जावें। प्रत्येक कहानी के इसी प्रकार संकेत निश्चय करके लिख लेने चाहिए। और संकेतों के द्वारा स्वतन्त्र भाषा मे कहानी को पूरा करना चाहिये। यदि कोई कहानी या उपदेश पद्य में है तो उसका आशय समझकर उस पर संकेत-वाक्य बना लेने चाहिये, फिर गद्य में उन्हें लिख लेना चाहिए।

(ख)

संकेतों के द्वारा कहानी-रचना

दिए हुए संकेतों के द्वारा कहानी लिखने का अभ्यास करना चाहिए। इससे रचना में बहुत सहायता मिलती है। स्मरण और कल्पना शक्ति की जाग्रति होती है।

उदाहरण १—एक आदमी की चोरी हो गई थी।
२—उसके नौकरों में से एक ने चोरी की थी।
३—उसने उनको बराबर लम्बाई की छड़ियां दीं।

४—चोर की छड़ी दो इंच बढ़ जायगी।
५—चोर ने दो इंच छड़ी काट डाली।
६—आदमी ने इस तरह चोर को पकड़ लिया।

कहानी-रचना

एक आदमी की चोरी हो गई थी। उसके नौकरों में से ही एक नौकर ने चोरी की थी। उसने चोरी का पता लगाने के लिए अपने नौकरों को बराबर लम्बाई की छड़ियाँ दीं। और कहा कि जो चोर होगा उसी की छड़ी दो इँच बढ़ जायगी। उसका जो नौकर चोर था इस डर से अपनी छड़ी को दो इंच काट डाला। अंत मे उसने सबकी छड़ियां देखीं तो बराबर पाईं परन्तु उस चोर नौकर की ही छड़ी दो इंच कम पाई। इस तरह उस आदमी ने अपनी बुद्धिमानी से चोर को पकड़ लिया।

(ग)

अधूरी कहानियों को पूरा करना

अधूरी कहानियों के पूरा करने में छात्रों को अपन मस्तिष्क से काम लेना पड़ता है। परन्तु साथ ही मनन करने और विचारने की शक्ति भी प्रबल होती है। यह आवश्यक नहीं है कि प्रत्येक विद्यार्थी कहानी को एक ही प्रकार से पूरा करे। उनको अपनी रुचि-अनुसार पूरा करना चाहिये जिससे उनकी रुचि वैचित्र्य का भी पता लग जायगा और साथ ही एक कथानक के अनेक रूपों का भी अनुभव हो जायगा।

उदाहरण:—एक कुत्ता मुँह में रोटी का एक टुकड़ा लिए हुए नदी में तैरता जाता था। अपनी परछाईं देखकर समझा कि दूसरा कुत्ता भी रोटी का टुकड़ा लिये हुए जा रहा है, जैसे'''।

पूर्ति की हुई कहानी

(१)

एक कुत्ता मुँह में रोटी का एक टुकड़ा लिये हुए नदी में तैरता जाता था अपनी परछाईं देख कर समझा कि दूसरा कुत्ता भी रोटी का टुकड़ा लिये हुए जारहा है। जैसे उसकी रोटी का टुकड़ा छीनने के लिये मुँह खोला, तो गाँठ का टुकड़ा भी चला गया। सच है—लालच में आदमी मारा जाता है।

(२)

एक कुत्ता.....जैसे ही उसके मुँह में पानी भर आया। उसने दूसरे कुत्ते के मुँह से रोटी का टुकड़ा छीनने के लिये जो अपना मुँह खोला तो उसके मुँह की रोटी का टुकड़ा नदी में गिर गया। नदी में कोई दूसरा कुत्ता न था। लालची कुत्ते ने अपना टुकड़ा भी खो दिया।

सच कहा है कि:—

"आधी तज सारी को धावै,
आधी रहे न सारी पावे।"

नोट:—उपर्युक्त अधूरी कहानी की पूर्ति अनेक प्रकार से हो सकती है। परन्तु भाव सबका एक ही आ जाता है। इससे रचना में छात्रों को बड़ी सहायता मिलती है। इसका अभ्यास भली प्रकार करना आवश्यक है।

(घ) पढ़ी हुई कहानियों को कहलवाना

नीचे लिखी हुई कहानी को ध्यान से पढ़ो।

गुरु-भक्त एकलव्य

एकलव्य हिरण्यधन्वा नामक भील का पुत्र था। इसका पिता भीलों का राजा था जो मध्यभारत में राज्य करता था। यह बड़ा शूरवीर तथा शस्त्र चलाने में बड़ा निपुण था। उसकी यह हार्दिक

इच्छा थी कि मेरा पुत्र एकलव्य भी मेरे ही समान योग्य हो। इस-लिये उसने द्रोणाचार्य का यश सुनकर एकलव्य को शस्त्र-विद्या की शिक्षा ग्रहण करने के लिये द्रोणाचार्य के पास हस्तिनापुर भेजा।

द्रोणाचार्य पाठशाला मे अपने शिष्यों की परीक्षा ले रहे थे। एकलव्य गुरूजी को साष्टांग दंडवत कर एक स्थान पर बैठ गया। परीक्षा में धनुर्विद्या में अर्जुन, गदायुद्ध में भीम तथा दुर्योधन, तलवार चलाने मे नकुल और अश्व-युद्ध मे युधिष्ठिर तथा सहदेव प्रथम रहे।

परीक्षा समाप्त होने पर एकलव्य ने अपना नाम तथा अपनी जाति बतलाकर आचार्य से प्रार्थना की कि वे उसको भी कौरवों और पाण्डवों के समान शिष्य समझकर धनुर्विद्या की शिक्षा प्रदान करने की कृपा करें; किन्तु आचार्य ने एकलव्य को नीच जाति का भील होने के कारण शिक्षा देना स्वीकार न किया।

निदान एकलव्य निराश हो, वन में पहुँच, द्रोणाचार्य की मिट्टी की मूर्ति बनाकर उसे गुरु-रूप से मस्तक नवा प्रतिदिन बाण-विद्या सीखने लगा। अभ्यास करते-करते वह भी धनुर्विद्या में पारंगत हो गया।

कुछ समय के बाद द्रोणाचार्य के शिष्य उसी वन में वनोपसेवन के लिये गये। उनको देखकर एक कुत्ता भौंकने लगा। एकलव्य ने कुत्ते का मुँह तीरों से तरकस के समान भर दिया। उसकी ऐसी निपुणता तथा हाथ की सफाई देख कर द्रोणाचार्य के शिष्यों ने विस्मित हो एकलव्य से पूछा—तुमने यह बाण-विद्या किससे सीखी? तुम कौन हो?

भील बालक ने उत्तर दिया—मेरा नाम एकलव्य है और मेरी जाति भील है। मैंने यह विद्या द्रोणाचार्य से सीखी है।

शिष्यों ने जाकर यह सब हाल गुरु द्रोणाचार्य से कहा। अर्जुन को उदास देख द्रोणाचार्य जी ने एकलव्य के पास पहुँच गुरु-दक्षिणा

में उसका दाहिना अंगूठा माँगा। शूर एकलव्य ने हँसते-हँसते दाहिना अँगूठा काटकर आचार्य के श्री-चरणों में चढ़ा दिया। शिष्य की इस अनूठी गुरु-भक्ति को देख महाराज द्रोणाचार्य गद्गद् होगये, और उन्होंने एकलव्य को छाती से लगा शुभ आशीर्वाद दिया—शिष्य, तुम सफल मनोरथ हो!

वीर भील के छोकरे एकलव्य! तुम्हारी गुरु-भक्ति और विद्या प्राप्त करने की अद्भुत लगन सर्वथा सराहनीय है। यदि भारत के बालक तुम्हारे ही समान विद्या-प्राप्त करने की हठ ठानलें तो हमारा देश बहुत शीघ्र उन्नति के शिखर पहुँच सकता है।

इस कहानी को अपनी भाषा में कहो। सुविधा के लिये नीचे दिये हुये संकेतों की सहायता लो:—

हिरण्यधन्वा का पुत्र एकलव्य—हिरण्यधन्वा का शूरवीर और शस्त्र चलाने मे दक्ष होना—उसकी इच्छा कि मेरे समान ही मेरा पुत्र योग्य हो—शस्त्र-विद्या सिखाने के लिए द्रोणाचार्य के पास हस्तिनापुर भेजना—वहाँ पहुँचकर एकलव्य का द्रोणाचार्य को प्रणाम करके एक जगह बैठ जाना—द्रोणाचार्य के शिष्यों की परीक्षा देखना—बाद में शस्त्र-विद्या सीखने की गुरुजी से प्रार्थना करना—नीच जाति होने के कारण द्रोणाचार्य का विद्या न सिखाना—एकलव्य का जंगल को जाना, वहाँ मिट्टी की मूर्ति द्रोणाचार्य की बना कर बाण-विद्या सीखना—कुछ समय अभ्यास करते-करते बाण-विद्या में चतुर होना—द्रोणाचार्य के शिष्यों का वन में जाना वहाँ कुत्ते का भौंकना—एकलव्य का तीरों से कुत्ते का मुँह ढाँकना—शिष्यों को कुत्ते का हाल देखकर अचम्भे में होना—एकलव्य से बाण-विद्या के बारे में पूछना—फिर हाल द्रोणाचार्य से कहना—गुरु का गुरु-दक्षिणा में दाहिना अँगूठा माँगना—एकलव्य का गुरु-दक्षिणा देना—गुरु का शुभ आशीर्वाद तथा गुरु-भक्ति की सराहना करना।

अभ्यास

(१) कहानी या गल्प रचना के लिये क्यों आवश्यक है? आधार और कथानक किसे कहते हैं?

(२) अपनी पाठ्य-पुस्तक में से किसी कहानी को उसके संकेत निश्चय करके अपनी स्वतंत्र भाषा में उस कहानी को लिखो।

(३) एक ऐसी कहानी लिखो जिसका यह सार निकले—"लालच बुरी बला है।"

(४) एक ऐसी कहानी बनाओ 'जिसमें झूठ बोलने की आदत हो और उसकी झूठ से कई बार लोग धोखा खा चुके हों। फिर एक दिन सच्ची बात मालूम होने पर सबने झूठी समझी हो इससे उसको हानि पहुँचती हो।'

(५) नीचे दिये हुये संकेतों से कहानी रचना करो:—

(क) एक दिन एक लोमड़ी बहुत प्यासी थी।

(ख) उसने एक बाग़ की दीवार पर लटकते हुए पके अँगूरों का गुच्छा देखा।

(ग) वह उनको तोड़ने के लिए बहुत उछली-कूदी।

(घ) पर उनको न खा सकी।

(ङ) अँगूर खट्टे हैं।

(६) नीचे दी हुई अधूरी कहानी को भिन्न-भिन्न प्रकार से पूरा करो:—

एक किसान के तीन लड़के थे। जब वह मरने लगा, तो उनको अपने पास बुलाकर कहा—"खेत में मैंने नौ सौ रुपये गाड़ रक्खे हैं। मेरे मरने के बाद तुम लोग उनको खोदकर आपस में बाँट लेना।" इसके बाद उसने उनको बिदा किया। कुछ दिनों के बाद किसान।

(७) एक आलसी मनुष्य की कहानी लिखो।

(८)निम्नलिखित विषयों पर कहानियाँ लिखोः—

(क) सन्तोषी सदा सुखी है।

(ख) 'दगा किसी का सगा नहीं है, ना मानो कोई कर देखो।'

(ग) 'बिना बिचारे जो करे, सो पाछे पछिताय।'

(घ) आपस की फूट बुरी होती है।

(ङ) साँच को आँच नहीं।

(९) क—अपनी पाठ्य-पुस्तक में पढ़ी हुई कहानियों को एक-एक करके सुनाओ। सहायता के लिए संकेत नियत कर लो।

ख—और कोई कहानी जो तुम जानते हो, सुनाओ।

पाठ ११—व्याख्या

व्याख्या में अर्थ का विस्तार होता है; यह ऐसा अर्थ है, जिसमें किसी गद्य-पद्य के अंशों की सब विशेषताओं को दिखाना पड़ता है। इसमें भीतरी भाव, रस-अलंकार और व्यञ्जना आदि पर प्रकाश होता है।

नीचे के उदाहरण को ध्यान से पढ़ो:—

इन्द्र को जीत कर खाँडव वन को भस्म करने वाला, राक्षसों को अकेला यमपुर पहुंचाने वाला साक्षात् सदा शिव को भी युद्ध में संतुष्ट करने वाला तीसरा पाण्डव अर्जुन मैं ही हूँ।

व्याख्या—अर्जुन ने कहा, कि मैंने ही इन्द्र को जीता है, मैंने ही खाण्डव वन को जला करके राख बना दिया है। राक्षसों का मैंने ही सर्वनाश किया है। मैं युद्ध करने मे इतना कुशल हूँ कि सदा शिव भी मेरी युद्ध-चातुरी देखकर मुग्ध और संतुष्ट हो जाते हैं। अतः अब मै अधिक परिचय न देकर केवल इतना ही कहना पर्याप्त समझता हूँ कि तीसरा पाण्डव अर्जुन मै ही हूँ।'

अभ्यास

१—निम्नलिखित गद्य-पद्य अंशों की व्याख्या करो:—

(क) स्वतन्त्रता का युद्ध यदि एक दफा आरम्भ हो जाता है, तो उसमें अन्त में विजय अवश्य होती है, यद्यपि उसमें बीच में शिथिलता भले ही आजावे ।

(ख) आगे चना गुरुमात दिये तो लिये तुम चाबि हमें नहि दीने ।
श्याम कही मुसकाय सुदामा सों चोरी की बानि में हौ जु प्रवीने।।
गाँठरी काँख में चापि रहे तुम खोलत नाहिं सुधारस भीने ।
पाछिली बानि अजौं न तजी तुम वैसे ही भाभी के तंदुल कीने ।।

२—अपनी पाठ्य-पुस्तक में से कठिन गद्य-पद्य के अंशों को छाँट कर व्याख्या लिखो ।

पाठ १२— (च)

अपनी कक्षा की मासिक पत्रिका के लिए लेख लिखना तथा साप्ताहिक समाचार-पत्र के लिए तैयारी ।

हमारी कक्षा की मासिक पत्रिका प्रत्येक महीने की २८ तारीख को निकलती है। आज माह की २० तारीख हो गई है। यह माह सितम्बर सन् १९५० है। आजकल वर्षा की अधिकता से नदियों में बाढ़ें आ रही हैं। आसाम में भूकम्प से सहस्त्रों नर-नारी व्याकुल हो रहे हैं। अतः हम प्रत्येक भारतीय बालक का कर्तव्य है कि अपने नगर या गाँव वाले भाइयों से अपील की जावे कि वे आसाम की भूकम्प पीड़ित जनता के लिए सहायता करें। इस सम्बन्ध के लेख को पहले साप्ताहिक पत्रिका में देना चाहिए। फिर उसे मासिक पत्रिका में देना चाहिए:—

आगरा नगर की जनता से —
आसाम की भूकम्प-पीड़ित जनता के लिए
सहायता की अपील

भाइयो !

आसाम प्रान्त में पिछले दिनों जो भूकम्प आया उसका हाल तो आप सबने सुना ही है। यह हमारे देश का दुर्भाग्य है कि हमारे हजारों भाई प्रकृति के कोप से अकाल ही काल के गाल में चले गये। लाखों लोग बिना घर के हो गये हैं और दाने-दाने को मोहताज हैं। लाखों बच्चों की भूखी चीत्कार सुन कर किसका हृदय ऐसा पत्थर होगा जो पिघल कर रो न उठे। हम लोग अपने खाने-पीने में इतने मस्त हैं कि हमें अपने ही भाइयों पर पड़ने वाली इस घोर विपत्ति में उनकी कोई सहायता करने का भी ध्यान नहीं होता। हम भूकम्प से मरने वालों को न बचा सके, किन्तु क्या हम भूख, सर्दी आदि से मरते हुए लाखों व्यक्तियों को उनकी सहायता करके नहीं बचा सकते ? आज हमें भोजन करना भी पाप है यदि हम अपने भूखे भाइयों को अपने भोजन में से कुछ न दे सके।

भारतवर्ष के कोने-कोने से पीड़ितों की सहायता के लिये दान दिया जा रहा है। क्या आगरे की जनता इस कार्य में चुपचाप बैठी रहेगी ? हमें पूर्ण विश्वास है कि आगरे की जनता खूब दिल खोल कर इस कार्य में सहायता देगी। हमारे साथी आपके घरों पर नगर सोसलिस्ट पार्टी की चन्दे की छपी कापियाँ लेकर पहुँचेंगे। इन्हें आप अवश्य कुछ धन दें ताकि यह धन एकत्र करके आसाम भेजा जा सके। प्रत्येक विद्यार्थी का यह कर्तव्य है कि वह अपने मुहल्ले या गाँव में लोगों को चन्दा देने के लिए कहे। चँदेवाले चाहे किसी पार्टी के उनके गाँव या मुहल्ले में आवे। उन सभी को वे भरसक सहायता दें तथा उनके कार्य में हाथ बटाएँ।

निवेदक—
केदारनाथ शर्मा
कक्षा ८

सदस्य, आसाम भूकम्प-पीड़ित सहायक कमेटी आगरा।

सूचना--कक्षा की मासिक पत्रिका तथा साप्ताहिक पत्रिका के लिए लेख ऐसे लिखने चाहिए जो बालकों को शिक्षा-प्रद हों और वे समय के अनुसार हों अथवा ऐसे हों जो उनके भावी जीवन में साथी हों।

अभ्यास

१—नीचे लिखे विषयों पर कक्षा की मासिक पत्रिका तथा साप्ताहिक पत्रिका के लिए लेख लिखो:...

(क) बेसिक शिक्षा के गुण तथा दोष। (ख) भावी चुनावों के लिए प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य कि वे अपनी अमूल्य वोट तपे-तपाए व्यक्ति को दें। (ग) काँग्रेस काल की शिक्षा स्कूलों के लिए अच्छी है या ब्रिटिश काल की थी।

पाठ १३-(छ) श्रुति लेख और सुलेख लिखना

श्रुति लेख और सुलेख का लिखना तुम पिछली कक्षाओं में सीख चुके हो। यहाँ केवल अभ्यास के लिए वे शब्द दिए जाते हैं जिनके लिखने में विद्यार्थी बहुधा भूलें करते हैं और जो उनके लिखने में काम आते हैं।

श्रुति लेख इम्ला लिखने तथा सुलेख देखकर खुशखत शुद्ध लिखने को कहते हैं।

संस्कृत

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
अज्ञान	अजान	नासिका	नाक
गृह	घर	स्वपन	सपना
अनार्य	अनाड़ी	लौह	लोह
भ्राता	भाई	कपाट	किवाड़
कपोत	कबूतर	अग्नि	आग
अश्रु	आँसू	कथन	कहन

कोकिल	कोयल	हास्य	हँसी
बधू	बहू	रुक्ष	रूखा
घृत	घी	नृत्य	नाच
मस्तक	माथा	हस्त	हाथ
कुम्भकार	कुम्हार	सूत्र	सूत
कुठार	कुल्हाड़ी	स्तन	थन

सूचना—इन शब्दों के रूप हिन्दी मे आते है।

संस्कृत के कुछ ऐसे तद्भित शब्द जिनके तत्सम हिन्दी में प्रायः नहीं आते:—

तत्सम	अपभ्रंश	तत्सम	अपभ्रंश
अहिफेन	अफीम	त्वरित	तुरन्त
आम्र	आम	चतुष्पादिका	चौकी
उष्ट्र	ऊँट	खर्पर	खपड़ा
घट्ट	घाट	उद्वर्तन	उबटन

अरबी और फारसी

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
जब्त	जप्त	तअरीफ	तारीफ
क़ानून	कानून	जमअबन्दी	जमाबन्दी
खत	खत	ज़बर्दस्त	जबरस्त
मुआफ	माफ	कमख़्वाब	कीमखाब
ज़ुल्म	जुलुम	मअमूली	मामूली

अंगरेजी

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
बाटिल	बोतल	माइल	मील
टिकेट	टिकट	वेस्टकोट	वास्कट
समन	सम्मन	टरपेण्टाइन	तारपीन

लौंग क्लाथ	लकलाठ	फ्लैनेल	फलालैन
स्कूल	इस्कूल	हाल्डर	हैंडिल
लैन्टर्न	लालटेन	लेम्प	लम्प

अन्य भाषाओं के प्रचलित शब्दों की सूची

संस्कृत–अनल, आत्मा, इन्द्रिय, उपकार, उष्ण, ऋषि, हिंसा, हास्य, हार, हस्ती, हंस, सूर्य, समुद्र, सिंह, साधु, सन्ध्या, सत्य, शान्ति, दिवस, एक, ऐहिक, कथा, कन्या, काल, दान, कोप, कौतुक क्रोध, गङ्गा, धर्म, तीर्थ, धान्य, बन्धन, विष्णु।

अरबी–ईमान, इलाक़ा, क़साई, क़ैद, नक़ल, मुश्किल, हाकिम आदि।

फ़ारसी–निशान, नालिश, रोज़गार, शिकार, चश्मा, पोशाक, वग़ैरह।

पोर्तुगीज़–इस्पात, किरानी, आलमारी, परेग, मेज़, कमीज़, इत्यादि।

बँगला–उपन्यास, गल्प आदि।

अँगरेज़ी–कोट, पतलून, सूट, स्लीपर, मास्टर, रिपोर्ट, एडिजन, टाइमटेबुल, डेस्क, थियेटर, फुट, नम्बर, टिन, स्लेट।

अभ्यास

१—उपर्युक्त सूचियों में जो शब्द आये हैं उनके अतिरिक्त और शब्द खोजकर अपनी नोट-बुक में शब्द-सूची बनाओ।

२—नीचे के गद्यांश का श्रुति लेख लिखो:—

यदि हमें जीवित रहना है। और सभ्यता की दौड़ में। अन्य जातियों की बराबरी करना है तो हमें। श्रमपूर्वक। बड़े उत्साह से। सत्य साहित्य की उन्नति। और प्राचीन साहित्य की रक्षा। करनी चाहिए। ..... इत्यादि।

३—सुलेख लिखो, और एक साथ बोले जाने वाले अंश अलग बोल कर श्रुतिलेख भी लिखो।

कर उपकार न रक्खे मन में बदले की अभिलाषा।
पुरस्कार की चाह न कुछ भी साधुवाद की आशा॥
और कहूँ क्या धन्यवाद सुन अतिशय मन सकुचाता।
ऐसा मित्र तभी मिलता है जब द्रवता है धाता॥

पाठ १४—(अ)

विद्यार्थियों द्वारा चुने हुए विषयों पर छोटी छोटी पुस्तकाएँ तैयार करना

विषय—बड़ों का आदर

बड़ों का आदर करना एक बहुत बड़ा गुण है। प्रत्येक मनुष्य में इस गुण का होना आवश्यक है। इससे मनुष्य नम्र और शीलवान बनते है। इस छोटी-सी पुस्तक मे इसी का वर्णन किया गया है। कि बड़ो का आदर क्यों करना चाहिए।

छोटों का कर्त्तव्य

छोटों को चाहिए कि जो पुरुष उनसे बड़े है, उनका आदर करें। जब वे मिलें तब उनको नम्रता-पूर्वक प्रणाम या नमस्कार करें और जब वे घर पर आवे, तब उनको उच्चासन देकर बिठावें। यदि छोटे बड़ों के घर जावे तो उचित स्थान पर शान्ति के साथ बैठ जावें। यदि कभी कोई बात करनी हो तो धीरे से आदर दिखाते हुए बोलें। अपने बड़ों से बात करते समय उनकी आँख मे आँख न मिलावे, किन्तु नीची गर्दन करके बात करें।

हमारे बड़े कौन हैं ?

बच्चों ! माता, पिता और गुरु तो बड़े हैं ही; परन्तु जो हमसे आयु; बल, विद्या और बुद्धि में अधिक है, वे भी हमारे बड़े हैं जिनमें विद्या और बुद्धि है, वे आयु में कम होने पर भी हमसे बड़े हैं

बड़ों के साथ व्यवहार

बड़ों के साथ नम्रता प्रकट करने से हमको हमेशा अपनी अवस्था का ज्ञान रहता है और हम कोई ऐसा काम नहीं कर बैठते, जिससे हमारी बदनामी हो। गुणवान लोगों का आदर करने से हममें उनके गुणों के लिए श्रद्धा होती है और हम उनका अनुकरण करने लगते है। अनुकरण करने से हम भी गुण-सम्पन्न हो जाते है और जिस तरह हम अपने बड़ो का आदर करते है, उसी तरह हमारे छोटे भी हमारा आदर करते है।

प्रत्येक मनुष्य का कर्त्तव्य

प्रत्येक मनुष्य चाहता है, कि लोग हमारा आदर और सम्मान करें; परन्तु इस आदर के प्राप्त करने का केवल यही एक साधन है, कि हम दूसरों का आदर करना सीखें। जो पुरुष अपने माता-पिता और गुरुजन का सम्मान करता है। उसके पुत्र भी उसकी देखा-देखी उसका सम्मान करते है। परन्तु जो अपने माँ-बाप से लड़ता है, उसकी आज्ञा भंग करता तथा उनसे कटुवचन कहता है, उसके पुत्र यह समझ लेते है कि माँ-बाप से ऐसा ही बर्ताव करना चाहिए और वैसा ही करते है। इसलिए प्रत्येक मनुष्य का कर्त्तव्य है कि अपने बड़ों का सम्मान करे।

गुरु के प्रति कर्त्तव्य

जो लड़का अपने गुरुका कहना नहीं मानता और उनका आदर नहीं करता, उससे गुरूजी सदा अप्रसन्न रहते है। ऐसे लड़के के हृदय मे गुरूजी की ओर से श्रद्धा-भक्ति नहीं होने पाती और उसे विद्या नहीं आती। जो लड़के नेक और चतुर होते हैं, वे सदैव गुरूजी की सेवा करते और उनकी आज्ञा का पालन करते हैं।

बड़ों का आदर क्यों करना चाहिए ?

बड़ों का सत्कार करने से मनुष्य की प्रशंसा होती है। जो देखता है, वही कहता है, कि देखो कैसा अच्छा और शीलवान लड़का है। जब सब लोग हमारी प्रशंसा करते हैं, तब हमको बड़ा आनन्द आता है और अच्छे काम करने को हमारा जी चाहता है। यदि हम अपने बड़ों का आदर नहीं करते तो सब लोग हमको बुरा कहते है। अच्छे पुरुषों को हमसे घृणा हो जाती है और समय पड़ने पर कोई हमारी सहायता नहीं करता।

आदर से लाभ

जो बड़े और गुणवान लोग है, वे हमको अनेक प्रकार से लाभ पहुँचाते रहते हैं। जो विद्वान है उनकी विद्या का किसी न किसी अंश मे हम पर प्रभाव पड़ता रहता है। इसलिए हमारा कर्त्तव्य है, कि इस ऋण को चुकाने के लिए हम उनका आदर करें। ऐसे पुरुषों का आदर करने से ये लोग हमको और अधिक लाभ पहुँचावेंगे।

सूचना—बच्चो ! दिए हुए विषय पर पुस्तक तैयार करने के लिए उस विषय पर संकेत नियत कर लो; फिर प्रत्येक संकेत पर पैराग्राफ लिख दो। सम्पूर्ण संकेत लिख जानेपर पुस्तक तैयार हो जायगी।

अभ्यास

नीचे लिखे विषयों पर छोटी छोटी पुस्तकाएँ तैयार करो :—

(क) स्वास्थ्य। (ख) विद्यार्थी जीवन। (ग) कृषि-कर्म। (घ) विद्यार्थियों का शिक्षक के प्रति कर्त्तव्य। (ङ) छात्रों पर सिनेमा का प्रभाव।

पाठ १५—(अ)

संक्षेप करना

नीचे के गद्यांश को ध्यान से देखो :—

'अपना उद्देश्य स्थिर करने को सफलता-शिखर की पहली सीढ़ी समझनी चाहिए। इसी पर मनुष्य का सारा भविष्य निर्भर है और इसलिये यह उसकी सफलता या विफलता का निर्णायक है। इस अवसर पर यह बात भूल न जाना चाहिये कि हमारा कथन केवल उन्हीं युवकों के लिये है जो अपने पुरुषार्थ से जीविका निर्वाह करना चाहते हों।

ऊपर के अवतरण का संक्षेप रूप पढ़िए :—

जिसे स्वयं अपनी जीविका कमानी है उसे चाहिये, वह अपने जीवन का उद्देश्य ऐसा बनाये जो उसकी परिस्थिति के अनुकूल हो। इसी के चुनाव पर उसकी सफलता निर्भर है।

सूचना—संक्षेप करने में विषयान्तर अथवा भावान्तर नहीं होना चाहिये और अनावश्यक उदाहरण तथा व्याख्या आदि को छोड़ देना चाहिए।

अभ्यास

१—अपनी पुस्तक में से अच्छे-अच्छे लेख चुनकर उनको संक्षेप में लिखो।

पाठ १६—(इ)

एकांकी नाटक

सेठ लाभचन्द (एकांकी नाटक)

दूसरा दृश्य

[सुनसान में सड़क के किनारे एक कोठी का बाहरी भाग बरामदा है। बरामदे में स्टिक स्टेण्ड रक्खा है। बेंत की कुछ कुर्सियां रक्खी हैं। एक तरफ़ सड़क की ओर एक लम्बा बेंच रक्खा है। बरामदे के दोनों ओर के दो दरवाजों में कुछ गमले रक्खे हैं। बाहर

दालान में एक बेंत की कुर्सी पर सेठ बैठा है। पास ही एक आदमी भी है, जिसके सिर पर खाकी पगड़ी है, शरीर पर फौज का नीलाम में खरीदा हुआ एक कोट और वैसा ही खाकी पाजामा है। आदमी अन्यमनस्कता है। सेठ पहले तो कुछ सोचता दिखाई देता है। फिर कुछ घबराकर उठता-सा है। जैसे ही वह उठने लगता है वैसे वह आदमी उसकी ओर देखने लगता है। सेठ उसकी इस भावभंगी को देखकर फिर बैठ जाता है।]

सेठ—(ऊबकर) अब मैं कब तक बैठा रहूँ? दो घंटे होने आये। कोई भीतर से आता ही नहीं है। क्या हुआ? साहब को बड़ी देर हो गई। थोड़ी देर पहले एक सिपाही इधर आया था, फिर मुझे देखकर अन्दर चला गया। इधर मैंने बड़ी भूल की। महादीन को पचास दे देता तो उसकी औरत सायत बच जाती। बड़ा बुरा किया। पचास की ही तो बात थी। पाँच सौ का तो खरा माल है। तीन सौ ही तो दिये हैं। लाभचन्द्र! तूने बुरा किया। पर मैं भी कैसा पागल हूँ व्यापार तो व्यापार ही है। इस तरह दया दिखाई जाय तो घर ही न लुट जाय। दया और व्यापार की तो दुश्मनी है। नसीमबक्स के कड़े तो अब हमारे हो चुके। वह अब क्या ले सके है। अब उसके आने पर भी कुछ नहीं हो सके हैं। यह भी अच्छा ही हुआ जो मैं यहाँ आ गया। शाम तो हुई समझो। आज शाम तक ही तो·····आज की तारीख आखिरी है। अच्छा हुआ। लोग कहते हैं, ईश्वर जो करे है, अच्छा ही करे है। मुनीम तो भला देगा भी क्या। और वह दे ही कैसे सके है। (जेब टटोल कर) चाबियों का गुच्छा तो मेरे पास है। पर बहुत देर होने आ रही है। कोई आवे क्यों नहीं है। साब पूछेगा तो कह दूँगा, साब, मैं क्या जानूँ। मुझे क्या मालूम कि चोरी का माल

है। न होगा तो दो-चार जुरमाना हो जायगा। पर अभी कोइ आया क्यो नहीं। अगर मै यहाँ से उठकर चला जाऊँ तो मेरा कोइ क्या करे। (उस आदमी की ओर देखकर) यह अजीब आदमी है। ज़रा भी तो नहीं बोलें है। अरे भले मानुस, इतनी चुप्पी किस काम की। ठीक तो है। मै ही कौन इससे बोलूँ हूँ। कोई आवे क्यों नहीं है, क्या करूँ। ज़ोर से बोल भी तो नहीं सकता। साब ही निकल आवे तो। पर अब तो बहुत देर हो रही है। ये लोग मुझे थाने ही क्यों नहीं ले गये ? कोई भीतर से निकले ही नहीं है। (सामने दरवाज़े की ओर देखकर) वह पर्दा तो हिला, सायत कोई आ रिहा है, आया, तैयार होकर बैठ जाऊँ। कहूँगा साब, मेरा इसमें क्या कसूर है, मैंने कोई चोरी थोड़े ही की है। अरे यह क्या, यह तो बिल्ली है। साहब की बिल्ली है। नहीं साहब की तो हो नहीं सकती। अरे भाई सुनते हो !

आदमी—(देखकर भी चुप बैठा रहता और उसकी ओर घूरता है)

सेठ—देखो, सुनो। साब कब आवेंगे ?

आदमी—(चुप)

सेठ—(क्रोध मे आकर) तुम बहरे हो क्या ?

आदमी—(अपने कान की तरफ़ इशारा करता है, मानो सुन नहीं सका)

अ.....अ.....अ

सेठ—(घबराकर एक दम उठता है ज़ोर से) साब कब आवेगा ? थानेदार कहाँ गया ?

आदमी—अ.....अ.....अ.....(हाथ से मना करता है। फिर कान को हाथ लगाकर) अ...अ...ब...ब...।

सेट—(बेचैन होकर) क्या कहता है ? कुछ समझ में नहीं आता। पागल है। गूँगा है, बेहरा है। सुपरेण्टेण्डेण्ट साब ! ओ सुपरेण्टेण्डेण्ट साब ! अरे थानेदार साब ! (एक दम भीतर जाने लगता है इसी बीच मे एक तरफ से एक आदमी हाथ मे खुरपा लिये आता है)

आगन्तुक—क्या है ? काहे चिल्लावत हो ?

सेठ—साब भीतर से कब आवेंगे ?

आगन्तुक—कौन साहब ?

सेट—सुपरेण्टेण्डेण्ट साब ! थानेदार साब और दो सिपाही जो मुझे यहाँ लाये है।

आगन्तुक—यहाँ कहाँ है सुपन्डुण्ट साहब ? यह तो खाली कोठी है।

सेठ—हाय, मै लुट गया ! वह थानेदार कहां है, सिपाही कहाँ है।

आगन्तुक—हमका जानी ? हम तो बाहर गये रहन, अब ही आये हैं।

सेठ—यह कौन है ? क्या यह सिपाही नहीं है उनका ?

आगन्तुक—अरे जे तो हमार भाई है, बहिरा है, सुन नाहीं सकत है। का बताई माली का काम ससुर बड़ा बुरा, दिन-रात पित्ता मारि कै काम करो और फिर भी कछु मिलत नाहीं। तूका चाहत हे हो।

सेठ—क्या यह सुपरेण्टेण्डेण्ट साहब की कोठी नहीं है ?

आगन्तुक—नाहीं। काहे ?

सेठ—हाय मैं लुट गया, सात हजार घर का और कड़े भी ! (एक दम दौड़ कर भीतर की ओर भाग जाता है)

आगन्तुक—(इशारे से) वो है जे !

आदमी—(हाथ से संकेत करता है और दो रुपये दिखाता है)

आगन्तुक—कहाँ से आये ?

आदमी—(उन पहले आदमियों की ओर संकेत करता है कि वे गये हैं, और सेठ की ओर इशारा करता है कि इसे रोके रहना। फिर इशारा करता है कि उस सेठ को क्यों जाने दिया ?)

सेठ—बाहर आकर (घबराहट से) सुपरेण्टेण्डेन्ट । थानेदार। हाय ! मैं लुट गया। हाय ! मालूम होता है, वे दोनों आदमी सिपाही, थानेदार सब एक ही थे। (एक दम कुर्सी पर गिर जाता है, पर्दा गिरता है।)

सूचना—एकांकी नाटक में एक अंक ही होता है। उसमें समय भी होता है। पात्रों की बातचीत संक्षेप में होती है। बातचीत ऐसे ढंग से की जाती है कि वह घटना को चरम सीमा तक पहुँचा दे।

अभ्यास

१—अपनी पाठ्य-पुस्तक में से एकांकी नाटक का पाठ छाँटकर पहले पढ़ो फिर उसको लिखो।

२—'पृथ्वीराज की आँख' पर एक एकांकी नाटक लिखो।

———

तीसरा प्रकाश

पाठ—१७

३—पढ़ना—(अ) हिन्दी के विख्यात कवियों और लेखकों की रचनाओं के उद्धृत गद्य एवं पद्य खण्ड।

सूचना—उपर्युक्त विषय के लिए अपनी पाठ्य-पुस्तक में से विख्यात कवियों तथा लेखकों की रचनाओं को पढ़ना चाहिये जो कि सरकार शि० वि० से स्वीकृत हैं। अथवा अन्य पुस्तकों से इसका अभ्यास करना चाहिये। यह पुस्तक रचना-व्याकरण की है। इन बातों पर प्रकाश नहीं डाला जाता। यह बातें पाठ्य-पुस्तक से सम्बन्ध रखती हैं। इसके अन्तर्गत अनुवाद का विषय आता है। अतः अनुवाद के अभ्यास के लिये कुछ उदाहरण दिए जाते हैं:—

अनुवाद करना

किसी एक क्लिष्ट भाषा में कही हुई बात को दूसरी सरल भाषा में उस बात को कह देना 'अनुवाद' कहलाता है। लेकिन यहाँ तात्पर्य गद्य या पद्य के अर्थ से है। जैसा कि परीक्षा में प्रश्न पूछे जाते हैं।

उदाहरण १—जाचक कहा न मांगई, दाता कहा न देई।
गृह सुत सुन्दरि लोभ नाहिं, तन धन दे जस लेई॥

अर्थ—१ (प्रश्न) माँगने वाला क्या न माँगे और दाता कौन सी वस्तु न देवे।

उत्तर—माँगने वाला घर, बेटा और स्त्री न चाहे और देने वाला धन और शरीर तक देकर यश लेवे अर्थात् किसी वस्तु के लिए मना न करे।

अर्थ २—माँगने वाला क्या नहीं माँगता और दाता कौन सी वस्तु नहीं देता। दाता घर, बेटा और स्त्री का भी लोभ नहीं करता, बल्कि धन और शरीर तक देकर यश लेता है। अर्थात् किसी वस्तु के लिए मना नहीं करता।

उदा०२—सूर समर करनी करहिं, कहि न जनावहि आपु।
विद्यमान रन पाइ रिपु, कायर करहिं प्रलाप ॥

अर्थ—लक्ष्मण जी परशुराम जी से कहते है कि योद्धा लड़ाई में करतब (वीरता) करते है, परन्तु अपने आपको कह कर नहीं जनाते है। लड़ाई मे बैरी को सामने पाकर तो कायर लोग ही बकवाद करते हैं।

उदा० ३—आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द का आत्मिक बल भी ध्यान देने योग्य है। उनका आशय जैसा उच्च था वैसा ही उनका परिश्रम भी असाधारण था। विलक्षण विवाद पटुता और अद्भुत साहस के साथ उन्होंने उन बुराइयों का दिग्दर्शन कराया जो हिन्दू धर्म की शक्ति का अपहरण कर रही है। उन्होंने पूर्ण निर्भीकता और सचाई के साथ समाज की प्रचलित विलासप्रियता और भोगाडम्बर का विरोध किया।

ऊपर की गद्य का अर्थ सरल हिन्दी में रेखाङ्कित पदों की व्याख्या करते हुए लिखो :—

अर्थ—आर्यसमाज की स्थापना करने वाले 'स्वामी दयानन्द' की आत्मिक शक्ति (मानसिक बल) भी विचारने योग्य है। उनका भाव जैसा उच्च था उसी प्रकार उनका परिश्रम भी असामान्य (बढ़ा-चढ़ा) था। शास्त्रार्थ करने की अद्भुत चतुराई और अनोखी वीरता के साथ उन्होंने उन बुराइयों को संकेत मात्र से दिखलाया जो हिन्दू मत के बल को हर रही हैं। उन्होंने पूर्ण निडरता और सचाई के साथ उन भोग-विलासों और पाखण्डों को जो समाज मे फैले हुए थे दूर किया।

अभ्यास

१—नीचे लिखी पद्यों का अनुवाद करो:—

(क) अधिकार खोकर बैठ रहना यह महा दुष्कर्म है।

न्यायार्थ अपने बन्धु को भी दण्ड देना धर्म है ॥
इस तत्व पर ही कौरवों से पाण्डवों का रण हुआ।
जो भव्य भारत के कल्पान्त का कारण हुआ ॥

(ख) रहिमन अपने पेट सों, बहुत कह्यो समुझाय।
जो तू अनखाए रहै, तोसों को अनखाय ॥

(२)—नीचे की गद्य का अर्थ लिखोः—

(क) साम्राज्य लिप्सा और शक्ति प्रदर्शन के लिये इतिहास में कितने युद्ध किए गए? कितना रक्तपात हुआ? पर क्या अशोक के सिवाय संसार के संपूर्ण इतिहास मे कोई दूसरा सम्राट भी ऐसा है, जिसने इस तरह सच्ची विजय प्राप्त की हो और सारे संसार मे अपना धर्म राज्य स्थापित किया हो? जो बातें अव्यवहारिक और आदर्श मात्र समझी जाती हैं; उनको अशोक ने कार्य रूप मे परिणत करवाया। क्या इस विजय के द्वारा अशोक की राजनीतिक शक्ति किसी तरह कम हुई? बिलकुल नहीं, प्रत्युत राजनीतिक शक्ति के साथ अन्य बातें जुड़ जाने से उस की शक्ति और भी अधिक बढ़ गई।

(ख) भारतीय महिलाएं पर्दा-नशीन होती हैं। पर्दे से बाहर आना उनके लिये दोष समझा जाता है। लेकिन देवी नन्दरानी पति के तरुणावस्था मे पर्दे का वैसा ख्याल नहीं करती थी। लोगोंने उनकी निन्दा की—उसे कुलटा तक कह डाला। परन्तु उसने इनकी पर्वा नहीं की। उस अपमान की घूंट को भी उसने सहर्ष पी लिया। नन्दरानी का पति लक्ष्मी और सरस्वती दोनों का ही कृपा-पात्र था। घर का ज़मीदार और वकील था। उसे नन्दरानी देवी पर प्रगाढ़ प्रेम था। वह देवी के सद्गुणों पर मुग्ध था। और देवी, उसका क्या पूछना? वह तो उस पर सब प्रकार से निछावर थी।

(ग) सत्य सिद्धान्तों को कार्य में परिणत करने के लिये समय की परख तथा दीर्घ दृष्टि की अत्यन्त आवश्यकता है। ऐसे अवसर पर समझौते का उचित उपयोग होता है। सिद्धान्त के रूप में तो सभी धर्म यह घोषित करते हैं कि आकाश, पाताल एक क्यों न हो जायँ, मानव समाज को सत्य का आलिंगन किये रहना चाहिए परन्तु वास्तविक कर्मक्षेत्र कर्मयोगियों को भी हवा का रुख देखना पड़ता है। स्वार्थवश नहीं, कायरता से भी नहीं सत्य की अबाधित विजय के ही निमित्त समीपवर्ती शक्तियों और प्रवृत्तियों की अनुकूलता तथा प्रतिकूलता की ओर ध्यान देना पड़ता है। धर्मान्ध व्यक्ति इसलिये बुरा है कि वह अपने अमर्यादित उत्साह के कारण समय का ध्यान न रखकर कुछ का कुछ कर बैठता है और इस प्रकार अपने इष्ट को लाभ के स्थान हानि पहुँचाता है।

पाठ १८

१—पाठ्य पुस्तक में आने वाली अन्तर्कथाएँ

१—भस्मासुर

यह एक दैत्य था। इसने तप करके शिवजी से वर पाया था कि जिसके सर पर यह हाथ रख देगा वही भस्म हो जायगा। पीछे से यह पार्वती पर मोहित होकर शिवजी को ही जलाने पर उद्यत होगया, तब शिवजी भागेयह देख कर विष्णु ने बटु का रूप धर कर छल से इसी के सिर पर हाथ रखवा दिया जिसम वह स्वयं भस्म होगया। पहले इसका नाम वृकासुर था।

२—पिङ्गला [गणिका]

पिङ्गला नाम की एक वेश्या थी। एक दिन यह अनेक अनेक प्रकार के शृंगार किये बैठी थी कि कोई विषयी आवे तो धन हरण

करूं। परन्तु कोई पुरुष नहीं आया। तब खाट पर लेट कर विचार करने लगी कि जितना देर पुरुष की राह देखती थी उतनी देर यदि भगवान का स्मरण करती तो ससार बन्धन से छूट जाती। यह विचार कर बराबर भगवान का स्मरण करती रही और भगवान की कृपा से मोक्ष पाया।

३-राजा शिवि

यह बड़े दानी राजा थे, जब यह बात इन्द्र को ज्ञात हुई तब राजा की परीक्षा लेने के लिये धर्म को कबूतर और अग्नि को बाज बना कर भेजा। राजा यज्ञासन पर बैठे यज्ञ कर रहे थे। कबूतर उनकी गोद मे आकर गिरा, राजा ने शरण में आये की रक्षा की। बाज ने अपना आहार मांगा तब राजा ने कबूतर के बराबर अपना मांस काट कर देने का बचन दिया। धीरे धीरे राजा का सारा मांस चढ़ गया तब भी कबूतर के बराबर न हो सका। अन्त मे भगवान ने प्रसन्न होकर दर्शन दिये और बरदान दिया।

४-जटायू (गृद्धराज)

यह एक गिद्ध था जब रावण सीताजी को चुरा कर लंका ले जा रहा था, तब यह सीताजी के छुड़ाने के लिये रावण से लड़ा था.किंतु रावण ने तलवारसे इसके पर काट दिये और विवश करके पृथ्वी पर डाल दिया। जब रामचन्द्र जी सीता जी को खोजते खोजते जटायु तक पहुंचे तब सारी कथा सुनकर अपने धाम मे जाने की आज्ञा दी।

५-कामदेव या अनङ्ग

जब भगवान शिव अखण्ड तप कर रहे थे, जब कामदेवने मोहनी रूप धारण करके उनको काम के बश कर दिया और उनका तप खण्डित होगया, किन्तु जब शिवजी को चेत हुआ, तब कामदेव को भस्म कर दिया, किन्तु उसकी स्त्री रती की प्रार्थना पर उसे बरदान दे दिया कि तेरा पति अनङ्ग अर्थात बिना शरीर के होगा। तब से

कामदेव संसार में बिना शरीर के रहता है और अपना प्रभाव दिखाता रहता है। इसी कारण उसे अनङ्ग कहते हैं।

६--अहिल्या

गौतम ऋषि की स्त्री का नाम अहिल्या था। देवराज इन्द्र इनके रूप पर मोहित होकर भेष बदल कर इनके घर पहुँच गये। इन्द्र ने पहले मुर्गे की बोली बोलकर ऋषि जी को भोर होने के भ्रम में डाल दिया था और ऋषि जी गंगा स्नान को जा चुके थे। जब ऋषि लौटे तो अहिल्या ने देवराज को छिपा दिया, किन्तु ऋषि ने सब कुछ जान लिया, तब क्रोध में आकर अहिल्या को पत्थर होने का और इन्द्र को सौभग हो जाने का श्राप दे दिया, किन्तु बहुत कुछ प्रार्थना करने पर कह दियाकि जब श्रीरामचन्द्र जी सीता स्वयम्बर को जावेंगे तो उनको चरणधूल से तेरा उद्धार होगा। और इन्द्र से कह दिया कि तेरे सौभग कीजगह सहस्त्र नेत्र हो जावेंगे। तभीसे इन्द्र सहस्त्र नेत्र कहलाते हैं औरअहिल्या का उद्धार श्री रामचन्द्र जी ने जनकपुरी जाते समय मार्ग में पड़ी हुई शिला रूप में किया था।

२—कवि तथा लेखकों का परिचय

७—कबीर

कबीर का जन्म मगहर जिला बस्ती में हुआ। कब? इसका निश्चय नहीं। कोई संवत् १४५६ में मानते हैं और कोई संवत् १४९७ में। कबीर जाति के मुसलमान जुलाहे थे। उनके पिता का नाम नूर-द्दीन और माता का नाम नीमा कहा जाता है। ये बचपन में ही सपरिवार काशी चले आये। कुछ लोग इनका जन्म लहरतारा, काशी ही में मानते है। वहां साधुओं के सत्सँग में रहकर अपना सारा रहन सहन हिन्दुओं के ऐसा कर लिया। उनके हृदय में वैराग्य उत्पन्न हो गया, स्वामी रामानन्द

जी उस समय काशी में थे। कबीर ने उन्हें अपना गुरू बनाया। इन्होंने सूफियों का भी संग किया। कबीर ने अपना अलग पंथ चलाया। जो कबीर पंथ के नाम से प्रसिद्ध है। कबीर की शिक्षायें बीजक ग्रंथ में संग्रहीत है जिसमें तीन प्रधान खंड हैं—साखी, सबद और रमैड़ो। हिन्दू-मुसलमान दोनों ने ही इनकी शिक्षायें ग्रहण की हैं। कहा जाता है कि जीवन के अन्तिम समय में ये काशी से महगर चले गये और वहीं सं० १५७५ में इनकी मृत्यु हो गई।

२—सूरदास

सूरदास का जन्म संवत १५४० के लगभग मथुरा और आगरे के बीच रुनकता गाँव में हुआ था। लोगों का कहना है कि ये चन्द्र बरदाई के वंशज थे। इनके पिता का नाम हरीचन्द था। इनके छः भाई मुसलमानों के साथ युद्ध मे मारे गये। ये बहुत दिनो तक निराश्रय फिरते रहे। एक बार यह (अन्धे होने के कारण) कुए में गिर गये और छः दिन तक उसी मे पड़े रहे। अन्त में कहा जाता है कि भगवान् कृष्ण ने उन्हें दर्शन देकर कुये से बाहर निकाला। उसी समय से ये कृष्ण के परम-भक्त हो गये। ये सवा लाख पदों के रचयिता प्रसिद्ध हैं, किन्तु अभी तक, मुश्किल से, इनके छः हजार पद मिलते है जो सूरसागर में संगृहीत है। गोसाईं विट्ठल नाथ जी ने इन्हें सबसे बड़े आठ कृष्ण भक्त कवियों में, जो अष्टछाप में गिने जाते हैं, सब से पहला स्थान दिया।

३—महाकवि भूषण

आपका जन्म सं० १७३८ में कानपुर जिले के टिकमापुर ग्राम में हुआ था। परन्तु कोई-कोई विद्वान् संवत् १६७० में होना बतलाते हैं। आप कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। इनके पिता का

नाम रत्नाकर त्रिपाठी था। चित्रकूटाधिपति रुद्रराम सोलंकी ने इन्हें 'भूषण' की उपाधि दी। तब से इनका यही नाम प्रसिद्ध हो गया और असली नाम का किसी को पता भी न रहा। इनके तीन भाई और थे जो तीनों ही कवि थे। मतिराम जी (इनके भाई) की गणना तो महाकवियों में है। भूषण जी का एक बार औरङ्गजेब के कहने पर अत्यन्त निर्भयता पूर्वक अपनी वीर रसमयी कविता में उसके अवगुण भरे दरबार में सुनाना भी प्रसिद्ध है। रौद्र, वीर और भयानक, ये तीनों रस जैसे इनके काव्यों में हैं वैसे अन्य कवियों की कविता में नहीं पाये जाते हैं। प्रथम छः मास तक महाराज छत्रसाल के यहाँ रहे। तदन्तर आप शिवराज के यहाँ चले गये। महाराज शिवराज ने इनके एक कवित्त पर ५ हाथी और २५०००) इनाम दिये आपके बनाये हुये शिवराज भूषण, भूषण हजारा, भूषण उल्लास और दूषण उल्लास यह चार ग्रंथ पाये जाते है। संवत् १७७२ में मृत्यु हुई।

४—महाकवि गङ्ग

आपका जन्म इटावा ज़िले के एक नारे गाँव में संवत् १५९५ में हुआ था। ये बड़े कवि थे। कहा जाता है कि यह अकबर के दरबारी कवि थे। इनके एक छन्द पर प्रसन्न होकर राजा बीरबल ने इनको १ लाख रुपया तथा महाकवि रहीम ने ३६ लाख रुपया इनाम दिये थे। हिन्दी साहित्य में इनका स्थान बहुत ऊंचा है। यह बड़े निर्भीक कवि थे। कहा जाता है कि सम्राट जहाँगीर ने इनकी किसी बात पर अप्रसन्न होकर इन्हें भरे दरबार में हाथी से मरवा दिया था।

५—लल्लूलाल जी

यह गुजराती थे। संवत् १८९२ में आगरे में उत्पन्न हुये

थे। यह महाराज वार्तिक के भाषा की बोल चाल में प्रथम आचार्य्य है। इनका बनाया हुआ प्रेम सागर ग्रन्थ इस बात का साक्षी है। और दोहे, चौपाई, इत्यादि सीधे-सीधे छन्दों के बनाने मे भी निपुण थे। 'सभा-विलास', 'माधवं-विलास', 'वार्तिक राजनीति' आदि इनके ग्रंथ बहुत प्रसिद्ध हैं।

६—केशवदास

आप जाति के सनाढ्य ब्राह्मण थे। संवत् १५२४ में उत्पन्न हुए थे। अकबर के समय में इनकी कविता का सिक्का बैठ चुका था। तब से अब तक किसी कवि ने ऐसी जटिल आशय की चक्करदार कविता नहीं की है। इनकी 'राम चन्द्रिका' नाम का ग्रंथ अधिक प्रसिद्ध है।

७—अब्दुल रहीम खानखाना उपनाम 'रहीम' अथवा 'रहिमन'

(जन्म संवत् १६१०-मृत्यु संवत् १६६६) संस्कृत अरबी, फ़ारसी और हिन्दी के विद्वान् तथा काव्य मर्मज्ञ थे। ये बड़े दानी थे और कवियों का बड़ा आदर करते थे। ये अकबर के समय के प्रधान सेनापति थे और जहाँगीर के समय में उसी पद पर थे। रहीम की रचनाएँ 'रहीम' रत्नावली' नामक संग्रह मे पढ़िये। पाठ्य पुस्तकों में उनके कुछ दोहे जरूर दिये जाते हैं। इनके दोहों की विशेषता यह है कि ऊपर के दो चरणों मे प्रायः कोई सिद्धान्त बतला कर शेष दो चरणों में दृष्टान्त द्वारा उसका पुष्टि-करण किया गया है। चूँकि यह अन्त मे जहाँगीर के विरुद्ध हो गये थे, इससे इन्हें कैद कर लिया गय, और इनकी जागीर छीन ली गई। परंतु पीछे क्षमा कर दिये गये, इन्होने गङ्ग कवि को एक पद पर ३६ लाख रुपया इनाम दिया थ, तुलसी-दास इनके मित्र थे।

८—मलिक मुहम्मद जायसी

मलिक मुहम्मद प्रसिद्ध सूफ़ी फ़क़ीर शेख मोहिउद्दीन के शिष्य थे। जायस में रहने के कारण ये जायसी कहलाये हैं। यह आँख के

काने और एक कान के बहरे थे। इन्होंने सम्वत १५६७ के लगभग शेरशाह के समय में अपना प्रसिद्ध ग्रंथ पद्मावत रचा। वेदांत के मत का विवेचन करते हुए इन्होंने एक ग्रन्थ अखरावट में लिखा है।

६—गोस्वामी तुलसीदास

गोसांई जी की शिष्य-परंपरा में उनका जन्म-संवत १५५४ माना जाता है। शिवसिंह सेंगर ने १५८३ में इनका जन्म होना लिखा है। ये राजापुर के पं० आत्माराम के पुत्र थे। इनकी माता का नाम हुलसी था। जिनकी मृत्यु गोसाईं जी के लड़कपन ही में हो गई थी। कुलक्षणी जानकर इनके पिता ने इन्हें त्याग दिया। तब नरहरदास जी ने इनका पोषण किया। इनका पहला नाम रामबोला था बाद में तुलसीदास पड़ गया। काशी में इन्होंने शेष सनातन जी के पास शिक्षा प्राप्त की। बड़े होने पर दीनबन्धु पाठक की लड़की रत्नावली से इनका विवाह हो गया। जिसे ये बहुत प्यार करते थे। कहा जाता है कि एक बार अपनी स्त्री के पीछे-पीछे सुसराल जा पहुँचे, वहाँ उसने उन्हें बहुत फटकारा और राम से प्रेम करने की बातें कहीं तभी से इन्हें वैराग्य हो गया। इन्होंने सारे भारत का भ्रमण किया, और राम चरितमानस आदि बनाकर अमर हो गये। इनकी मृत्यु काशी में संवत १६८० में हुई। इनकी मृत्यु के समय का एक दोहा प्रसिद्ध है।

संवत् सोलह सौ असी, असी गङ्ग के तीर।
श्रावण शुक्ला सप्तमी, तुलसी तजौ शरीर॥

१०—बिहारीलाल

बिहारीलाल का जन्म ग्वालियर के पास बसुआ गोविन्दपुर गाँव में सवत १६६० के लगभग माना जाता है। बचपन में ये बुन्देलखण्ड में रहे और जवानी में अपनी सुसराल मथुरा में। यह जयपुर के मिर्ज़ा राजा जयसिंह के आश्रम में रहते थे। इन्हीं के कहने पर

इन्होंने वे सात सौ के लगभग दोहे रचे जो इनकी सतसई में संगृहीत है। बिहारी-सतसई इतना गम्भीर ग्रंथ बना कि इस पर दर्जनों टीकायें हो चुकी हैं और नई-नई होती जा रही हैं। इनकी मृत्यु सं० १७२० के आस-पास मानी जाती है। यह शृङ्गार-रस के कवि माने जाते है।

११—पद्माकर भट्ट

पद्माकर मोहनलाल भट्ट के पुत्र थे। ये तैलंग ब्राह्मण थे। इनका जन्म सं० १८१० मे बाँदे में हुआ था। इनके पिता भी कवि थे। पुत्र में यह गुण कई गुना होकर आया। सं० १८४६ मे लगभग इन्होंने प्रसिद्ध योद्धा हिम्मत बहादुर (गुसाईं अनूपगिर) की प्रशंसा में हिम्मत बहादुर-विरुदावली बनाई। सं० १८५६ में सितारा के महाराज रघुनाथ राव के यहाँ भी गये थे, जहाँ इनका बड़ा सम्मान हुआ था। परन्तु अधिकतर ये जयपुर दरबार में रहे। महाराजा जगतसिंह के नाम पर इन्होने जगद्विनोद बनाया। कुछ दिनों ये उदयपुर, ग्वालियर और बूंदी में भी रहे थे। वृद्धावस्था मे ये बहुत रुग्ण होने के कारण कानपुर में गंगातट पर बस गये। वहीं इन्होने गंगालहरी बनाई। ८० वर्ष की अवस्था मे इनका शरीर-पात हुआ।

१२—नरोत्तमदास

शिवसिंह सरोज में नरोत्तमदास का जन्म सं० १६०२ में वर्त्तमान रहना कहा गया है। ये सीतापुर जिले के बाड़ी नामक कस्बे के निवासी थे। मिश्र बन्धुओं ने अनुमान किया है। ये कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। इनका सुदामा चरित्र बहुत सरस तथा हृदयग्राही है। सुदामा चरित्र के वर्णन बिल्कुल यथातथ्य और इसी कारण प्रभावशाली हैं। भाषा भी बहुत शुद्ध है।

१३—'हरिश्चन्द्र'

बाबू हरिश्चन्द्र का जन्म सं० १९०७ के भाद्रपद की शुक्ला सप्तमी को काशी में हुआ था। ये प्रसिद्ध सेठ अमीचन्द के वंशज थे। इनके पिता का नाम गोपालचन्द्र था जो अच्छे कवि और चालीस ग्रन्थों के रचियता थे। पिता के गुण पुत्र मे आये। छः वर्ष की अवस्था ही में ये कविता करने लगे थे। इन्होंने पेनी रीडिंग रूम तदीय समाज आदि कई संस्थाओं की स्थापना की थी और कवि-वचन सुधा, हरिश्चन्द्र चन्द्रिका और हरिश्चन्द्र-मेगजीन नामक पत्र पत्रिकायें निकाली थीं। सं० १९४७ में ये आनरेरी मजिस्ट्रेट बनाये गये। इन्होंने बहुतेरे नाटक लिखे और अनुवाद किये। इनकी कविता और उपाख्यान तथा निबन्धों की कुछ गिनती नहीं।

१४—श्रीधर पाठक

पं० श्रीधर पाठक सारस्वत ब्राह्मण थे। सवत् १९४६ में इनका जन्म आगरा जिले के जोंधरी गाँव मे हुआ था। पहले इन्होंने घर पर संस्कृत पढ़ी। एन्ट्रेन्स तक की इन्होंने स्कूल शिक्षा प्राप्त की। संवत् १९३७ में इन्होंने सरकारी नौकरी करली। वहाँ इन्होंने बड़ी तत्परता दिखाई। अन्त में ये युक्त प्रान्तीय सरकार के दफ्तर मे सुपरिटेंडेंट हो गये। सरकार मे इनकी बड़ी प्रशंसा हुई. बाद में पेशन मिलने लगी। इन्होंने खड़ी बोली और ब्रजभाषा दोनों मे कविता की है। इनकी ब्रजभाषा की कवितायें अधिक सरस और मधुर हैं। ये प्राकृतिक सौंदर्य के बड़े ही उपासक थे। इन्होंने भारत की प्रशंसा में भी कविता की है जिसका संग्रह भारत गीत नाम से प्रकाशित है। इनके अनुवाद इनकी स्वतन्त्र रचनाओं से भी सुन्दर हैं। ऊजड़ ग्राम, श्राँत पथिक और एकांत वासी योगी गोल्डस्मिथ के ग्रन्थों के अनुवाद हैं। कालिदास के ऋतु सँहार का भी अनुवाद किया है जो बहुत ही मधुर है। सितम्बर सन १९२८ में इनकी मृत्यु हुई।

१५—अयोध्यासिंह उपाध्याय "हरिऔध"

पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय अगस्त्य गोत्री, शुक्ल यजुर्वेदी मनाढ्य ब्राह्मण थे। इनका जन्म सं० १९२२ में आजमगढ़ जिले के कस्बा निजामाबाद में हुआ। इन्होंने सं० १९३६ में वर्नाक्यूलर मिडिल और सं० १९४४ में नार्मल की परीक्षा पास की। घर पर इनको संस्कृत और फारसी की भी शिक्षा मिली थी। पहले ये अपने ही कस्बे के तहसीली स्कूल में अध्यापक हुये। बाद मे कानूनगोई पास करने पर कानूनगो बनाये गये। बाद में काशी विश्व विद्यालय में अवैतनिक अध्यापन करने लगे थे। कविता क्षेत्र में आपका स्थान बहुत ऊँचा है। प्रिय प्रवास एक अति सुन्दर महाकाव्य है जिसमें प्रेम की मधुर व्यंजना के साथ-साथ समाज-सेवा का उच्चादर्श दिखाया गया है। प्रिय प्रवास में मधुर और कोमल संस्कृति पदावली का उद्योग किया गया है। उपाध्याय जी ने बोलचाल की भाषा मे भी बड़ी चुटीली उक्तियां कही हैं। इनकी पिछली रचनाओं का "चोखे चौपदे" "चुभते चौपदे" और "बोल चाल" में संग्रह किया गया है। भारी खेद है कि इनकी मृत्यु होगई। इसी प्रकार इनकी गद्य लेखन शैली भी उत्तम है।

१६—जगन्नाथदास 'रत्नाकर'

इनका जन्म सं० १९२३ में काशी में हुआ था। इनके पिता बाबू पुरुषोत्तमदास अग्रवाल थे। इनके पूर्वज मुग़ल बादशाहों के यहाँ प्रतिष्ठित पदों पर रहे थे। अतएव इनके घर में फ़ारसी का बड़ा मान था। इन्होंने बी० ए० तक शिक्षा पाई थी। पहले ये फ़ारसी में कविता करते थे किन्तु बाद में हिन्दी में करने लगे। इनकी कविता प्राचीन पद्धति पर चलती हुई अत्यन्त ओजपूर्ण होती थी। ये ब्रजभाषा के उच्चकोटि के कवि थे। इनके "हरिश्चन्द्र" "गङ्गावतरण" और "उद्धवशतक" काव्य बहुत प्रसिद्ध हैं। गङ्गावतरण पर

इन्हें हिन्दुस्तानी एकेडेमी से ५००) का पुरस्कार मिला था। ये अयोध्या नरेश महाराज सर प्रताप नारायणसिंह के प्राइवेट सेक्रेटरी थे। उनकी मृत्यु पर महारानी साहिबा ने अपना प्राइवेट सेक्रेटरी बनाया था। ये जीवन भर उसी पद पर रहे। जून सन १९३२ में हरद्वार में उनका देहान्त होगया।

१७—जयशंकर "प्रसाद"

बाबू जयशंकर "प्रसाद" कान्यकुब्ज वैश्य थे। इनका जन्म सं० १९४६ में काशी में हुआ। इन्होंने घर पर संस्कृत, फ़ारसी, हिन्दी और अंग्रेजी की शिक्षा पाई थी। इन्होंने बंगला का भी अच्छा अध्ययन किया था। इनकी रचना तथा शैली पर बंगला स्पष्ट दिखाई देती है। इनकी सर्वतोमुखी प्रतिभा ने साहित्य का कोई अंग अछूता नहीं छोड़ा। इन्होंने अजातशत्रु, स्कन्दगुप्त, जनमेजय का नाग यज्ञ आदि आधे दर्जन से भी अधिक नाटक लिखे हैं। कवितायें भी इनकी बहुत हैं। इनकी कहानियाँ भी बड़ी रसीली होती हैं। समाज के विकृत स्वरूप का चित्रण ये बड़ी खूबी के साथ करते थे। खेद यह है कि इनकी मृत्यु हो जाने से साहित्य संसार में जो कमी हुई है वह कदाचित ही पूर्ण हो।

१८—मैथिलीशरण गुप्त

बाबू मैथिलीशरण गुप्त का जन्म रामचरण गुप्त के यहां सं० १९४३ में चिरगाँव-झाँसी में हुआ। ये शुद्ध खड़ी बोली में कविता करते हैं। व्याकरण के नियमों का विशेष ध्यान रखते हैं। इनकी कविताओं में उत्कट देश-प्रेम भरा रहता है। जो इस युग की विशेषता है। इसीलिये ये इस युग के प्रतिनिधि कवि कहे जाते हैं। "भारत भारती" इनकी सर्व-प्रिय रचना हुई है। पर उनका कवित्व उत्तरोत्तर प्रस्फुटित हो रहा है। इनके तिलोत्तमा और चन्द्रहास दो नाटक बड़े अच्छे हैं। इन्होंने बंगला पुस्तकों का भी अनुवाद किया है। साकेत और यशोधरा आदि इनके सर्वोत्तम ग्रन्थ हैं।

१९—श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान

आप हिन्दी की एक श्रेष्ठ कवियित्री हैं। आपकी कविता सरल, स्वाभाविक और मर्मस्पर्शिनी होती है। आपकी राष्ट्रीय कवितायें तो मानो आपके हृदयोद्गारों की सच्ची प्रतिमूर्ति है। आपकी 'झाँसी वाली रानी' की कविता बहुत प्रसिद्ध है। 'मुकुल' कविता संग्रह और 'बिखरे मोती' तथा 'उन्मादिनी' आपकी मुख्य रचनाएँ हैं।

२०—पं० रूपनारायण पाण्डेय

पण्डित जी एक उच्च कोटि के कवि और लेखक हैं। आपने बहुत से हिन्दी पत्रों का सम्पादन कर के सम्पादक श्रेणी में एक मुख्य स्थान प्राप्त कर लिया है। हिन्दी के अतिरिक्त आप बँगला, मराठी, गुजराती, उर्दू और संस्कृत के भी ज्ञाता हैं। आपने बहुत से अनुवाद भी किये है। स्कूलों मे आपका अध्ययन बहुत कम हुआ था। आपकी समस्त विद्वत्ता आपके अपने अध्यवसाय का ही परिणाम है। आप लखनऊ के निवासी हैं। आपने कुछ काल तक माधुरी का संपादन भी किया। आप अपने साथी कवि तथा लेखकों मे अच्छे गिने जाते हैं।

२१—रायकृष्णदास

रायकृष्णदास का जन्म सं० १९४९ मार्गशीर्ष कृष्णा २ को काशी में हुआ था। इनके पिता भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के फुफेरे भाई थे। ९ वर्ष की अवस्था मे ये कविता करने लगे थे। इनके पिता के मौसरे भाई बाबू राधाकृष्णदास, इन्हें देखकर बड़े प्रसन्न हुए थे। जब ये १२ वर्ष के थे तभी इनके पिता स्वर्गवासी हो गये। १८ वें वर्ष इन्होंने 'दुलारे रामचन्द्र' नाम का एक उपन्यास लिखना शुरू किया जो अधूरा रह गया। इन्होंने साहित्य के कई अँगों की भी श्रीवृद्धि की है। गद्य-पद्य दोनों में इन्होंने कविता की है। 'साधना' इनका बड़ा ही भव्य गद्य-काव्य है। कहानियों का ढँग बिल्कुल निराला है। इनके कथानक का

कलेवर छोटा होने पर भी कलापूर्ण होता है। ये ललित कलाओं के मर्मज्ञ कोविद हैं। इनकी सबसे बड़ी कीर्ति इनका किया हुआ कलाकृतियों का संग्रह है जो आजकल काशी नागरी प्रचारिणी सभा का एक अङ्ग है।

२२—गोपालशरणसिंह

ठाकुर गोपालशरणसिंह का जन्म सं० १९४८ में हुआ। ये रीवां राज्यान्तर्गत नई गढ़ी के इलाक़ेदार हैं और बड़ी सहृदयता के साथ अपने इलाक़े का प्रबन्ध करते हैं। स्कूली शिक्षा इन्होंने मैट्रिक तक ही पाई है। इनकी विद्या अधिकतर स्वाध्याय का ही फल है। इन्हें संस्कृत का भी अच्छा ज्ञान है। बाल्यकाल ही से इन्हें स्वयं कविता से प्रेम है। २० वर्ष की अवस्था से इन्होंने स्वयं कविता लिखना आरम्भ किया। 'सरस्वती' में इनकी कविताएँ अक्सर छपा करती हैं। इनकी स्फुट कविताओं का संग्रह अभी हाल में 'माधवी' नाम से प्रकाशित हुआ है। इनकी भाषा साफ़-सुथरी होती है और कविता में अच्छा प्रवाह रहता है। खड़ी बोली में घनाक्षरी लिखने में इन्होंने अच्छी सफलता पाई है।

अभ्यास

१—अपनी पाठ्य-पुस्तक के कवियों तथा लेखकों की जीवनियाँ याद करो।

पाठ १९

भाषा तथा साहित्य का संक्षिप्त इतिहास

हिन्दी—जिसे आज-दिन कुछ लोग हिन्दुस्तानी नाम से भी पुकारने लगे हैं, वर्तमान भारतवर्ष की राष्ट्र-भाषा

भाषा है। प्रायः समस्त देश में काश्मीर से लेकर रामेश्वर तक और आसाम से लेकर करांची तक, इसका व्यवहार नित्य प्रतिदिन अधिकाधिक होता जा रहा है। यही भाषा अरबी-फ़ारसी के शब्दों में सजकर और अरबी अक्षरों में लिखी जाकर उर्दू बन जाती है। इसके कई बड़े विभाग हैं। युक्त-प्रान्त के शिष्ट-समाज की भाषा ही जिसमे आज दिन अधिकांश साहित्य लिखा जारहा है, खड़ी बोली कहलाती है। राजस्थानी, ब्रज और अवधी हिन्दी की तीन और मुख्य शाखाएँ हैं, जिनका कि साहित्य से घनिष्ट सम्बन्ध रहा है।

राजस्थानी

राजस्थानी—राजपूताना तथा मालवा में बोली जाती है। चन्द और मीराबाई इसके श्रेष्ठ कवि हुए हैं। राजस्थानी का साहित्य प्रधानतया वीर-रसात्मक है।

ब्रज-भाषा

ब्रज-भाषा—ब्रज-मण्डल की भाषा है। इसका प्राचीन साहित्य अत्यन्त महत्वपूर्ण है और भक्ति तथा शृङ्गार-रस में ओत-प्रोत है। सूरदास, केशवदास, बिहारीलाल, मतिराम, भूषण, देव आदि महाकवियों ने अपना सुन्दर काव्य इसी भाषा में रचा है। आधुनिक कवियों में भारतेन्दुजी, श्रीधर पाठक तथा रत्नाकरजी ब्रज-भाषा के श्रेष्ठ कवि हुए हैं। इस समय भी अब खड़ी बोली ने गद्य-पद्य दोनो ही में अपना पूरा-पूरा सिक्का जमा लिया है, ब्रज-भाषा मे कविता करने वाले रामचन्द्र शुक्ल तथा वियोगी हरि जैसे सुकवि मौजूद हैं।

अवधी

अवधी—अवध प्रान्त की भाषा है। इसके श्रेष्ठ कवि कबीर, जायसी तथा कवि-कुल-चूड़ामणि तुलसीदास हैं। जगत्प्रसिद्ध तुलसी-रामायण (रामचरित-मानस) साहित्यित अवधी में रचा गया है।

खड़ी-बोली—हिन्दी की सर्व-प्रधान शाखा ही नहीं, अपितु

इसका वर्तमान कलेवर ही है। इससे मिलती-
खड़ी बोली जुलती भाषा मेरठ और दिल्ली के आसपास बोली जाती है, पर प्रधानतया यह साहित्य तथा व्यवहार की भाषा है। संयुक्त-प्रान्त के पढ़े-लिखे नागरिक इसी भाषा में विचार विनिमय करते है; और यह थोड़ी बहुत समस्त भारतवर्ष में प्रचलित है। यही हिन्दी के समाचार-पत्रों की भाषा है, और हिन्दी का समूचा गद्य इसी खड़ी-बोली में है। पिछले सत्तर-अस्सी वर्षों में ही इसने विशेष उन्नति की है; और अब पद्य में भी इसने प्राधान्य प्राप्त कर लिया है। मैथिलीशरण गुप्त, जयशङ्करप्रसाद, "निराला" जी, सुमित्रानन्दन पन्त और सुभद्राकुमारी चौहान खड़ी-बोली के लब्ध-प्रतिष्ठ कवि हैं।

साहित्य शब्द जगत्प्रिय है। लोकचित्ताकर्षक-यंत्र है। मनोमोहक मंत्र है। यह जितना अधिक लोक-
साहित्य प्रिय है उससे कहीं अधिक जटिल-गहन भी है। इस सम्बन्ध में हमारे पूर्ववर्त्ती आचार्यों में भी बड़ा मत-भेद दृष्टिगोचर होता है। केवल इसके लक्षण अथवा शब्द-व्याख्या में मत वैभिन्य रहा हो यह बात नहीं अपितु इसके नामकरण में भी विद्वानों ने 'मुण्डेमुण्डे मतिर्भिन्ना' की लोकोक्ति को ही चरितार्थ किया है। पूर्वाचार्यों की कृति के अवलोकन से यह स्पष्ट-तया अवगत होता है कि आदि में जब हमारे यहाँ अलंकारों की प्रधानता थी तो 'प्राधान्येन व्यपदेशा भवन्ति' के अनुसार इसका नाम भी अलंकार शास्त्र ही था। तदनन्तर शनैःशनैः अलं-कारों की गौणता के समकाल ही इस शास्त्र का भी नाम परिवर्त्तित होता गया। इसमे इसको यदि साहित्य का क्रम-विकास कहें तो हमारी अनुमति में कोई अत्युक्ति नहीं। सो यह शास्त्र कवि-कर्म का शासक होने के कारण साहित्य शब्द से निर्दिष्ट किया जाता है।

कविकुल शिरोमणि विश्वनाथ जी ने अपने साहित्य-दर्पण की भूमिका में 'सहितस्य भावः कर्म वा साहित्यं' लिखकर इस सहभाव के अन्तर्गत वेद, वेदाङ्ग, न्याय, मीमांसा, धर्मशास्त्र, पुराणादि सभी विद्याओं का समावेश किया है, और 'वाक्यं रसात्मकं काव्यं' कह कर रसप्रधान वाक्य को काव्याङ्ग माना है। साहित्य-शास्त्र के अद्वितीय आचार्य श्रीमम्मट जी 'तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि' लिखकर अदुष्ट शब्दार्थ को ही काव्य मानते हैं। वक्रोक्ति जीवितकार ने वक्रोक्ति को ही काव्य का सर्वस्व माना है। बा० रवीन्द्रनाथ टैगोर साहिब बाह्य प्रकृति तथा मानव प्रकृति जनित मनुष्य हृद्गत-प्रभाव के भाषा चित्र को ही साहित्य बतलाते हैं। एवं अन्यान्य आधुनिक साहित्य मीमांसकों मे भी इस विषय पर पर्याप्त मतभेद दृष्टिगोचर होता है। कोई इसको केवल काव्यरीति विषयक-शास्त्र मानते है तो कोई इसी को समस्तभाषा वाङ्मय-बोधक भी मानते हैं। किन्तु हमारी सम्मति मे साहित्य शब्द 'सहित' से ही बना है और यह यौगिक शब्द है। 'हितेन युक्तः सहितस्तस्य भावः साहित्यं' अर्थात् हितयुक्त को सहित और उसके भाव को साहित्य कहते है। आशय कि जो मनुष्य जीवन का हितसाधक हो, वही साहित्य है। इसको दूसरे शब्दों में हम 'सत्यंशिवं सुन्दरं' भी कह सकते हैं। क्योंकि सत्य, शिव तथा सुन्दर वस्तु ही मनुष्य के यथार्थ सुखसाधन में सहायक है। एवं जिसमे मनुष्य का अपूर्व आनन्द के साथ ऐहिक तथा पारलौकिक कल्याण सम्पादन हो, वही सच्चा साहित्य है।

हिन्दी-साहित्य का इतिहास लिखने वालों में से कुछ विद्वानों ने इस सारे समय को चार भागों में विभक्त किया है।

हिन्दी-साहित्य काल का विभाग

(१) आदि काल या वीरगाथा काल—संवत्

१२७५ तक।

(२) पूर्व मध्यकाल या भक्ति-काल—सं० १३७५ से सं० १७०० तक।

(३) उत्तर मध्यकाल या रीति-काल सं० १७०० से १९०० तक।

(४) आधुनिक-काल या गद्य काल—सं० १९०० से आज तक।

आदि-काल या वीर-गाथा काल

आठवीं या नवीं से चौदहवीं की तीन-चौथाई शताब्दी पर्यन्त छः या सात सौ वर्ष का समय, हिन्दी का आदिकाल इसलिये कहा जाता है कि इसमें हिन्दी का विकास आरम्भ हुआ और धीरे-धीरे विकसित होकर उसने अपना अलग अस्तित्व स्थापित किया। इस काल में हिन्दी का रूप भली प्रकार निश्चित हो गया। उपर्युक्त खुमान रासो और पृथ्वीराज रासो तथा बीसलदेव रासो के रचयिता कवियों के अतिरिक्त और भी बड़े-बड़े प्रसिद्ध अमीर खुसरो तथा विद्यापति आदि कवियों ने इस काल में जन्म लिया। इनमें से अमीर खुसरो ने खड़ी बोली में भी कुछ कविता की है और विद्यापति को तो मैथिल-कोकिल कहा जाता है। इन्हें बँगला भाषा-भाषी अपनी भाषा का आदि कवि मानते हैं। इस काल में कई रासो रचे गये। और वीररस की कविताओं का प्राधान्य रहा। इसलिये इसे वीर-गाथा काल कहा जाता है।

पूर्व मध्य-काल या भक्ति-काल

चौदहवीं शताब्दी के अन्तिम चरण से सत्रहवीं शताब्दी तक का सवा तीन सौ वर्ष का समय जिसे पूर्व मध्य-काल कहते हैं, हिन्दी के लिये बड़े गौरव का समय है। इस समय हिन्दी-भाषा अपनी प्रौढ़ता को प्राप्त हो चुकी थी। भाषा में स्वा-

भाविक लालित्य व माधुर्य आ गया था। इसी कालमें कबीर, नानक, सूरदास, मलिक मुहम्मद जायसी, मीराबाई, तुलसीदास, रहीम, रसखान, और केशवदास के समान महान कवि उत्पन्न हुये। इनके अतिरिक्त और भी अनेक सुकवि हुए, जिन्होंने अत्यन्त मनोहारिणी कवितायें की हैं। उपर्युक्त महाकवियो मे सूर और तुलसी हिन्दी के सबसे बड़े कवि हैं। संसार के किसी भी कवि के लिये यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि उसने इनसे श्रेष्ठतर कविता की है। इनके साथ ही कबीरदास और केशवदास जी भी हिन्दी नवरत्नों में गिने जाते हैं। केशवदास संस्कृत के भी आचार्य थे। कबीरदास बड़ी उच्चकोटि के कवि और महात्मा थे। इनका कवित्व ईश्वर तत्व विवेचन की दृष्टि से बड़े ऊँचे दर्जे का है। इस समय के अधिकांश कवियों ने भक्ति के प्रवाह में कविताएँ कीं। ये सब एक से एक बढ़कर भक्त थे। इस समय देश में भक्ति का ही प्रवाह था। इसीलिए इसे भक्ति-काल कहा जाता है।

मलिक मुहम्मद जायसी और तुलसीदास ने अपनी कविता अवधी भाषा में की, और सूरदास, रसखान, मीराबाई आदि ने ब्रजभाषा में। इनमें कबीर और नानक आदि भगवान् को निराकार मानकर ज्ञानमय भक्ति के उपासक थे किन्तु जायसी ऐसे कवि प्रेममय भक्ति के उपासक थे और भक्त कवियों में सूर, मीरा आदि भगवान् को साकार मानकर कृष्ण-रूप के उपासक थे, किन्तु तुलसीदास राम-रूप के।

उत्तर-मध्यकाल या रीति-काल

सत्रहवीं शताब्दी के उपरान्त उन्नीसवीं शताब्दी तक का दो सौ वर्ष का समय हिन्दी-साहित्य के इतिहास में उत्तर-मध्यम या रीति-काल कहा जा सकता है। भाषा में प्रौढ़ता तो इसके पूर्व ही आ चुकी थी। भाषा की परिपक्वता में कोई कसर न

थी। इस काल में अधिकतर शृंगार-रस के कवि उत्पन्न हुये। कुछ कवियों ने वीर-रस में भी कविताएँ कीं। इन कवियों में कुछ कवि ऐसे भी हैं जिनकी गणना संसार के बड़े कवियों में की जा सकती है। बिहारी और देव इस काल के ऐसे ही महाकवि हैं, जिनका हिन्दी नवरत्नों में एक ऊँचा स्थान है। ये शृंगार रस के कवि हुए हैं। इस समय इनके अतिरिक्त और भी अनेकों अच्छे-अच्छे कवि उत्पन्न हुये, जिन्होंने वास्तविक रूप में अपनी रचनाओं से भाषा को सजा दिया। इनमें अधिकांश ऐसे हैं, जिन्होंने शृङ्गार रस की धूम मचा कर हद कर दी। सेनापति, मतिराम, भूषण, दास, गिरधर, सूदन, पद्माकर और ग्वाल इस काल के प्रसिद्ध कवि हैं। इनमें भूषण और सूदन वीर रस की कविताओं के लिए और गिरधर अपनी नीति-विषयक कुण्डलियों के लिए चिरस्मरणीय रहेंगे।

इन दो सौ वर्षों के समय में काव्य के भिन्न-भिन्न अङ्गों का निरूपण करने वाले शास्त्रों की रचनाएँ की गईं। रस, अलङ्कार, नायक नायिका-भेद आदि विषयों पर देव, मतिराम, भूषण आदि अनेकों कवियों ने बहुत से ग्रन्थ लिखे। ऐसे ग्रन्थों को रीति-ग्रन्थ कहते हैं। इन ग्रन्थों का बाहुल्य होने के कारण इस काल को रीति-काल कहा जाता है।

आधुनिक काल

उन्नीसवीं शताब्दी के बाद से आज तक का समय दो भागों में विभक्त होता है (१) परिवर्तन और (२) उत्तर परिवर्तन। प्रारम्भ के चालीस वर्षों का समय 'परिवर्तन' और उसके बाद का 'उत्तर परिवर्तन' कहा जाना चाहिये। इन चालीस वर्षों में हिन्दी भाषा का रूप बहुत बदल गया। अब तक पद्य की भरमार थी ही परन्तु अब लोगों का झुकाव कुछ गद्य की ओर भी हुआ। पहले भी कुछ गद्य-

रचनाएँ खड़ी बोली व ब्रज-भाषा में हुई थीं, परन्तु उनका प्रचार उस समय न हो सका। अब खड़ी बोली में गद्य की ओर लोगों की रुचि दिन-पर-दिन बढ़ती गई, और जैसे-जैसे गद्य का प्रचार होता गया, भाषा सुधरती गई और धीरे-धीरे परिष्कृत और परिमार्जित होकर उसका शुद्ध रूप निश्चित हो गया। इसका सबसे बड़ा कारण अंग्रेजी शासन है। देश में विस्तृत साम्राज्य, संघर्ष का अन्त, प्रेसों की स्थापना, तथा उसकी उत्तरोत्तर उन्नति ने इस परिवर्त्तन में बड़ी सहायता दी।

उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में मुन्शी सदासुखराय ने भागवत का हिन्दी गद्य में अनुवाद किया। इसके बाद इंशा-अल्लाखाँ, लल्लूलाल और सदलमिश्र ने और भी कुछ परिमार्जित भाषा में गद्य-रचनाएँ की। ये लोग हिन्दी-गद्य के आदि लेखक कहे जा सकते हैं। आगे चलकर राजा शिवप्रसाद "सितारे हिन्द" और राजा लक्ष्मणसिंह ने इससे भी अधिक परिष्कृत भाषा का प्रयोग किया। इस प्रकार इस चालीस वर्ष के परिवर्त्तन-काल में भाषा का रूप बिल्कुल बदल गया।

इसके बाद उत्तर परिवर्त्तन काल का प्रारम्भ श्री भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र से होता है। भारतेन्दु जी ने हिन्दी-गद्य का आधुनिक रूप स्थिर किया। कुछ लोग इन्हें वर्तमान हिन्दी-गद्य का जन्म-दाता कहते हैं। यह बड़े मार्के के कवि भी थे। कुछ विद्वान् इनकी भी गणना हिन्दी-नवरत्नों में करते हैं। कवि के अतिरिक्त यह उच्चकोटि के नाटककार भी थे। वास्तव में इन्होंने हिन्दी में नाटकोंको जन्म दिया।

हिन्दी साहित्य की उन्नति के लिये वर्तमान काल में पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी तथा रायबहादुर बा० श्यामसुन्दर दास ने विशेष कार्य किया है। बीसवीं सदी में पत्र-पत्रिकाओं की उन्नति से अनेक

उत्साही उदीयमान लेखकों को प्रोत्साहन मिला है; और अब हिन्दी में अनेक अच्छे कवि, लेखक, उपन्यासकार, नाटककार, इतिहासकार तथा गल्प-लेखक हैं। हिन्दी का भविष्य अति उज्ज्वल है।

अभ्यास

१—आजकल के गद्य तथा पद्य के लेखकों तथा कवियों की रचनाओं के सम्बन्ध में मोटी-मोटी बातें याद करो।

—:—:—

चौथा प्रकाश

पाठ १६— (अ)

व्याकरण और अलंकार—(अ) समास और व्युत्पत्ति

शब्दों की व्युत्पत्ति तीन प्रकार से होती है—(१) उपसर्ग जोड़ने से, (२) प्रत्यय लगाने से, (३) दो शब्दों के मेल (समास) से। इनके सम्बन्ध में तुम पिछली कक्षा में पढ़ चुके हो। यहाँ दुहराने के लिए फिर कुछ बढ़ा कर प्रकाश डाला जाता है।

(१) उपसर्ग

'जय' का अर्थ जीत है और 'परा' उपसर्ग लगाने से 'पराजय' का अर्थ हार हो गया। हिन्दी भाषा के अपने निजी उपसर्ग बहुत थोड़े है। अधिकतर संस्कृत से ही लिये गए हैं। जैसे—

संस्कृत उपसर्ग

अति = अधिक, ऊपर—अति दीन, अतिरिक्त, अतिशय।
अधि = ऊपर, श्रेष्ठ—अधिकतर, अध्यक्ष, अधिपति।
अप = बुरा, विरुद्ध—अपमान, अपकर्ष, अपशब्द।
अव = नीचे, हीन—अवगुण, अवगति, अवतार।
आ = तक, समेत, उल्टा—आजीवन, आगमन, आकर्षण।
उत् = ऊपर, श्रेष्ठ—उत्पत्ति, उत्कर्ष, उत्तम।
नि = नीचे, बाहर—निपात, निरोध, निदान।
परि = आस पास, सब तरफ़, पूर्ण—परिजन, परिक्रमा, परितोष
वि = भिन्न, विशेष—विदेश, विख्यात, विज्ञान।

सम = अच्छा, साथ, पूर्ण—संस्कार, संगम, सन्तोष।

सु = अच्छा, सहज—सुपुत्र, सुकर्ष, सुगम।

उपसर्गों से शब्द बनाना तथा प्रयोग

ज्ञा शब्द के पूर्व 'आ' उपसर्ग जोड़ने से आज्ञा, प्रति से प्रतिज्ञा बनता है।

प्रयोग—पुत्र को पिता की आज्ञा मानना चाहिए।

अर्जुन ने जयद्रथ के मारने की प्रतिज्ञा की थी।

तालिका

उपसर्ग	शब्द	बना हुआ शब्द	अर्थ	प्रयोग
वि	रक्त	विरक्त	विरागी।	वह संसार से विरक्त है।
अनु	,,	अनुरक्त	प्रेमी।	ध्रुव हरिचरणोंमें अनुरक्त है।
अव	लम्ब	अवलम्ब	सहारा।	पुत्र माता के प्राणों का अवलम्ब होता है।
वि	,,	विलम्ब	देर।	उसके आने मे अभी विलम्ब है।
प्र	बल	प्रबल	तीव्र।	गोखले की बुद्धि बड़ी प्रबल थी।

हिन्दी उपसर्ग

अ, = अन = अभाव—अजान, अचेत, अबेर, अनमोल, अनगिनत

औ, = हीन, नीचे—औगुण, औतार, औघट।

सु, स = अच्छा—सुडौल, सपूत, सुजन।

कु, क = बुरा—कपूत, कुचाली, कुठौर।

उर्दू उपसर्ग

ना, बे, ला = अभाव—नापसन्द, बेचैन, लाचार।

दर, में—दरअसल, दरहक़ीक़त, दरम्यान।

इसी तरह ख़ुश, बद, ग़ैर, ब आदि उपसर्ग भी हैं।

प्रत्यय (२)

परितोष शब्द से इक प्रत्यय जोड़ने से पारितोषिक (इनाम)।

प्रयोग—हमारे स्कूल में हर साल वार्षिक परीक्षा पर पारितोषिक वितरण होता है।

तालिका

शब्द	प्रत्यय	बना हुआ शब्द	अर्थ	प्रयोग
बिदा	ई	बिदाई	बिदा होना।	आज उस की बिदाई हुई थी।
सन्यास	,,	सन्यासी	त्यागना।	आज सन्यासी आया है।
बड़भाग	,,	बड़भागी	बड़े भाग्य।	तुम बड़े बड़भागी हो।
पञ्जाब	,,	पञ्जाबी	पञ्जाब की।	वह पञ्जाबी भाषा बोलता है।
मनुष्य	त्व	मनुष्यत्व	इनसानियत।	तुझमें मनुष्यत्व का नाम नहीं है।
विष	ऐला	विषैला	ज़हरीला।	काला साँप विषैला होता है
सर्व	त्र	सर्वत्र	सब जगह।	विद्वान का आदर सर्वत्र होता है।

सूचना—प्रत्यय कई प्रकार के होते हैं:—कारक प्रत्यय, क्रिया प्रत्यय, स्त्री प्रत्यय आदि। कृत् प्रत्यय और तद्धित प्रत्यय।

कृदन्त और तद्धितांत शब्दों के भेद

(क) कृदन्त

क्रिया के अन्त में जुड़ने वाले प्रत्ययों को कृत कहते हैं। कृत प्रत्ययों से बने हुये शब्दों को कृदन्त कहते हैं।

कृदन्त शब्दों के अर्थ के अनुसार मुख्य पाँच भेद हैं।

१—कर्तृवाचक कृदन्त

जो कृदन्त शब्द, क्रिया के करने वाले को सूचित करता है उसे कर्तृवाचक कृदन्त कहते हैं। जैसे—लूट से लुटेरा (लूटने वाला)।

निम्न प्रत्ययों से प्रायः कर्तृवाचक कृदन्त बनते हैं।

प्रत्यय	क्रिया	शब्द
वाला	लिखना	लिखने वाला
आऊ	कमाना	कमाऊ
आका	उड़ना	उड़ाका
आक	तैरना	तैराक
आड़ी	खेलना	खिलाड़ी
ऐया	चलना	चलैया
क	पालना	पालक
वैया	फुदकना	फुदक्कड़ (आदि)

२—कर्मवाचक कृदन्त

जो कृदन्त कर्म के विशेषण हों, किसी के नाम हों उन्हें कर्मवाचक कृदन्त कहते हैं। जैसे—सूघना से सूँघनी। औना—खिलौना।

भूतकालिक कर्मवाचक हुआ, हुई प्रत्ययों से बनता है। देखना—देखा हुआ स्त्रीलिंग देखी हुई। बहुधा संस्कृत से कर्मवाचक 'त' लगाकर बनते हैं, जैसे लिखित, पठित, कथित आदि।

३--करण वाचक (कृदन्त)

जो क्रिया के सहायक विशेषण या संज्ञा बनते हैं। उन्हें करण-वाचक कृदन्त कहते हैं। जैसे—कतरना से कतरनी।

प्रत्यय	क्रिया	शब्द
आ	झूलना	झूला
नी	चलना	चलनी
ई	रेतना	रेती
ऊ	झाड़ना	झाड़

४--भाववाचक (कृदन्त)

क्रिया से जो भाववाचक संज्ञा बनती हैं उन्हें भाववाचक कृदन्त कहते हैं। जैसे—लूटना से लूट।

शब्द	क्रिया	प्रत्यय
अ	मारना	मार
अन्त	लिपटाना	लिपटन्त
आ	फेरना	फेरा
आहट	चिल्लाना	चिल्लाहट
ती	घटना	घटती (आदि)

५--क्रिया द्योतक (कृदन्त)

जो विशेषण क्रिया के प्रकाशित करने वाले हैं उन्हें क्रिया के द्योतक कृदन्त कहते है। जैसे लिखना से लिखते हुए।

ये शब्द कभी 'ते' और कभी 'ते हुए' आदि जोड़ने से बनते हैं। जैसे—जाते समय, जाते हुए।

क्रिया का समान्य रूप भी इसी अर्थ में आता है। जैसे—लिखना, पढ़ना आदि में 'कर' 'के' जोड़ने से पूर्वकालिक क्रिया बनती है। जैसे—लिखने से लिखकर, लिख के, लिख करके।

(ख) तद्धित

जो प्रत्यय संज्ञा व सर्वनाम के अंत मे जुड़ते हैं उन्हें तद्धित प्रत्यय कहते है। उनसे सिद्ध किये हुए शब्दों को तद्धितान्त कहते है। जैसे—इक्का से इक्के वाला।

१—कर्तृवाचक

प्रत्यय	संज्ञा	शब्द
वाला	गाड़ी	गाड़ीवाला
आर	सोना	सोनार
एरा	साँप	सँपेरा (आदि)
(उर्दू) गर	कारी	कारीगर
गार	याद	यादगार
दार	जमीन	जमीनदार (आदि)

२—भाववाचक

प्रत्यय	संज्ञा	शब्द
पन	बच्चा	बचपन
ई	गर्म	गर्मी
पा	बूढ़ा	बुढ़ापा
आई	मीठा	मिठाई (आदि)

नोट—वर और न्त से कृदन्त तद्धितान्त दोनों सिद्ध होते हैं।

३—सम्बन्ध-वाचक

प्रत्यय	संज्ञा	शब्द
आल	ससुर	ससुराल
औती	बाप	बपौती
ठी	आग	अंगीठी

ऐला विष विषैला (आदि)

उर्दू—आना, ई, का, ची, दान। नज़र—नज़राना, मिज़ाई, मैका, दुमची, क़लमदान। नाक, बान, मन्द, बर, सार, शाही, गार, दार, बाज़ आदि—ख़तरनाक, निगहबान, दौलतमन्द, ताक़तवर, ख़ाकसार, नादिरशाही, मददगार, दग़ाबाज़ आदि।

संस्कृत—अण, विष्णु से वैष्णव, मनु से मानव, इत्र सुमित्र से सौमित्र, दशरथ से दाशरथि। आलु से दयालु। इक, मासिक, इत, दुःखित, इष्ठ, कनिष्ठ; इन्, गुणी, मान् से बुद्धिमान, ईय, स्वर्गीय आदि।

४—क्रिया-विशेषण

सर्वनाम के साथ प्रत्यय जोड़ने से क्रिया-विशेषण बनते हैं। 'हाँ' और 'आँ' प्रत्ययों से स्थानवाचक ज से जहाँ, यह से यहाँ आदि व कालवाचक जब, तब आदि।

अभ्यास

१—उपसर्ग और प्रत्यय में क्या अन्तर है?

२—निम्नलिखित शब्दों मे से उपसर्ग और प्रत्ययान्त शब्दों को अलग-अलग करो।

प्रत्युपकार, यौगिक, त्यागी, योगी, शैशव, परिमाण, प्रमाण।

सूत्सव, लौकिक, दिल्लीवाला, सौजन्य, दौर्जन्य, दुर्जनता।

३—उपसर्ग और प्रत्यय को जोड़कर पाँच-पाँच नवीन शब्द बनाओ।

४—कृदन्त और तद्धित में क्या अन्तर है?

५—नीचे दिये हुए शब्दों से कृदन्त और तद्धित छाँटकर लिखो:—

कड़ुवाहट, मिठाई,, हँसी, चलनी, तम्बोली, पनिहारिन।

६—सम्बन्धवाचक प्रत्यय जोड़ो:—

नगर, शरीर, प्रकृति, धर्म, अर्थ।

पाठ— २०

(३) समास और भेदों का पूर्ण विवरण

दो या अधिक शब्दों से एक शब्द बनाना समास कहलाता है। समास के कुछ छः भेद होते हैं जो कि तुम पढ़ चुके हो। अब यहाँ इनका विस्तृत वर्णन किया जाता है।

१--तत्पुरुष

जिसमें उत्तर पद प्रधान हो। जैसे—राजपुत्र (राजा का पुत्र)। तत्पुरुष समास के कुल छः भेद होते हैं।

१–कर्म तत्पुरुष, २–करण तत्पुरुष, ३–सम्प्रदान तत्पुरुष, अपादान तत्पुरुष, ५–सम्बन्ध तत्पुरुष, ६–अधिकरण तत्पुरुष।

१–कर्म तत्पुरुष

जिसमे पहला शब्द कर्म कारक का अर्थ देता हो उसे कर्म तत्पुरुष कहते हैं। जैसे—माखन-चो (माखन को चुराने वाला)

नोट-इस प्रकार के तत्पुरु . बहुत-से है। इनमें दूसरा शब्द प्रायः क्रिया या कतृ वाचक संज्ञा होती है।

२–करण तत्पुरुष—

जिसमे पहला शब्द करण कारक का अर्थ देता हो। जैसे तुलसी-कृत (तुलसी द्वारा बनाई हुई), शोकाकुल (शोक से आकुल)।

३– सम्प्रदान तत्पुरुष—

जिसमे पहला शब्द सम्प्रदान कारक का अर्थ देता हो। जैसे—देश-भक्ति (देश के लिए भक्ति)। राह खर्च (मार्ग-व्यय) (राह के लिए खर्च)।

४–अपादान तत्पुरुष—

जिसमें पहला शब्द अपादान कारक का अर्थ देता हो। जैसे–पद-च्युत (पद से अलग किया हुआ,) बुद्धिहीन (बुद्धि से हीन)।

५–सम्बन्ध तत्पुरुष—

जिसमें पहला शब्द सम्बन्ध कारक का अर्थ देता हो। जैसे-गंगा-जल (गंगा का जल), लखपती (लाखों का पति)।

६--अधिकरण तत्पुरुष—

जिसमें पहला शब्द अधिकरण कारक का अर्थ देता हो। जैसे—बनवास (बन में वास करना),आप-बीती(आप पर बीती)।

२—कर्मधारय

जो विशेषण और विशेष्य वा उपमान और उपमेय के मिलने से बनता है, उसे कर्मधारय कहते हैं। जैसे—चतुर व्यक्ति। इसमें चतुर विशेषण है और व्यक्ति विशेष्य है। इसी प्रकार:—

१—नील कमल, सुयोग्य, कुरूप, श्वेताश्व, परमेश्वर, अल्प बुद्धि।

२—नीलपीत, खट्ट मीठा, श्यामसुन्दर।

३—घनश्याम, चन्द्रमुख, नीरजनयन, गजगामिन।

४—पुरुषोत्तम,मुनिवर, नराधम।

५--चरण कमल, नरसिंह, मुखचन्द्र।

३--द्विगु

जिस कर्मधारय का पूर्व पद संख्यावाची विशेषण हो उसे द्विगु समास कहते हैं। जैसे—पञ्चतत्व (पाँचों तत्व), नवग्रह, त्रिराज, त्रिफला, त्रिलोक, त्रिभुवन आदि।

४—द्वन्द्व

जिसमें दोनों पद प्रधान हों उसे द्वन्द्व समास कहते हैं। जैसे राधा-कृष्ण का मन-वच-कर्मसे भजन करो। इसमें राधा-कृष्ण और मन-वच-कर्म में द्वन्द्व समास है। (राधा और कृष्ण), मन, वच और कर्म। द्वन्द्व समास के तीन भेद होते है—इतरेतर द्वन्द्व, समाहार द्वन्द्व, वैकल्पिक द्वन्द्व।

१—इतरेतर द्वन्द्व—जिसके दोनों पद 'और' समुच्चय बोधक

अव्यय से जुड़े हों, पर समुच्चय बोधक का लोप हो। जैसे ऋषि-मुनि (ऋषि और मुनि) भात-दाल (भात और दाल) इसीप्रकार राजारानी बेटा-बेटी आदि—

२—समाहार द्वन्द्व।

जिस द्वन्द्व समास से उसके पदों के सिवाय इसी प्रकार का और भी अर्थ सूचित हो, उसे द्वन्द्व कहते हैं। जैसे—सेठ—साहूकार (सेठ और साहूकारों के सिवाय और भी धनी लोग हैं।) इसी प्रकार भूल-चूक, हाथ-पाँव, रुपया-पैसा।

—वैकल्पिक।

जिस समास में दो पद 'वा' 'अथवा' आदि विकल्प सूचक समुच्चय बोधक के द्वारा मिले हो उसे वैकल्पिक द्वन्द्व कहते हैं। जैसे—धर्मो-धर्म (धर्म या अधर्म) इसी प्रकार पाप-पुण्य आदि।

५—अव्ययीभाव

जिसमे पहला शब्द प्रधान अव्यय हो उसे अव्ययीभाव कहते हैं। जैसे—प्रतिदिन, इसमे पहला शब्द 'प्रति' अव्यय है और प्रधान है।

नोट:—अव्ययी भाव समास अव्यय के अर्थ के साथ विग्रह होता है। दिन-दिन(प्रति दिन (परिश्रम करना चाहिये। उसी प्रकार आजन्म (जन्म भर) यथाशक्ति (शक्ति भर) आदि।

नोट:—हिन्दीमें शब्दों की द्विरुक्तिमे भी अव्ययीभाव बनता है। जैसे घर-घर, हाथों-हाथ आदि।

६—बहुव्रीहि

जिस समास में दोनो पद प्रधान न हों बल्कि तीसरा पद प्रधान हो, उसे बहुव्रीहि कहते है। जैसे-चतुर्भुज (चार भुजा वाला) विष्णु, इसमें न तो 'चतु' शब्द प्रधान है और न 'भुज' शब्द, बल्कि समस्त शब्द

विष्णु का विशेषण है। इसी प्रकार दशानन, पीताम्बर, पतितपत्र, कृतकार्य, चतुरानन, चन्द्रमौलि, मुरलीधर, कमलनयन और स्वच्छतोय आदि में बहुव्रीहि समास हैं।

नोट—कुछ समस्त शब्द अर्थ के भेद से, भिन्न-भिन्न समास के हो जाते है जैसे—

पीताम्बर—पीला है वस्त्र जिसका (बहुव्रीहि)। पीला वस्त्र (कर्मधारय) .चतुर्भुज-चार भुजाएँ (कर्मधारय) (चार हैं भुजा जिसके (बहुव्रीहि)।

अभ्यास

१—समास कितने प्रकार के होते है? प्रत्येक के तीन उदाहरण दो।

२—कुछ ऐसे उदाहरण दो जो कर्मधारय और बहुव्रीहि दोनों हो सकते है।

३—नीचे दिये हुये समासों के भेद बताओ

चतुर्भुज, नीलाम्बर, भद्रपुरुष, शासन-विधि, चतुरानन, माखन-चोर, देश-भक्ति, मृत्यु-पर्यन्त, मुखचन्द्र, वीरात्मा, प्रतिदिन, त्रिभुज, तुलसीकृत, षड़ानन, सीताराम, पाप-पुण्य

४—तत्पुरुष के कौन-कौन से उपभेद होते हैं? प्रत्येक के दो-दो उदाहरण दो?

पाठ २१

अर्थालंकार-उपमा और रूपक का विशद वर्णन

(१) उपमा

उपमा का अर्थ तुलना करना है। जिसका वर्णन हो उसे 'उपमेय' और जिससे उपमा दे उसे 'उपमान' कहते हैं। जैसे:—श्रीकृष्णचन्द्र जी

बादल के समान काले थे। यहाँ श्रीकृष्णचन्द्र जी उपमेय और बादल उपमान हैं।

इन दो अंगों के अतिरिक्त उपमा के दो अंग और होते हैं—धर्म और वाचक। ऊपर के उदाहरण में 'काले' धर्म और 'समान' वाचक शब्द है। इन चारों अंगों युक्त उपमा को पूर्णोपमा कहते हैं। यदि इन अंगों में से एक या एक से अधिक अंगों का लोप हो तो लुप्तोपमा कहते हैं। जैसे:—

(१) 'शशि सो उज्ज्वल तिय बदन, } पूर्णोपमा
पल्लव से मृदु पानि'। }

(२) 'है रघुवर-मुख चन्द्र सो' } लुप्तोपमा।
यहाँ सामान्य धर्म लुप्त है, }

नोट:—कहीं-कहीं उपमालंकार के तीन अंग भी लुप्त होते हैं, पर ऐसा बहुत कम होता है।

उपमा के वाची शब्द:—सौं, लौं, सरिस, समान, सदृश, तुल्य, सी, से और तूल आदि हैं।

उपमा के तीन भेद हैं (क) मालोपमा (ख) उपमेयोपमा और (ग) अनन्वयोपमा।

(क) मालोपमा में एक उपमेय की अनेक उपमानों से समता दी जाती है। जैसे—यह मुखचन्द्र के समान सुन्दर और कमल के समान कोमल है।

(ख) उपमेयोपमा में उपमेय और उपमान की परस्पर समता दी जाती है। जैसे—यह मुखचन्द्र के समान है और चन्द्र इस मुख के समान है।

(ग) अनन्वोपमा में उपमेय की उपमा अन्य उपमान से न देकर उसी उपमेय से दी जाती है। जैसे—मुख वास्तव में यही मुख है।

(२) रूपक

रूपक में एक वस्तु को दूसरी वस्तु मानकर प्रकट किया जाता है अर्थात् उपमेय और उपमानको एक कर दिया जाता है। इसमें वाचक या समता प्रकट करने वाले शब्द नहीं होते। जैसे—उनके मुखचन्द्र को देख कर मेरा चकोर मन मोहित होगया। 'वक्र मुखचन्द्र' इसमें 'मुख' उपमेय और 'चक्र' उपमान चन्द्र का रूप धारण कर रहा है।

रूपक के मुख्य दो भेद होते हैं-(१) अभेद रूपक, (२) तद्रूप रूपक।

(१) अभेद रूपक—जहाँ बिना निषेध के उपमेय और उपमान अभेद रूप से कहे जाँय। जैसे—

प्रकटहु रविकुल रवि, निशि बीती, प्रजा कमलगन फूले।
मन्द परे रिपुगन तारागन जन भय तम उनमूले॥
नसे चोर लम्पट खल लखि जग, तव प्रताप प्रगटायो।
मागध बन्दी सूत चिरैयन, मिलि कल शोर मचायो॥

इसमें "रविकुल रवि, (हरिश्चन्द्र) प्रजा-कमल, मागधादि" पक्षी हैं। अतः अभेद रूपक है।

(२) तद्रूप रूपक—जहाँ उपमेय को उपमान से भिन्न रखकर उसी का रूप और उसी का कार्य करने वाला कहा जाय,—जैसे

रच्यो विधाता दुहुँनलैं, सिगरी शोभा साज।
तू सुन्दरि! सचि दूसरी, यह दूजो सुर राज॥

यहाँ पर दूसरी और दूजो शब्द से उपमेय को उपमान से भिन्न रक्खा गया है।

अभ्यास

१—अपनी पाठ्य-पुस्तक से उपमा और रूपक उदाहरण ढूँढ कर लिखो और लक्षण घटित करो।

२—अलंकार पहचानो:—

(क) उदित उदय गिर मंच पर, रघुबर बाल पतंग।
बिकसे संत-सरोज सब, हरषे लोचन भृंग॥

(ख) चरण कमल से लसत लाल के चलत धरणि पर।
श्रम-कण सोहत मोति-माल इव मुख-मंडल पर॥

(ग) गुरु-पद-रज मृदु मंजुल अंजन।
नयन अमीय दृग-दोष-विभंजन॥

(घ) मूठ कुबुद्धि धार निठुराई।
धरी कूबरी शान बनाई॥

(ङ) उपमा अलंकार के वाचक शब्द कौन-कौन होते हैं?

(च) अलंकारों के भेद पहचानो।

१—चक्रवाक मन दुख निशि पेखी।
जिन दुर्जन पर-सम्पति देखी।

२—नव विधु विमल तात जस तोरा। रघुवर किंकर कुमुद चकोरा।

३—'गूलर-फल' समान तव लंका।'

४—'भयो दूसरो चंद, तेरी ही मुख चन्द।'

———

पाठ २२ (अ)

वाक्य और उनकी रचना

वाक्य रचना मे दो प्रकार के पाये जाते हैं–(१) अलंकृत (२) साधारण। (१) अलंकृत वाक्य बनाने के लिए किसी न किसी अलंकार की अवश्य ही आवश्यकता पड़ती है। हम पहले उपमा और रूपक अलंकारों का वर्णन कर चुके हैं। परन्तु यहाँ पर साधारण वाक्य का अलंकृत वाक्य में रूपान्तर करना नहीं बताया गया। यहाँ पर इसके बतलाने की आवश्यकता इसलिए पड़ गई है कि अलंकृत वाक्य रचना का एक मुख्य अंग है। अतएव हम विद्यार्थियों के ज्ञान के लिए इसका विवरण देते है। भिन्न-भिन्न अलंकारों का गद्य और पद्य के वाक्यों में प्रयोग ही अलंकृत वाक्य कहलाता है। जैसेः—

(क) साधारण वाक्य—

(१) सीताजी के चरण कोमल हैं।

अलंकृत वाक्य—

(१) सीताजी के चरण कमल सम कोमल हैं। (उपमा) (२) सीताजी के चरण कमल सम कोमल और कमल के समान सुन्दर हैं। (मालोपमा) (३) सीताजी के चरण कमल के सम हैं और कमल सीताजी के चरण के सम है। (उपमेयोपमा) (४) सीताजी के कमल चरण को देखकर मेरा चित्त प्रफुल्लित होरहा है। (रूपक)।

(ख) साधारण वाक्य—राजा आता है।

अलंकृत वाक्य—विद्युत-समान तीव्रगामी घोड़ों के स्यंदन में बैठकर सूर्य सम प्रतापी राजा आता है। (उपमा अलंकार)

(ग) साधारण वाक्य—यह हीरा चमकता है।

अलंकृत वाक्य—१—यह हीरा अग्नि के समान है (उपमा)।

अभ्यास

१—नीचे लिखे वाक्यों को अलंकृत वाक्यों में परिवर्त्तन करो।

(क) चन्द्रमा उदय हो रहा है।

(ख) नदी में लहरें कैसी कल-कल करती हैं।

पाठ—२३

भाषा तथा अच्छी शैली के तत्व

भाषा दो प्रकार की होती है, एक साहित्यिक और दूसरी बोल-चाल की। इन दोनों में वही सम्बन्ध है जैसे आटे में नमक। लेख लिखते समय बालकों को ध्यान रखना चाहिये कि वे उसी प्रकार की भाषा लिखें जिस पर उनका पूरा अधिकार हो और उन्हीं शब्दों का प्रयोग करें जिनके अर्थ वे अच्छी तरह जानते हों। किसी शब्द को बार-बार दोहराना या व्यर्थ शब्दों की भरमार करना लेख को गंदा बनाना है। किसी घटना को इतना बढ़ा कर कहना कि वह झूँठी और असम्भव प्रतीत होने लगे बहुत ही बुरा है। किसी भाव को सीधे-सादे शब्दों द्वारा प्रकट करने में जो आनन्द मिलता है वह घुमा-फिरा कर कहने में नहीं। ऐसी भाषा के भाव भली-भांति सुगमता से समझ में नहीं आ सकते। उक्ति में विचित्रता होना अच्छा है परन्तु शब्दों का आडम्बर ठीक नहीं। कभी कभी देखा जाता है कि पक्षपातवश लोग एक की प्रशंसा और दूसरे की निन्दा करने लगते हैं। किसी के गुण-अवगुण दिखाने में हमें संकोच न करना चाहिये, किन्तु एक को बहुत बढ़ा देना और दूसरे को नीचे गिरा देना केवल इस अभिप्राय से कि एक हमें प्रिय है और दूसरा अप्रिय, सर्वथा निन्दनीय है।

रचना दो प्रकार की होती है (१) अलंकृत (२) अनलंकृत (साधारण)। प्रायः देखा जाता है कि नवीन लेखक अलंकृत भाषा लिखने में अपनी बड़ाई समझते हैं। उसमें गौरव अवश्य है परन्तु भाषा का तल विषम होने से भावों का प्रवाह रुक जाता है। उसका निबाहना सबके लिए कठिन होता है। आलंकारिक भाषा लिखना अच्छा है परन्तु बनावटी लिखना ठीक नहीं। विद्यार्थियों को शब्द-जाल में फँसकर अपनी रचना निकृष्ट न करना चाहिये, कुछ उदाहरणों द्वारा उक्त गुण और दोषों का दिग्दर्शन कराया जाता है।

१—अलंकृत गद्य

सन्ध्या

भगवान भुवन भास्कर अन्धकार के अन्याय का साम्राज्य बढ़ते देख क्रोध से तमतमाते हुये जलधि में जा डूबे। शास्ता की अनुपस्थिति में अत्याचारियों की धूम मच गई। चुगलखोर चमगीदड़ और चोर उलूक अपने निवासों से निकल पड़े। चन्द्रदेव से अनाचार सहन न हो सका। अतएव अपनी चमचमाती हुई कटार लेकर अन्धकार की प्रियतमा रजनी का गला काटने के लिये दौड़े।

२----अनलंकृत या सरल गद्य

जब पाँचों पाण्डव बड़े हुए, और उनकी वीरता तथा बुद्धिमत्ता चारों ओर प्रकाशित हुई, तब धृतराष्ट्र ने, अपने कर्तव्य और राजनीति पर विचार करके युधिष्ठिर को युवराज नियत किया। किन्तु दुर्योधन, जो कि उनसे पहले से ही द्वेष रखता था, इस बात से बहुत ही अप्रसन्न हुआ; और अनेक प्रकार से अपने पिता का चित्त पाण्डवों की ओर से फेरने लगा।

३—बनावटी गद्य

"सघन-घनांधकारकारिणी, संयोगिजन मनोहारिणी, हरित

शस्य-संपत्ति -भूमण्डल-शोभा-विस्तारिणी, नदी-नद-तड़ाग-गर्तादि मध्य जल-संचारिणी, ग्रीष्म-भीष्म-संताप-मारिणी, मडूक-मण्डलसंवादिनी, मयूरसमूह-नादिनी, कृषक-जन-शुभ-भविष्य द्विधायिनी वर्षा बीत गई !"

इस गद्य के गढ़ने में लेखक को बड़ा परिश्रम हुआ होगा, उसका मस्तिष्क खाली हो गया होगा किन्तु क्या सम्भव है कि इस शैली का आद्योपान्त सुन्दर निर्वाह हो सके? कभी नहीं। अतएव ऐसी रचना से दूर रहना चाहिये।

४. दूषित गद्य

(अ) बिहारीबाबू के मन की हालत जो द्रुत घोड़े के सदृश्य पल मात्र में अगणित दूर जाने वाली है वे खुद जानते हैं या अखिल विश्वकी रचना करने वाला घटघट व्यापी अविनाशी अन्तर्यामी खुदा। वे निराशा के गढ्ढे मे पड़े हुये मन ही मन तारा के प्रेम की लीला तथा अपने ध्रुव में विश्वास की एक एक कड़ी की याद करके गहरी श्वास ले रहे थे। अपनी दी हुई वाग्दान की मुद्रिका को वापस पाकर भी उनको यह घटना स्वप्नवत मालूम होती थी। निदान उन्हें अंत को बिल-आखिर विश्वास हो गया कि हो न हो माता पिता के समझाने बुझाने और आश्चर्य नहीं कि धमकाने पर उसने अपने को इस कष्ट से बचाने के उद्देश्य से उन सबका कहना मानकर सम्बन्ध तोड़ दिया हो।

उक्त गद्य के वाक्य जटिल हैं और व्यर्थ के विशेषण पदों से अलंकृत किये गये हैं। शब्दो की भूल भुलैयों में भाव भटकते फिरते हैं। भाषा दुर्बोध और साम्यहीन है। शब्दों का प्रयोग भी उचित नहीं हुआ। कहीं पुनरुक्ति है। और कहीं अत्युक्ति। यदि इस गद्य को हम निर्दोष और सरल भाषा में लिखना चाहें तो इस प्रकार लिखेंगे:—

(ब) बिहारीबाबू अपने चंचल मन की दशा स्वयं जानते हैं या अन्तर्यामी परमात्मा। वे निराशा के गर्त में पड़े हुये तारा

के प्रेम तथा अपने अटल विश्वास का स्मरण कर गम्भीर श्वास ले रहे थे। अपनी दी हुई अंगूठी को वापस पाकर भी उनको यह घटना स्वप्नवत् मालूम देती और वे किसी बात का निश्चय न कर सकते थे। निदान उन्हें अन्त में विश्वास होगया कि सम्भव है उसने माता-पिता के कहने तथा उनके भय से मेरा सम्बन्ध तोड़ दिया है।

याद रक्खो :—अच्छी रचना के लिए भाषा को निम्नलिखित दोषों से बचाना चाहिए :—

(१) पुनरुक्ति दोष—एक ही अर्थ को अलग-अलग शब्दों वा एक ही शब्द को बार-बार दुहराना पुनरुक्ति कहलाता है। पुनरुक्ति से वाक्य प्रभावहीन हो जाता है और पढ़ने तथा सुनने में बुरा मालूम होता है जैसे:—

"दूध का दही बनाया जाता है और दूध से मलाई बनती है और दूध से खोया बनता है।" इस वाक्य को इस प्रकार लिखना चाहिए।"

"दूध से दही, मक्खन, मलाई और खोया इत्यादि पदार्थ बनते हैं।"

(२) अतिशयोक्ति दोष—किसी बात को बहुत बढ़ा कर कहना या असम्भव रूप में उसकी प्रशंसा करना अतिशयोक्ति है। जैसे:—

'जो जन चारि मूँछ रह ठाड़ी। (सोलह कोस मूँछ खड़ी रहती है) इस वाक्य में यह बात असम्भव है। इसको पढ़ कर हृदय पर अच्छा भाव नहीं जमता।

(३) पक्ष दोष—जिस विषय के पक्ष के समर्थन में हम कुछ लिख रहे है उसके विपक्ष मे कुछ लेख देना ही पक्ष-दोष कहलाता है, जैसे:—

"यहाँ पर सब कुशल है। पिताजी कानपुर गये हुए हैं। कई दिन से शीला को दस्त हो रहे हैं। शहर में हैजा दिन पर दिन ज़ोर

पकड़ता जाता है।" इसमें पहले वाक्य से सब कुशल बता कर फिर दस्त और हैजे आदि की चर्चा करके उसका खण्डन किया है। इसमें पक्ष-दोष से बचकर यही बात इस प्रकार से लिखी जा सकती है—"यहाँ की दशा ठीक नहीं है। पिताजी कानपुर गये हुए हैं, इधर शीला को कई दिन से दस्त हो रहे है। शहर मे हैजे का दिन पर दिन जोर बढ़ता जाता है।"

अभ्यास

१—उपर्युक्त गद्य खण्डों की तुलना करो और जो शब्द रह गये हों उन पर विचार करो ?

२—'अन्त में और बिल आखिर' शब्द क्यों बुरे मालूम पड़ते हैं ?

३—'अगणित दूर' और खुदा शब्दों के प्रयोग क्यों अनुचित हैं ?

४—'अ' खण्ड में और कौन से दोष है ?

५—'ब' खण्ड क्यों अच्छा है ?

६—भाषा के कौने-कौने से दोषों से रचना को बचाना ज़रूरी है ?

———

पाँचवाँ प्रकाश

पाठ—२४

गति और भाव ग्रहण के लिए सहायक पठन

नीचे के दोहे को सुपठन द्वारा पढ़ो :—

ईहीं आस अटक्यौ रहतु, अलि गुलाब कै मूल ।
ह्वै हैं फेरि बसंत ऋतु, इन डारिनु वे फूल ॥

पढ़ने का ढंग—ईहीं आस-अटक्यौ रहतु-अलि-गुलाब कै मूल ।
ह्वै है-फेरि-बसंत ऋतु-इन-डारिनु-वे फूल ॥

भाव-भौंरा गुलाब की जड़ में इसलिये अटका रहता है कि जब बसंत ऋतु आवेगी तब इन डालों मे फूल लगेंगे।

उपर्युक्त दोहे को सुपठन द्वारा पढ़ने में अर्थ और भाव भलीभाँति समझ मे आ जाता है। इसी दोहे को नीचे लिखे ढंग से पढ़ने में न अर्थ ही समझ में आवेगा न भाव। ध्यान रहे गति और भाव समझने के लिए गद्य या पद्य को सुपठन और लय से पढ़ना चाहिए।

ईहीं आस अटक्यौ—'रहतु अलि गुलाब—कै मूल ह्वै है फेरि बसन्त ऋतु इन—डारिनु वे—फूल।

अभ्यास

१—नीचे लिखी पद्यों को सुपठन और लय से पढ़ो :—

(क) "रहिमन" यों सुख होत है, बढ़त देखि निज गोत।
ज्यों बड़री अँखियाँ निरखि, आँखिन-को सुख होत।"

(ख) केवट उतरि दंडवत कीन्हा। प्रभु सकुचे यहि कछु नहिं दीन्हा।
पिय हियकी सियजाननि हारी। मनि मुदरी मन मुदित उतारी॥

२—अपनी पाठ्य पुस्तक के गद्य और पद्य के पाठों को सुपठन द्वारा पढ़कर उनका अर्थ और भाव समझो।

पाठ—२५

हरिजनों का उत्थान

सूचना—शिक्षा विभाग से पाठ्य-क्रम में 'हरिजनों का उत्थान', 'सामाजिक विषय', 'राष्ट्रीय नताओं के जीवन की सस्मरण घटनाएँ और 'देश-विदेश के त्याग, साहस और शौर्य की कहानियां' विषयों पर पचास-पचास पृष्ठ की कम से कम चार पुस्तकें पढ़ी जावें' ऐसा लिखा है। इसका हम इस छोटी पुस्तक मे वर्णन नहीं कर सकते। केवल विद्यार्थियों के पथ-प्रदर्शन के लिए मुख्य-मुख्य बातें लिखे देते है। ताकि इन बातों के सहारे तथा इन्हीं विषयों की अन्य पुस्तकें पढ़कर वे अपनी जानकारी बढ़ालें।

'हरिजनों का उत्थान' महात्मा गांधीजी के जीवन का एक महान कार्य है। यद्यपि महात्माजी का शरीर हमारे बीच मे नहीं, परन्तु उनकी अमरवाणी भारत में ही नहीं, वरन सारे संसार में गूँजती रहेगी। विलायत आदि देशों के विचारों तथा सभ्यता पर उनके आदर्शों का प्रभाव साफ़ पड़ने लगा है और भविष्य में और बढ़ेगा।

महात्माजी जिन आदर्शों के आधार पर मनुष्य जीवन की नींव रखना चाहते थे उनमें अछूतोद्धार का कार्य-क्रम प्रमुखता लिए हुए था। सदियों की सामूहिक दासता का ऐसा उदाहरण ससार के इतिहास में अन्यत्र नहीं मिलता। इस दुर्दमनीय एवं कलंकमयी सामाजिक विषमता की भीषणता को देखते हुए ही महात्माजी ने यह इच्छा प्रकट की :—

'यदि मेरा पुनर्जन्म हो तो मैं अछूत के घर जन्मना चाहूँगा, ताकि मैं उनके दुःख दर्द में, उनके अपमान में भाग ले सकूँ और अपने आपको, तथा उनको उस दयनीय अवस्था से छुड़ाने का यत्न कर सकूँ।

उनकी यह अभिलाषा एक क्रांतिकारी मन की इच्छा को प्रकट करती है। अधिकांश सुधार करने वाले दलितों को मुक्त करके ऊँचा उठाने का प्रयत्न करते रहे हैं। उन्होंने छूतछात को सामाजिक रोग समझकर उसके मिटाने की इच्छा की। श्री राममोहनराय, ऋषि दयानन्द इसी सुधार करने की इच्छा से ओतप्रोत थे, परन्तु गांधीजी ने इस बौद्धिक सुधार को माननीय प्रेम से पुष्ट करके यह बतलाया कि छूतछात केवल सामाजिक द्वेष-मात्र नहीं, वरन् मनुष्यता के विरुद्ध एक घोर अपराध है। समाज की व्यवस्था मनुष्य को अस्पर्श्य नहीं बना सकती, क्योंकि समाज मनुष्य को जीवन नहीं देता। जीवन देने वाली ईश्वर की सत्ता के सामने सब बराबर हैं। इसीलिए उन्होंने अछूतों को 'हरिजन' कहा। वे दलित हैं, सताये हुए है, तथा खून चूसे हुए हैं। उनकी समूह सम्बन्धी गुलामी, समाज की विषमता के खोल में एक नाश करने वाली धन की दासता को भी छिपाये हुए हैं। ऐसे वातावरण में जिसमें कि एक ओर निर्दोषारूढ़ इसी प्रकार मुद्रा लोभी वर्ग अधिकार से विरुद्ध होने के लिए व्याकुल नहीं और दूसरी ओर सताए हुए वर्ग सदियों के अत्याचार इसी प्रकार नवीन सब बातों का ज्ञान होने की अवस्था के कारण हृदय में क्रोध इकट्ठा किये हुये हैं। वैधानिक, सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्थाओं में परिवर्त्तन करना पर्याप्त नहीं। इसी भेद को समझ कर उन्होंने दोनों वर्गों में प्रेम व हमदर्दी द्वारा हृदय-परिवर्त्तन उपस्थित किया। इसी प्रयास को विफल होते देख कर महात्माजी ने २० सितम्बर सन् १९३२ को आमरण अनशन व्रत करके संसार को बतलाया कि भारत में समाज का कोई भी अंग अब किसी प्रकार का अत्याचार न सहन करेगा कोई वर्ग दूसरे वर्ग का भार सहन करने को बाध्य ही हो सकेगा।

समाज में आमूल परिवर्त्तन पैदा करना एक अत्यंत कठिन कार्य है तथा विभिन्न वर्गों में परिवर्त्तन बिना इस चाहे हुए मनोरथ को पूर्ण करना असम्भव था। महात्माजी ने कठिनता को

देखते हुए अपना चतुर्दशमुखी कार्य-क्रम बनाया। इस योजना के मूल सिद्धान्त जीवन से द्वेष, राग, लोलुपता इत्यादि को दूर करके मनुष्य को हमदर्दी, अहिंसा तथा मातृ-प्रेम से सुसंस्कृत करते हैं। महात्माजी के इस कार्य-क्रम की पूर्ति के साथ हरिजनों की समस्या भी हल हो जावेगी। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को विशेषतया हरिजनों को इस कार्य-क्रम में उत्साह सहित भाग लेना चाहिये।

अछूतोद्धार आंदोलन के सच्चे प्रवर्तक महात्माजी ही हैं। कांग्रेस सन् १८८७ के पश्चात् सामाजिक विषयों से प्रेम-शून्य रही। और सन् १९१९ में गांधीजी के नेतृत्व में ही इस कार्य को फिर से दूसरी बार अपनाया गया।

उस समय से अब तक का इतिहास सभी को ज्ञात है। महात्माजी के बतलाए हुए मार्ग पर चलकर ही हरिजन उन्नति कर सके है और कर रहे हैं। उनके उद्धार एवं पैदा होने के सम्बन्ध मे जो वैधानिक एवं सामाजिक कार्यवाइयां हुई वह भी सब जानते हैं। यू० पी० का सामाजिक अस्पृश्यता निरोधक बिल एवं हरिजन सहायक विभाग इस प्रयास के प्रतीक हैं। इनसे भी अधिक मूल्यवान वह भीतरी परिवर्त्तन है जो हर विचारशील हिन्दू मे पैदा हो गया है। अब अधिकार के लोभी या रूढ़ि मे फँसे हुए व्यक्तियों के अतिरिक्त कोई छुआछूत का सहायक नहीं, और प्रत्येक व्यक्ति ठीक होने के भाव पाने के इच्छुक है। अवश्य ही सदियों से इकट्ठी की हुई इच्छाओं का नष्ट करने म हम समय की उपेक्षा नहीं कर सकते, परन्तु यह निर्विवाद है कि हमारा उद्देश्य और हमारा मार्ग दोनों महात्मा जी के प्रसाद हैं और इनसे हमें आशातीत सफलता मिलेगी। हरिजन समुदाय मे आन्तरिक सुधार की जो प्रेरणा वर्तमान है, उससे उन नैतिक एवं भौतिक कमजोरियों का विनाश होजाना चाहिये जो उसके वास्तविक कल्याण मे रोक लगाने वाली हुई है।

महात्मा बुद्ध के पश्चात् दलितवर्ग का इतना बड़ा हितैषी महात्मा जी के अतिरिक्त कोई नहीं हुआ। उन्होंने सुधार को तर्क, व्याख्यान एवं शास्त्रीय व्यवस्था में ऊँचा उठा कर मनुष्यता की भित्ति पर रक्खा और मध्यकालीन संतों की भाँति सज्जनता, भक्ति, प्रेम व अहिंसा द्वारा ठीक होने के भाव पैदा करने की व्यवस्था दी। उनके इस नवीन जीवन दर्शन में आधुनिक जीवन सभ्यता की वह कर्कश भौतिकता नहीं, जिससे कि हरिजन अभी तक बचे हुए थे। उनके सन्देश में एक अद्वितीय शांति व सांत्वना है, जिसको पाकर निर्धन, अवश, दलित, शोषित एवं सताये हुए वर्ग अपने सामाजिक एवं नैतिक विकास की चरम सीमा प्राप्त कर सकता है। उनकी याजना में परीक्षित प्रयोग हैं जिनका प्रभाव व्यावहारिक जीवन में देखा जा चुका है। इसलिए उनमें अखंड विश्वास होना चाहिए। ईश्वर को हम सब महात्माजी के बतलाये मार्ग पर दृढ़ रह कर अपना अभीष्ट प्राप्त करने में सफल हों और समाज को छिन्न भिन्न होने से बचा सकें।

'सामाजिक विषय'

व्यक्ति और समाज

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। व्यक्ति और समाज का आपस में बड़ा घनिष्ट सम्बन्ध है, समाज व्यक्तियों से बनता है और व्यक्ति समाज का अङ्ग होता है। इस प्रकार समाज और व्यक्ति एक दूसरे पर निर्भर रहते हैं। दोनों का अन्योन्याश्रय सम्बन्ध है। जन्म लेते ही मनुष्य को दूसरों की आवश्यकता पड़ती है। यदि माता और व्यक्तियों द्वारा उसका पालन न हो तो उसका जीवन ही नहीं रह सकता। अनेक पशु ऐसे हैं कि जिनके बच्चे जन्म लेने के कुछ ही दिनों बाद अपने पैरों खड़े हो जाते हैं, इधर-उधर दौड़-धूप कर अपना पेट भरने के

लायक हो जाते हैं और दूसरों के ऊपर आश्रित नहीं रहते किन्तु मनुष्य का बच्चा असहाय अवस्था में जन्म लेता है। उसको वर्षों तक दूध पिलाने और गोद में रखने की आवश्यकता पड़ती है, उसको सर्दी गर्मी से बचाने की जरूरत होती है, उसको बाल्यावस्था के रोगोंसे बचाने की आवश्यकता होती है। जब वह बड़ा हो जाता है तो भोजन, वस्त्र आदि के अतिरिक्त उसको शिक्षा की जरूरत होती है; खेलने-कूदने, हर्ष और विषाद के लिए, दूसरे बच्चों के साथ की जरूरत पड़ती है। इस प्रकार हम देखते हैं कि मनुष्य बचपन में अपने माता-पिता, भाई-बहन, सम्बन्धी, कुटुम्बी, पड़ोसी तथा समाज के अन्य व्यक्तियों पर आश्रित रहता है। मनुष्य का दूसरों पर निर्भर रहना युवावस्था तथा बुढ़ापे में भी बन्द नहीं होता। युवावस्था तथा बुढ़ापे में मनुष्य विवाह के अवसर पर, उत्सव तथा पर्वों के अवसर पर दूसरों की सहायता के बिना अपना कार्य नहीं कर सकता। बड़ा हो जाने पर मनुष्य अपनी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति अपने आप नहीं कर सकता। उसे अपने दैनिक जीवन में सैकड़ों ऐसी वस्तुओं की आवश्यकता पड़ती है जिनको वह अपने हाथों से नहीं बनाता। हममें से कितने ऐसे व्यक्ति हैं जो अपने हाथों से काग़ज़, पेन्सिल, रबड़, रेल, तार, रेडिओ, मेज़, कुर्सी, जहाज़, दियासलाई, पिन तथा सुई बनाते हैं। यदि हम किसान हैं तो हमारे पैदा किये हुये, अनाज पर शिल्पकार, राज, तथा अन्य कारखानों में काम करने वाले व्यक्ति निर्भर हैं। यदि हम शिल्पकार तथा दस्तकार हैं तो हमारी शिल्पकारी तथा दस्तकारी की आवश्यकीय वस्तुओं पर किसान निर्भर रहता है। यदि एक सैनिक तथा पुलिस का सिपाही जनता की जान-माल की रक्षा करता है तो जनता सैनिक तथा सिपाही को अपने खज़ाने से रुपया वेतन के रूप में देकर उसकी पूर्ति करती है। यदि एक सुनार किसी जुलाहे को सुन्दर आभूषण बनाकर तैयार करता है तो जुलाहा उस

के लिये सुन्दर कपड़े तैयार करके देता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए, जिस समय से वह जन्म लेता है, मरने तक समाज के अन्य व्यक्तियों की सहायता तथा सहयोग की आवश्यकता पड़ती ही है। बस इन्हीं सब बातों से हम कह सकते है कि मनुष्य सामाजिक प्राणी है!

सामाजिक समुदाय

मनुष्य को ज्यों-ज्यों शिक्षा और सभ्यता की जरूरत होगी तथा संसार "वसधैव कुटुम्बकम्" के आदर्श तक पहुँचने की चेष्टा करेगा त्यों-त्यों समाज में सहयोग भी बढ़ता जायगा और समुदायों की संख्या बढ़ती जायगी। वर्तमान समय में इतने अधिक समुदाय हैं कि उसका ठीक-ठीक वर्गीकरण करना तथा भेद बतलाना कुछ कठिन प्रतीत होता है। दूसरी कठिनाई समुदायों के वर्गीकरण करने में यह है कि समुदाय देश, काल तथा आवश्यकता आदि के अनुसार घटते-बढ़ते और बदलते रहते हैं। फिर भी मोटे तौर पर सुविधा के लिये हम इनको निम्नलिखित वर्गों में बाँट सकते हैं:—

(१) गोत्रात्मक समुदाय; जो उत्पत्ति के विचार से होते है, जैसे कुल कुटुम्ब, जाति।

(२) व्यवसायात्मक समुदाय जो व्यवसाय के अनुसार बनते हैं, जैसे वर्ण, अनेक व्यवसाय के संघ।

(३) धार्मिक समुदाय, जो आध्यात्मिक विचारों के आधार पर बनते हैं जैसे, सिक्ख संप्रदाय, हिन्दू संप्रदाय, मुस्लिम संप्रदाय, कबीर पंथ, रामानुज पंथ, आदि।

(४) शिक्षा, विनोद, लोक सेवा के समुदाय।

(५) प्रदेशात्मक समुदाय जो स्थल विशेष में रहने वालों के कारण बनते हैं, जैसे—गाँव, नगर, देश आदि

(६) राजनीतिक समुदाय जो राजनीतिक आधार पर बनते हैं, जैसे:—राज्य, कांग्रेस, राष्ट्र-संघ, मुस्लिम लीग, जिला

बोर्ड, म्युनिस्पिल बोर्ड, प्रान्तीय तथा केन्द्रीय व्यवस्थापिका सभाएँ, उदार दल, समाजवादी दल, आदि।

कुटुम्ब, गाँव, शहर और देश प्राकृतिक संस्थायें हैं। हम जन्म से ही इसके सदस्य बन जाते हैं, इनकी सदस्यता अनिवार्य है। यदि हम चाहें कि किसी कुटुम्ब देश और गाँव में न रहें तो ऐसा होना असम्भव है। इनके साथ हमारा ऐसा सम्बन्ध है कि वह कभी भी टूट नहीं सकता। इस प्रकार कुटुम्ब, गाँव, शहर और देश की सहायता हमारे लिये अनिवार्य है। इन अनिवार्य समुदायों में से देश के प्रति हमारे कर्त्तव्य हैं। अब हम उनका उल्लेख करते हैं।

हम सब भारतवासी यह जानते हैं कि हमारा देश आजकल उन्नति में संसार के बहुत से देशों से पिछड़ा हुआ है, हमारे देश में विद्या तथा शिक्षा की कमी है, देश-प्रेम की कमी है, आपस के मेल की कमी है, हमारा देश बहुत सी कुरीतियों का शिकार है, हमारे देश में छूआछूत का रिवाज है, हममें अनुशासन की कमी है, हममें चरित्र की कमी है, हम पुरानी रिवाजों के कारण अपनी शादियों तथा अन्य उत्सवों में जरूरत से ज्यादा खर्च कर डालते हैं, हम समय का मूल्य नहीं जानते, हम मितव्ययता के सिद्धान्तों को नहीं जानते।

एक सच्चे नागरिक का यह परम कर्त्तव्य हो गया है कि वह अपने देश की इन कमियों को, कुरीतियों को और बुरे रिवाजों को दूर करे।

जहाँ तक शिक्षा का सम्बन्ध है, वहाँ सच्चे नागरिक को चाहिए कि वह देश के शिक्षा-प्रसार के काम में सहयोग दे। रात्रि पाठशालाओं को खुलवावे जहाँ मजदूर, किसान तथा अन्य पेशाकारी जातियाँ पढ़ना-लिखना सीखें। उसका यह परम कर्त्तव्य है कि पहले स्वयं उच्च शिक्षा प्राप्त करे और इसके पश्चात् देश की उच्च शिक्षा को प्रोत्साहन दे। यदि किसी नागरिक के पास इतना धन है कि वह

शिक्षालयों को दान दे सकता है तो उसे चाहिये कि वह ऐसी संस्थाओं को दान दे और यदि किसी उच्च शिक्षित नागरिक के पास समय है तो समय-समय पर व्याख्यान देकर उच्च शिक्षा के महत्त्व को जनता के सामने रक्खे ।

सारांश यह है कि जहाँ तक हो सके नागरिक को चाहिये कि देश की शिक्षा के प्रसार के महत्त्व को समझे और उसके प्रसार के लिए तन, मन और धन से चेष्टा करे ।

भारतवासियों में देश-प्रेम की बहुत कमी है। यदि हम देश-प्रेम का सच्चा उदाहरण देखना तथा जानना चाहते हैं तो हम इसको इङ्गलैंड तथा जर्मनी की जनता से जान सकते हैं। जब अतीत काल में इङ्गलैंड तथा जर्मनी युद्ध में संलग्न थे, युद्ध के कारण इङ्गलैंड की जनता जो त्याग दिखला रही थी, जो कष्ट सहन कर रही थी, जो धैर्य धारण कर रही थी, दृढ़ता तथा साहस दिखला रही थी, शब्दों में लिखा नहीं जा सकता, मुँह से कहा नहीं जा सकता । हम देखते हैं कि बहुत से अँगरेज संग्राम-भूमि में चले जाते थे, बहुत से सामुद्रिक सेना में सम्मिलित हो जाते थे, बहुत से बिना संकोच बड़ी से बड़ी रक़म सरकार को सौंप देते थे और बहुत से बड़े से बड़ा टैक्स सहन कर लेते थे। जो बात इङ्गलैण्ड की जनता के बारे में कही जा सकती है, वही बड़ी आसानी से जर्मनी की जनता के विषय में भी कही जा सकती है। हमें चाहिए जर्मनी, जापान तथा इङ्गलैण्ड की जनता से देश-प्रेम का पाठ ग्रहण करें। हमें चाहिए कि हम अपने देश के मनुष्यों से, पहाड़ों तथा नदियों से, अपने देश की भाषा से, अपने देश की बनी हुई चीज़ों से प्रेम करें। हमें अपने देश के झण्डे के पीछे मर मिटना चाहिये। हमें अपने देश के झण्डे की शान को ऊंचा रखना चाहिये।

देश में शांति तथा व्यवस्था पुलिस और फौज द्वारा स्थापित की जाती है तो हमें चाहिए कि हम पुलिस तथा फौज की इस मामले में सहायता करें। चुनाव के समय हमें अपने देश की सरकार की सहायता करनी चाहिए। लड़ाई के समय फौज में भर्ती होकर देश-रक्षा करनी चाहिए। गवर्नमेण्ट ने जो टैक्स हमारे ऊपर लगाए हों उनको हमें समय पर चुकाना चाहिए। अवकाश मिले तो आनरेरी सर्विस देश की खातिर करना चाहिए। यदि हम डाक्टर की हैसियत से देश की मुफ्त सेवा करें तो इससे उत्तम कोई कार्य नहीं, यदि हम वकालत से अवकाश ग्रहण कर आनरेरी मजिस्ट्रेट बनें तो इसमें भी देश-सेवा है।

उपर्युक्त कमियों को दूर करने के पश्चात् हमको देश की बुरी रिवाजों का, कुरीतियों को दूर करना चाहिए। बाल-विवाह की प्रथा को बन्द करना चाहिए। नशीली चीजों के सेवन का त्याग करना चाहिए; छूआछूत की बीमारी को दूर भगाना चाहिए और साम्प्रदायिकता के विचारों का खण्डन करना चाहिए।

'कुटुम्ब सामाजिक एवं नागरिक जीवन की पहली पाठशाला है।'

एक सच्चे नागरिक में बहुत से गुण तथा अच्छी आदतें होनी चाहिए। एक सच्चे नागरिक से आशा की जाती है कि वह त्यागी हो, अनुशासन तथा आज्ञा पालन के सिद्धांतों से परिचित हो। उससे यह भी आशा की जाती है कि वह दूसरों के प्रति सेवा भाव रक्खे, दूसरों से मेल-जोल रक्खे, दूसरों के प्रति उसके जो कर्त्तव्य हों उनका पालन करे। उसे परिश्रमी होना चाहिए, उसे अपने सुख की उपेक्षा कर समाज की चिन्ता करनी चाहिए, उसे अपने व्यक्तिगत विचारों की पूर्ति के लिए हठ न करके आपस की सलाह तथा मेल से काम करना चाहिए। आओ हम देखें कि उक्त गुणों का आरम्भ सर्वप्रथम कुटुम्ब में कैसे होता है। कुटुम्ब माता-पिता, भाई

बहन, चाचा-चाची तथा अन्य घर के सदस्यों के मेल से बनता है। एक प्रकार से कुटुम्ब गाँव, ज़िला, सूबा व देश का छोटा रूप है जिस प्रकार एक नागरिक बड़े होने पर अपने देश के लिए कर्त्तव्यों का पालन करता है, उसी प्रकार हर एक अच्छे व्यक्ति को अपने कुटुम्ब के लिए अपने कर्त्तव्यों का पालन करना पड़ता है। ऐसी अनेक आदतें मनुष्य परिवार में ही सीखता है जिनका उसे नागरिक जीवन में प्रयोग करना पड़ता है।

हम देखते हैं कि पारिवारिक जीवन में परिवार के सुख के लिए, परिवार की शान तथा मान के लिए कुटुम्ब का हर एक सदस्य बड़े से बड़ा त्याग करने के लिए तैयार रहता है। माता-पिता के सम्मान के लिए उनके बेटे अपनी जान तक त्याग देने के लिए प्रस्तुत रहते हैं। माता-पिता अपनी संतान के लिए कष्ट सहते हैं, स्वयं उत्तम भोजन तथा वस्त्रों का त्याग कर अपने बच्चों को उत्तम भोजन खिलाते हैं, उनको उत्तम वस्त्र पहनने के लिए देते हैं। इस प्रकार हमने देखा कि त्याग का पाठ प्रथम परिवार में ही मिल जाता है।

हम परिवार मे रह कर बड़ों की आज्ञा मानते हैं, उनके बनाये हुए नियमों पर चलते हैं, हम उनके सामने किसी प्रकार का अभद्र बर्ताव नहीं कर सकते। इस प्रकार हम एक नागरिक की तरह परिवार म रहकर अनुशासन के सिद्धान्तों को मानते हैं, उन पर अमल करते ह।

हम अपने माता-पिता की आज्ञा उसी प्रकार मानते हैं जिस प्रकार एक सेना का सिपाही अपने सेनापति की आज्ञा मानता है। हम परिवार में रह कर एक दूसरे के प्रति सेवा-भाव रखते हैं। यदि कुटुम्ब का कोई सदस्य बीमार पड़ जाता है तो कुटुम्ब के अन्य सदस्य उसकी सेवा-शुश्रूषा करते हैं। अपने माता-पिता के वृद्ध हो जाने पर हम उनको प्रत्येक प्रकार का सुख पहुचाते हैं। माता-पिता हमारी

सेवा करते हैं, हम माता-पिता की सेवा करते हैं। इस प्रकार हम सेवा-भाव परिवार में रह कर ग्रहण करते है।

घर में कोई मनुष्य योग्य होता है; अन्य सदस्योंसे विशेष धन प्राप्त करता है, कोई सदस्य कम धन प्राप्त करता है, और कोई किसी विशेष कारण वश बिलकुल धन नहीं प्राप्त करता। अच्छे परिवार के सभी सदस्य मिल-जुल कर रहते हैं; आपस में द्वेष-भाव नहीं रखते। बहुत धन उपार्जन करने वाला अपने सुख का तथा आराम का ख्याल नहीं करता, किन्तु परिवार के सुख का ध्यान रखता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि परिवार में रह कर हमें मिल-जुल कर रहने की शिक्षा मिलती है। सारांश यह है कि उपर्युक्त सिद्धान्तोंके अनुसार एक नागरिक सभी अच्छी आदतों को जिनकी कि वह अपने नागरिक जीवनमें प्रयोग करता है, परिवार में रह कर सीख लेता है। उक्त सिद्धान्तों के आधार पर परिवार ही नागरिक जीवन की प्रथम पाठशाला है।

कुटुम्ब कुल और जाति का भेद

एक साथ रहने वाले स्त्री और पुरुषों के समूह को कुटुम्ब या परिवार कहते हैं जिनका उद्देश्य अपने वंश की उन्नति, रक्षा और विस्तार करना होता है। स्त्री और पुरुष के अतिरिक्त संतान की गणना भी कुटुम्ब मे होती है। यह शब्द अँगरेज़ी के शब्द फेमिली के अर्थ का सूचक है। कुटुम्ब दो प्रकार के होते है—एक विभक्त और दूसरा अविभक्त। विभक्त कुटुम्ब में पति-पत्नी और उनके बच्चे ही सम्मिलित होते हैं, किन्तु अविभक्त कुटुम्ब में पति-पत्नी तथा बच्चों के अतिरिक्त भाई, चाचा, भतीजे और उनके स्त्री-बच्चे भी सम्मिलित होते हैं। कुटुम्ब के विषय में इतना कह देने के पश्चात् अब हमको कुल के विषय में जानकारी प्राप्त करना चाहिए।

कुटुम्ब में जन-वृद्धि होना स्वाभाविक है। धीरे धीरे कुटुम्ब के सदस्य इतने बढ़ जाते है कि उनके लिए बड़े से बड़े घर में रहना कठिन हो

जाता है। इतना ही नहीं आपस में घनिष्ट मेल होने पर भी बड़े परिवार में रहना कठिन हो जाता है। इस कारण एक ही कुटुम्ब धीरे-धीरे कई कुटुम्बों में बँट जाता है। ऐसा होना सदैव जारी रहता है। इस प्रकार एक ही पूर्वज से उत्पन्न कुटुम्बों के समूह को कुल कहते हैं।

समाज में ऐसे कुल बहुत होते हैं जिनमें खान-पान और विवाह आदि का सम्बन्ध प्रचलित हो जाता है। इन एक से व्यवसाय, रीति रिवाज वाले, रोटी–बेटी का सम्बन्ध रखने वाले कुलों की जाति बन जाती है अर्थात् ऐसे कुलों को जाति कहते हैं। कुटुम्ब-कुल, और जाति में यही अन्तर है।

समाज और समुदाय में अन्तर

समाज, समुदाय से बड़ी चीज़ है। समाज कई समुदायों में बँटा हुआ होता है। इस प्रकार समाज का समुदाय एक अङ्ग होता है, किंतु समुदाय का समाज अङ्ग नहीं हो सकता।

प्रारम्भ में समाज बहुत संकीर्ण था। इसका सबसे पहला रूप कुटुम्ब था। कुटुम्ब बढ़कर कुल के रूप को प्राप्त हुआ और फिर कुल मिलकर समाज के रूप को प्राप्त हुए। इस प्रकार हम देखते हैं कि कुटुम्ब समाज की उत्पत्ति का कारण है। यद्यपि समाज का कुटुम्ब आजकल एक अङ्ग है। अब हम इस निश्चय पर आये कि समाज तथा समुदाय की उत्पत्ति का कारण एक ही चीज़ है, यानी दोनों की उत्पत्ति कुटुम्ब से हुई। इस प्रकार समाज तथा समुदाय में कुछ समानता है।

समुदायों के उद्देश्य संकुचित तथा संकीर्ण होते हैं, किंतु समाज के उद्देश्य विस्तृत तथा व्यापक होते हैं। समुदाय अपने ही सदस्यों की उन्नति चाहते हैं किन्तु समाज सब समुदायों की तथा उनके सब सदस्यों की उन्नति चाहता है।

समाज में बहुत प्राणी सम्मिलित होते हैं, किंतु समुदायों के सदस्यों की संख्या परिमित होती है।

समुदायों के उद्देश्यों की संख्या कम होने के कारण तथा कम सदस्य होने के कारण वे (समुदाय) शीघ्र उन्नति को प्राप्त हो जाते हैं, शीघ्र ही अपना सङ्गठन कर लेते हैं। किन्तु समाज का क्षेत्र बड़ा होने के कारण तथा उसके उद्देश्य भिन्न-भिन्न और बहुत होने के कारण वह (समाज) शीघ्र उन्नति नहीं कर सकता।

महात्मा गाँधी जी के जीवन की संस्मरण घटनायें

भारतीय रातनीति में भाग लेने के पूर्व गांधी जी ने दक्षिण अफ्रीका के प्रवासी भारतीयों के अधिकारों की रक्षा के लिए जिन उपायो का सहारा लिया था; उनमें सत्याग्रह सब से अधिक उल्लेखनीय है। इस अस्त्र के सफल उपयोग के कारण भारतवर्ष, दक्षिण अफ्रीका तथा अन्य देशों मे गांधी जी को बहुत ख्याति मिली। भारत लौटने के बाद उन्हों ने होमरूल लीग तथा कॉग्रेस के कार्यों में सहयोग करना आरम्भ किया। प्रायः सभी प्रश्नों की ओर उनको सत्य और नैतिकता के आधार पर स्थिर किया हुआ मत ही विशेष स्वीकार्य होता था। शायद इसी से प्रभावित होकर स्वर्गीय कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने सन् १९१६ में उन्हे महात्मा नाम से संबोधित किया और शीघ्र ही गांधी जी भारत के कोने-कोने में महात्मा गांधी के नाम से पुकारे जाने लगे।

यद्यपि १९१७-१८ और १९ ई० में गांधी जी ने चम्पारन-कैरा (बम्बई) तथा अन्य छोटे-मोटे सत्याग्रह आन्दोलनों का सूत्रपात और नेतृत्व किया। किन्तु १९२० में तिलक की मृत्यु, एनी बिसेण्ट के प्रभाव की कमी और गांधी जी के होमरूल लीग तथा खिलाफत कमेटी के प्रधान चुन लिये जाने के कारण उनका प्रभाव एक दम बढ़ गया और उस समय से लेकर अपनी मृत्यु पर्यन्त वह भारतीय जनता

के हृदय के साम्राट बने रहे। उन्होंने देश को जिस मार्ग पर चलाना चाहा उसी पर वह चला। हमारी भूलें और सफलताएं उन्हीं की देख-रेख में प्रकट हुईं। उनके नेतृत्व का फल यह हुआ कि जो देश सदियों से गुलाम था, जिसके ९० प्रतिशत से अधिक नागरिक अपढ़ और निहत्थे थे और जिनमें छुआछूत, जाति-पांति, परदा, गरीबी तथा साम्प्रदायिक दुर्भावना के भयंकर रोग घर किये हुए थे, वही १५ अगस्त, १९४७ ई० को दासता की ज़ंजीरों को तोड़ कर विश्व के स्वतंत्र राष्ट्रों में सम्मिलित हुआ और उसके नागरिकों के लिए एक उज्ज्वल तथा उत्कर्षमय भविष्य का द्वार खुल गया।

इस बड़ी सफलता की कुंजी क्या थी—गांधी जी की विशिष्ट रणनीति। एक छोटे लेख में उसकी सांगोपांग समीक्षा कदापि संभव नहीं है। अस्तु, हमें उसकी मुख्यतम विशेषताओं की ओर संकेत करके ही संतोष करना पड़ेगा।

अभूतपूर्व रणनीति

गांधी जी की रण नीति में सर्व-प्रथम विशेषता यह थी। वे सत्य के आधार पर ही युद्ध करना चाहते थे। झूठ, फरेब या कपट से यदि सफलता मिलने की निश्चित और शीघ्रतर संभावना भी हो तो भी वह उसे ठुकराने में तनिक भी नहीं हिचकते थे। वह ऐसे विचित्र राजनीतिज्ञ थे जो साधन और उद्देश्य दोनों को ही, सत्य और नैतिकता की कसौटी पर खरे उतरने पर ही अपनाता है। दूसरी बात जो विशेष ध्यान देने योग्य है वह है शत्रु के प्रति स्नेह की भावना। गांधी जी उन विरले पुरुषों में से थे जो व्यक्ति और उसके कार्यों में व्यावहारिक विलगाव कर सकने की क्षमता रखते थे। वह अंग्रेज जाति, सरकार अथवा उस के भारतीय स्थित किसी पदाधिकारी से तनिक भी द्वेष नहीं रखते थे। वे कहते थे कि व्यक्ति ईश्वर की छाया के अनुरूप निर्मित हुआ है। उससे द्वेष अथवा घृणा करना

मानव जाति को कलंकित करना है और परम पिता परमात्मा में अश्रद्धा प्रकट करना है। व्यक्ति तो केवल दया और प्रेम का पात्र है। हमें विरोध उसके कार्यों से हो सकता है और जहाँ किसी व्यक्ति अथवा सरकार के कार्य जन हित की उपेक्षा करते हों वहाँ उनका विरोध न करना सरासर कायरता है। अतः गांधी जी चाहते थे कि उनके सहयोग भारतीय स्वतंत्रता के युद्ध में अंग्रेज कर्मचारियों के प्रति बिना किसी प्रकार की दुर्भावना लाये और उनके प्रति प्रेम-भाव रखते हुए सत्याग्रह तथा हँसी-खुशी के साथ अत्याचार को सहन कर के साम्राज्यवादियों का मन पलट दें और उन्हें यह अनुभव करा दें कि भारतीयों की इच्छा के प्रतिकूल उन पर ज़बरदस्ती अधिकार बनाये रखना अंग्रेजों के ही लिए अहितकर है। इस तरह गांधी जी विद्वेष के ज़हर को विश्व-प्रेम के अमृत से नष्ट कर के ब्रिटिश सद्भावना के साथ भारतीय स्वतंत्रता को प्राप्त करना चाहते थे। भारतीयों की स्थिति और आदर्शों का ध्यान रखते हुए उन्होंने अपनी रणनीति में अहिंसा को एक विशेष स्थान दिया। निहत्थे भारत वासी सशस्त्र विरोध द्वारा सिवाय अंग्रेजी तोपों और मशीनगनों के सामने भुनते रहने के और कुछ नहीं कर सकते थे। इसलिये उन्होंने अहिंसात्मक असहयोग का ऐसा अस्त्र निकाला कि विपक्षी उसका काट न निकाल सके, साथ ही यह अस्त्र विश्व-प्रेम, सत्य और सद्भावना के आदर्शों के अनुरूप होने के कारण विश्व-इतिहास मे भारतवर्ष को नैतिक-नेतृत्व प्राप्त करा सकने की क्षमता रखता है। अहिंसा ही उस रणनीति का तीसरा विशिष्ट अंग है। चौथी विशेष बात यह है कि गांधी जी सदा ऐसे प्रश्न को लेकर आन्दोलन आरंभ करते थे जो किसी की कल्पना मे न आया हो, परन्तु जिसके आरम्भ होने पर जन-समुदाय में उसके लिये पर्याप्त उत्साह पैदा हो सके। अंतिम विशेषता गांधी जी की नीति यह थी कि वे अपने अनुयायियों की भूलों को उन्हीं के मत्थे न छोड़ कर उनका

उत्तरदायित्व अपने ऊपर समझते थे और तात्कालिक हानि-लाभ का ध्यान न रखते हुए अपने सहयोगियों के अनुचित कार्यों का उग्र विरोध करने में तनिक भी नहीं हिचकते थे।

गांधी जी द्वारा संचालित विभिन्न आन्दोलनों पर दृष्टि डालने से उपर्युक्त बातें पूरी तौर से प्रतिपादित होती हैं।

चम्पारन सत्याग्रह—१९१७ ई०

बिहार प्रान्त के चम्पारन जिले के किसान नील की खेती करने वाले अंग्रेजों के अत्याचारों से कई पीढ़ी से परेशान थे। अन्त में जब साहब लोगों ने नील की खेती बन्द भी की तो उन्होंने स्थानीय कर्मचारियों के सहयोग से अनेक अनुचित उपायों द्वारा खूब धन बटोरा। असहाय किसान तड़प कर रह गया। सरकारी कर्मचारियों ने उनकी फरियाद पर कुछ ध्यान न दिया तब उनके प्रतिनिधि गाँधीजी के पास पहुँचे, वह तुरन्त मोतिहारी गए और जब उन्हें वापस जाने की आज्ञा दी गई तो उन्होंने इसे मानने से इन्कार कर दिया और गिरफ्तार किए जाने पर ऐसी दलील पेश की कि न्यायाधीश ने उनकी सदाशयता से प्रभावित होकर उन्हें वहाँ रहने की आज्ञा दे दी। सरकार के सामने कोई माँग रखने के पूर्व उन्होंने स्वयं गाँव-गाँव का दौरा करके बीस हज़ार किसानों के बयान लिये। फलतः जब उन्होंने किसानों की शिकायतों को सरकारी कमीशन के सामने पेश किया तो उनकी अधिकतर मांगें स्वीकृत हो गईं। भारत में सत्याग्रह आन्दोलन की यह पहली विजय थी।

कैरा सत्याग्रह—सन् १९१८ ई०

बम्बई प्रान्त में कैरा के किसानों ने चौथाई से कम पैदावार होने के कारण लगान में छूट माँगी परन्तु सरकारी कर्मचारियों ने चौथाई से अधिक पैदावार मान कर उनकी प्रार्थना अस्वीकार करदी। जब इस अत्याचार से मुक्ति पाने के लिए गांधीजी से मदद मांगी गई तो

उन्होंने किसानों को संगठित करके दीक्षित वालंटियरों द्वारा उन्हें यह समझाया कि अत्याचार का विरोध करने में यदि ज़मीन, जानवर और घर भी छिन जाय तो भी निर्भय होकर न्याय के ऊपर दृढ़ रहना चाहिये। किसानों ने एसा ही किया और यद्यपि उन्हें अनेक कष्ट सहना पड़े परन्तु अन्त मे सरकार को उनकी मांग स्वीकार करनी पड़ी।

रौलट बिल का विरोध—१९१९ ई०

फौजदारी क़ानून में संशोधन करने के लिये जब एक अत्याचार और अन्यायपूर्ण रौलट बिल बना तो गाँधी जी ने उसका विरोध करने के लिए तीसरा सत्याग्रह चलाया। इसी बीच में अप्रैल १९१९ई० में जब डाक्टर सत्यपाल और डाक्टर किचलू काँग्रेस अधिवेशन की तैयारी करने के लिये अमृतसर गये तो सरकार ने उन्हें गिरफ्तार करके गुप्त स्थान में भेज दिया। इस पर जनता मे काफ़ी सनसनी फैली और कई जगह सत्याग्रहियो ने सरकारी इमारतों को जलाने, तार काटने, अंग्रेजों और सरकारी अफ़सरों की हत्यायें करने की भारी भूलें कीं। यह सच है कि सरकार के अत्याचारपूर्ण व्यवहार ने उनको ऐसा करने के लिए बाध्य किया था, परन्तु गाँधी जी की दृष्टि में पागलपन का जवाब पागलपन से देना सत्याग्रही के लिए सर्वथा अनुचित था। इसलिये जब विषय-निर्धारिणी-समिति ने पंजाब और गुजरात में की गई हत्याओं के भर्त्सना करने वाले प्रस्ताव को अस्वीकृत कर दिया तो गाँधी जी ने गंभीरता के साथ कहा कि तब फिर काँग्रेस में मेरे लिये कोई स्थान नहीं है। और उस प्रस्ताव के पुनः स्वीकृत किये जाने पर ही वह काँग्रेस में रहे। उन्हें विश्वास हो गया कि अहिंसात्मक आन्दोलन के लिये और अधिक तैयारी की आवश्यकता है। इसलिये उन्होंने सत्याग्रह बन्द कर दिया।

असहयोग आन्दोलन–१९२० ई०

मान्टेग्यू--चेम्सफोर्ड-सुधार–नियमावली भारतीयों की आकाँक्षाओं को पूर्ण नहीं कर सकी। उसी समय ब्रिटिश सरकार ने टर्की के सुल्तान के साम्राज्य को छिन्न-भिन्न करने का निश्चय किया। भारतीय मुसलमान उन्हें खलीफा कहते थे, इसलिये उनके प्रति किये गये दुर्व्यवहार से भारतीय मुसलमानों में बड़ी उत्तेजना फैली। गाँधीजी ने हिन्दू-मुस्लिम भाई चारे की नींव दृढ़ करने के लिए खिलाफत के प्रश्न पर हिन्दुओं को सरकार से असहयोग करने के लिए तैयार किया। टर्की के प्रश्न पर एक अखिल भारतीय आन्दोलन छेड़ना, भारतीय स्वतन्त्रता की लड़ाई के मार्ग से बहक जाना मालूम होता था, परन्तु अन्ततोगत्वा यही सिद्ध हुआ कि गाँधी जी का नेतृत्व इस बार भी ठीक रहा। जेल जाने वालों की देश भर में बाढ़ सी आ गई। वकालत, सरकारी नौकरी, सरकारी स्कूल, सरकारी न्यायालय, विदेशी वस्त्र सब का बहिष्कार किया जाने लगा और देश भर में बलिदान के आधार पर अधिकार प्राप्त करने के लिए अभूतपूर्व शक्ति पैदा हो गई, परन्तु चोरी-चोरा की घटना हुई कि गाँधी जी ने यकायक आन्दोलन बन्द कर दिया। उन्होंने फिर दोहराया कि आत्म-शोधन और आत्म--संयम की अब भी कमी है, बिना पूर्ण अहिंसा के लक्ष्य की प्राप्ति कठिन है।

अवज्ञा–आन्दोलन और नमक कर--१९३० ई०

सन् १९२०--३० ई० तक काँग्रेस की शक्ति बिखरी रही और कोई अखिल भारतीय आन्दोलन सिवाय रचनात्मक कार्रवाइयों के नहीं चलाया गया। ब्रिटिश सरकार पूर्ण श्वेत कमीशन के सुझावों के आधार पर भारतीयों को स्वतन्त्रता प्राप्ति से वंचित रखना चाहती थी। उस समय गाँधी जी ने डांडी जाकर नमक--कर तोड़ने का

निश्चय किया। बस देश भर मे आग लग गई। सभी जगह नमक बनाने वाली हाँडियाँ चूल्हों पर चढ़ गईं। पुलिस के डण्डों और गोलियों का कुछ प्रभाव नहीं पड़ा। नियम भंग करने वालों के लिए सरकारी जेलो मे जगह न रहने पर स्पेशल कैम्प खोले गये और सहस्रों के जेल जाने के मन्सूबे स्थानाभाव के कारण पूर्ण न हो सके। सरकार से जब कुछ करते न बना तो उसने समझौता करके गाँधी जी को गोल मेज़ कान्फ्रेंस में सम्मिलित होने के लिये राजी कर लिया।

व्यक्तिगत अवज्ञा-आन्दोलन—१९४० ई०

सन १९३५ ई० का कानून बनने के पश्चात प्रान्तीय स्वराज्य की स्थापना हुई और १९३७ ई० में ८ प्राँतों में कांग्रेस मंत्रिमडल बन गये, परन्तु १९३९ ई० में भारतीयों की सम्मति के बिना भारत को जर्मनी के विरुद्ध लड़ाई में फंसा देने के कारण इन मत्रिमंडलों ने त्याग पत्र दे दिये। गांधी जी ऐसे अहिंसा के पुजारी के निकट एक विश्व व्यापी युद्ध आरम्भ करना तथा उसमें सहयोग देना महापाप था। अतः उन्होंने युद्धोद्योग में भाग न लेने के पक्ष मे प्रचार करना अपना कर्तव्य समझा। सरकार के विरोध करने पर उन्होंने १९४० ई० में व्यक्तिगत अवज्ञा—आन्दोलन चलाया और विचार स्वातन्त्र्य के अधिकार को उद्घोषित किया।

सरकार के अत्याचार बढ़ते गये। युद्धके लिये चन्दा वसूल करने में बेहद ज़बरदस्ती की गई। बंगाल में नौकाओं से जीविका कमाने वालों की नावें सरकारी काम के लिये छीन ली गईं। देश की तबाही बढ़ने लगी। अस्तु गांधी जी ने नया क़दम उठाने का निश्चय किया।

भारत छोड़ो आन्दोलन—१९४२ ई०

गांधी जी ने सोचा कि युद्ध मे भाग लेने की इच्छा न होने पर भी एक ओर तो अंग्रेज़ युद्ध की आड़ मे जनता को पीस रहे हैं और

दूसरी ओर जापानी फौजें भारतीय सीमा के निकट आ रही हैं। इसलिये उन्हें विश्वास हो गया कि भारत का तात्कालिक और स्थायी कल्याण इसी में है कि अंग्रेज भारत छोड़कर चले जाँय। 'अगस्त-प्रस्ताव' की यही पृष्ठ भूमि है। परन्तु फिर भी शत्रु को शिकायत न रहे इसलिये उन्होंने आन्दोलन आरम्भ करने के पूर्व वाइसराय से भेंट करनी चाही। नौकरशाही ने इस सौजन्य का जवाब देशव्यापी गिरफ़्तारियों से दिया।

सन १९४२ ई० का विद्रोह आरम्भ हुआ। गांधी जी ने जेल से निकलने पर हिंसात्मक कार्यों की फिर निन्दा की और उनके रुख से ब्रिटिश सरकार ऐसी प्रभावित हुई कि पहले काँग्रेसी नेता रिहा किये गये और फिर दो वर्ष टाल-मटोल करने के बाद अंग्रेजों ने भारत छोड़ना स्वीकार कर लिया। असंतुष्ट और खिन्न होकर नहीं वरन् सद्भावना और सहयोग की आशा लेकर।

उपसंहार

यह है गांधी जी के राजनीतिक आन्दोलनों का संक्षिप्त इतिहास। इन सभी में उन्होंने अपनी विशिष्ट नीति को बर्ता। उन्होंने कई बार अपने सहयोगियों की भूलों पर उपवास किये और इस भाँति उनके हृदय में क्षोभ पैदा करके उन्हें ऊपर उठाने का प्रयास किया। अशिक्षा, भुखमरी, ग़रीबी, तथा सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिये उन्होंने अनेक रचनात्मक कार्यक्रम उपस्थित किए। सरल और सस्ती शिक्षा के प्रचार, नशीली वस्तुओं के निषेध, हिन्दू-मुस्लिम-ऐक्य, ग्रामोद्योग, अछूतोद्धार, खादीप्रचार आदि कार्यों की ओर उन्होंने राजनीतिक आन्दोलनों की अपेक्षा अधिक ध्यान दिया। यही कारण है कि राजनीतिक प्रगति के साथ-साथ भारतवासी आनेवाली स्वतंत्रता को सँभाल सकने की अधिकाधिक क्षमता भी प्राप्त करते गये।

अतः विदेशी सत्ता के मूलोच्छेद के लिये निरन्तर आन्दोलन करते रहने के साथ ही उन्होंने सामाजिक दोषों, कुरीतियों और कुविचारों से भी आजीवन युद्ध किया। एक ओर दास्य को मिटाकर देश स्वतंन्त्र किया तो दूसरी ओर जनता में सामाजिक विकास के लिये नयी स्फूर्ति पैदाकी। उनकी युद्ध-नीति संहार नहीं अपितु सृजनकी द्योतक है। वह मानव-इतिहास म एक अनोखी वस्तु है।

—प्रो० अवधविहारी पाण्डेय, एम०ए०

देश-विदेश के त्याग, साहस और धैर्य की कहानियाँ

१—वीर-शिरोमणि गोरा और बादल

खेत न छाँड़ै सूरमा, जूझै जो दल माहिं।
आसा जीवन मरन की, मन में आनै नाहिं॥ कबीर

सिंहल द्वीप के राजा हम्मीर शेख की परम सुन्दरी पुत्री और चित्तौड़ के राणा भीमसिंह की धर्मपत्नी पद्मिनी की कथा भारत के अनपढ़ लोग तक भलीभाँति जानते हैं। सन् १३०३ ई० में देहली के बादशाह अलाउद्दीन खिलजी ने इसी सुन्दरी पद्मिनी से विवाह करने की लालसा से चित्तौड़ पर चढ़ाई की थी। चित्तौड़गढ़ के चारों ओर घेरा डाल कर बादशाह अलाउद्दीन ने यह सूचना दी कि पद्मिनी के मिलते ही हम वहाँ से लौट जायँगे। इस अपमानजनक सूचना को पाकर मेवाड़ी राजपूतों का रक्त खौलने लगा; परन्तु राणा भीमसिंह व्यर्थ में रक्त न बहाना चाहते थे। अतः उन्होंने अलाउद्दीन की इस शर्त को कि पद्मिनी की छाया केवल दर्पण में दिखादी जाय, स्वीकार कर लिया।

बादशाह को चित्तौड़ के राजमहलों में बुलाया गया। जब बादशाह पद्मिनी की छाया देख कर लौटा तो शिष्टाचार के अनुसार

राणा भीमसिंह अलाउद्दीन को विदा करने के लिए दुर्ग के बाहर तक आये और बातें करते-करते बहुत दूर निकल गये। इसी समय समीप ही के एक गुप्त स्थान से कुछ शस्त्रधारी सैनिक सहसा राणा पर टूट पड़े और उनको बांध कर शिविर मे ले गये।

महाराज भीमसिंह के बंदी होने का समाचार शीघ्र ही चित्तौड़ में चारों ओर फैल गया। अपने महाराज को मुक्त करने के लिए राजपूत लोग अनेक प्रकार की मंत्रणाएँ करने लगे। बहुत कुछ सोच-विचार के पश्चात् यह निश्चय हुआ कि बादशाह की सेवा में एक दूत यह समाचार लेकर जाय कि पद्मिनी आपसे विवाह करने के लिए तैयार है, यदि आप पद्मिनी को साथ में अपनी सहेलियाँ लाने की आज्ञा दे दें।

कामातुर अलाउद्दीन ने यह बात स्वीकार करली। उसे यह न सूझा कि हिन्दू-रमणियां कलेजे में छुरी भोंक कर अथवा अग्नि में भस्म होकर प्राण त्याग सकती है, परन्तु शरीर में प्राण रहते दम तक पवित्र सतीत्व को कदापि हाथ से नहीं दे सकतीं।

निश्चित समय पर अस्त्र-शस्त्रों स सुसज्जित एक सैनिक डोली के भीतर बैठा और ६ सैनिक डोली को कंधो पर उठा कर बादशाह के शिविर को रवाना हुए। इसी प्रकार ७०० डोलियां मे राजपूत योद्धा लड़ने को कटिबद्ध थे। बादशाह ने पद्मिनी स मिलने के लिये भीमसिंह को केवल आधा घटा दिया। राजपूतों ने राणा भीमसिंह को एक तीव्रगामी घोड़े पर सवार करा चित्तौड़-दुर्ग मे पहुँचा दिया, और बादशाही सेना पर टूट पड़े। दोनों ओर से भीषण युद्ध होने लगा।

उस युद्ध में पद्मिनी के चाचा गोरा और उसके भाई बादल ने जिस धैर्य, साहस और वीरता का प्रदर्शन किया वह राजस्थान के इतिहास में अमर रहेगा। बारह वर्ष के वीर राजपूत बालक बादल का

अद्भुत रण-कौशल, उसकी अपूर्व काट-छाँट तथा वीरता देखकर केवल राजपूतों को ही नहीं, वरन् मुसलमानों को भी चकित होना पड़ा। उसको लड़ता देख राजपूत सेना में एक आश्चर्यजनक नवीन उत्साह का संचार हो गया। वीरवर गोरा तो समर-भूमि में काम आ गये, परन्तु उनका भतीजा बादल घायल होकर कुछ वीर राजपूतों के साथ चित्तौड़ को लौटा।

गोरा की स्त्री ने बादल से पूछा—बादल! मुझे हर्ष है कि मेरे पति ने स्वदेश की रक्षा में अपना जीवन विसर्जन किया, परन्तु मैं प्राणेश्वर की युद्ध में वीरता के विषय में कुछ जानना चाहती हूँ।

शोकातुर वीर बादल ने रुँधे हुए गले से उत्तर दिया—चाचाजी ने शत्रुओं के सिर भुट्टे की तरह उड़ा दिये। किसी का मृत शरीर उनके सिर के नीचे तकिये की जगह और किसी की लोथ बगल में पड़ी हुई थी। प्राणेश्वर की इस वीरता का परिचय पा गोरा की पत्नी सहर्ष चिता में बैठ भस्म हो गई।

ऐसे आड़े समय में भक्त-शिरोमणि गोरा और बादल ने ही चित्तौड़ के राणा का आन-मान और मर्यादा की रक्षा की। बादशाह अलाउद्दीन को निराश होकर लौटना पड़ा। यही कारण है कि भारत के वीरों में गोरा और बादल का विशेष स्थान है।

२—महान् त्याग

अमर नर-देह का, बस एक पर-उपकार है।
हार को भूषण कहै, उस बुद्धि को धिक्कार है॥

—रामचरित उपाध्याय

बहुत समय बीता, इटली के एक धनाढ्य के केवल एक ही पुत्र था। माता-पिता की बड़ी उत्कट इच्छा थी कि उसका बेटा जज बने और इसी अभिप्राय से उन्होंने अपने प्यारे इकलौते पुत्र को

इटली की राजधानी रोम नगर में वकालत की परीक्षा पास करने के लिये भेज दिया।

परन्तु बैनडिक्ट नाम के उस लड़के के दिल को रोम नगर के आमोद-प्रमोद मय विलासपूर्ण जीवन को देखकर गहरा धक्का पहुँचा और वह ऐसे निकृष्ट जीवन से छुटकारा पाकर एकान्त में परमात्मा की पूजा करने की इच्छा से घने जंगल पहाड़ों में चला गया परन्तु उसकी बुड्ढी धाय ने जो उससे बड़ा प्रेम करती थी, उसका साथ न छोड़ा।

वह बहुत दिन तक इसी प्रकार जंगलों-पहाड़ियों में रहता रहा। अंत मे उसका मन इस जीवन से भी ऊब गया! कारण, उसे यह सहन न होता था कि वह बुड्ढी धाय उसके लिये भोजन लाये। अतः वह इन पहाड़ियों से भी भाग निकला।

इस बार वह बहुत ही दूर घने जंगल में निकल गया और पहाड़ की एक गुफा मे रहने लगा। इस प्रकार रहते-रहते बहुत-से वर्ष बीत गये। जब लोगों ने सुना कि पहाड़ की गुफा मे एक महात्मा रहता है तो वे उसके दर्शन को जाने लगे। साधुओं के एक दल पर तो बैनडिक्ट की शिक्षाओं का इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि वे उस महात्मा से अपना सरदार बनने की प्रार्थना करने लगे। बहुत कुछ वाद-विवाद के पश्चात् बैनडिक्ट इस पर राजी हो गया।

जब बैनडिक्ट ने देखा कि साधु लोग निठल्ला जीवन व्यतीत करते हैं तो उसने उनके जीवन को संयमशील और उद्यमी बनाने का प्रयत्न किया तब तो साधु लोग अपने किये पर पछताने लगे। उनका यह ढंग देखकर बैनडिक्ट फिर अपनी गुफा में लौट गया। वहीं फिर बहुत से साधु-महात्मा उसकी सत्संगति में निवास करने के लिये आने लगे। बैनडिक्ट ने भी उनके निवास के लिए आश्रम बनवा

दिये। इन साधुओं का जीवन बड़ा ही उच्च रहता था। वे यथाशक्ति अपने जीवन में निर्धनता, पवित्रता, संयम तथा आज्ञा-पालन आदि उत्कृष्ट गुण लाने का प्रयत्न करते थे। इसके अतिरिक्त दिन में ७ घंटे हाथ से काम करना इनके लिये अनिवार्य था।

एक रोज़ निर्धनों की सेवा-सुश्रूषा करने में महात्मा बैनडिक्ट को ज्वर हो गया जिस सेवा के करने में उसके जीवन का एक-एक क्षण व्यतीत हुआ था उसी सेवा करने मे वह महात्मा परम गति को प्राप्त हो गए।

पाठक! कैसा अनोखा जीवन है इस त्यागी महापुरुष का! यदि ध्यान पूर्वक विचार किया जाय तो सब बातों का सार यही निकलता है :—

सेवा ही मीठा मेवा, भवसागर का खेवा है।

—अध्यापक मुरारीलाल शर्मा।

अभ्यास

१—अछूतोद्धार पर एक छोटा सा लेख लिखो।

२—'समाज और मनुष्य का क्या सम्बन्ध है' इस पर संक्षिप्त निबन्ध लिखो।

३—पं० जवाहरलाल नेहरू, स्वर्गीय सरोजिनी नायडू, सरदार वल्लभभाई पटेल के जीवन की संस्मरणात्मक घटनायें संक्षिप्त में वर्णन करो।

४—अभिमन्यु, नेपोलियन बोनापार्ट, सरदार भगतसिंह के धैर्य, साहस और वीरता के कार्यों का विवरण लिखो।

———

विशेष सूचना :—कक्षा ७ के निर्दिष्ट विषय :—जैसे नवीन भूगोलिक यात्राये तथा ऐवरिष्ट पर्वत, उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव यात्राएँ

सामाजिक सेवा और सामाजिक स्वास्थ्य, भारत एवं अन्य देशों की कृषि, भारत तथा अन्य देशों के कृषकों का जीवन इत्यादि हैं। इन विषयों पर कक्षा ७ में तुम पढ़ चुके हो और प्रत्येक विषय पर पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी हैं। इसलिए इस पुस्तक मे इन विषयों को स्थान नहीं दिया जाता। यदि किसी को इन विषयों की जानकारी प्राप्त करने की आवश्यकता पड़ जाय तो वह बाज़ार से पुस्तकें ख़रीद कर पढ़ सकता है।

परिशिष्ट

शीर्षकों की सहायता से निबन्ध लिखना

किसी विषय पर निबन्ध लिखने से पहले उसके सम्बन्ध में अध्ययन और मनन करो। फिर विचारों को क्रम देकर शीर्षक के रूप में लिखो। तब शीर्षकों को विस्तार देते हुए निबन्ध लिखो।

(पिछली कक्षाओं में कुछ विषयों पर शीर्षक दिये जा चुके हैं।)

कुछ निबन्धों के शीर्षक दिए जाते हैं।

किसी जीव पर निबन्ध—

शीर्षक—(१) देश (२) आकार-प्रकार (३) भोजन (४) रहन-सहन (५) स्वभाव (६) उपयोग।

जीवन-चरित्र पर--

शीर्षक—(१) जन्म-स्थान (२) माता-पिता व जन्मकाल (३) बाल्यावस्था, पालन-पोषण या शिक्षा (४) जीवन की मुख्य घटनाएँ (५) उन्नति के साधन (६) सार्वजनिक कार्य (७) अन्तिम अवस्था-मृत्यु।

पदार्थ पर—

शीर्षक-(१) प्रकार (२) कहाँ पाया जाता है। (३) रंग-रूप (५) गुण (६) उपयोग।

स्थान-वर्णन पर—

शीर्षक—(१) स्थित-स्थान (२) ऐतिहासिक या भौगोलिक महत्त्व (३) शोभा और दर्शनीय स्थान (४) निवासियों का रहन-सहन (५) प्रबन्ध (६) व्यवसाय तथा प्रसिद्धि के अन्य कारण।

संस्था पर—

शीर्षक—(१) आरम्भ काल (२) प्रवर्तक (३) उद्देश्य व नियम (४) कार्य (५) वर्त्तमान अवस्था (६) सुधार।

ऋतु-वर्णन पर—

शीर्षक—परिवर्त्तन का महत्त्व (२) आरम्भ (३) प्राकृतिक दृश्य और शोभा (४) मनुष्य और जीव-जन्तुओं की अवस्था (५) आवश्यकता (६) अन्त।

व्याख्यात्मक विषय पर

(क) व्यापार

शीर्षक—(१) व्यापार किसे कहते है? (२) व्यापार की आवश्यकता (३) व्यापार से लाभ (४) व्यापार के साधन (५) मनुष्य-जाति पर व्यापार का प्रभाव तथा इङ्गलैंड, जर्मन, जापान और अमेरिका देशों का मालामाल होना। (६) व्यापार से राज्य की जड़ जमाना तथा भारत का निर्धन होना। (७) व्यापार धन का खज़ाना है (८) व्यापार की हानि भी प्यारी है और लाभ भी प्यारा है ।

(ख)

शीर्षक—परिचय, परिभाषा, गुण-दोष, हानि-लाभ, संचय करने की आवश्यकता, संचय करने के उपाय, समालोचना, उपसंहार।

१—मधु (शहद)

कुछ लेखों के नमूने दिये जाते हैं:—

संक्षिप्त निबन्ध

शीर्षक—(१) मधु क्या है ? (२) मधु किस प्रकार एकत्रित होता है ? (३) मधु कहाँ पाया जाता है ? ४) मधु का स्वाद, रंग कैसा होता है ? (५) मधु का गुण और उपयोग ।

(मधु)

१—पुष्पों का रस जिसे मधुमक्खी एकत्रित करती हैं 'मधु' कहलाता है । इसी को शहद भी कहते हैं ।

२—मक्खियाँ पुष्पों पर बैठ कर रस को चूस लेती हैं, फिर अपने छत्तों में इकट्ठा करती हैं । जब बहुत सा मधु-एकत्रित हो जाता है, तो बहेलिया अथवा अन्य कोई मनुष्य छत्ते को तोड़ कर उसमें से मधु निचोड़ लेता है ।

३—मधु-मक्खी झाड़ी, वृक्ष की खोंतर, डाली तथा घरों में कहीं भी जहाँ वह चाहती हैं अपना छत्ता रख लेती हैं ।

४—मधु का स्वाद मीठा होता है । यह लाल रंग का द्रवित लसदार पदार्थ है । सर्दी से जम जाता है ।

५— मनुष्य दूध या पानी में डाल कर पीते हैं, दवाई के साथ खाया जाता है ।

अभ्यास

१—उपर्युक्त संक्षिप्त निबन्ध को विस्तार कर पूरा निबन्ध लिखो यह निबन्ध किस प्रकार का निबन्ध होगा ?

२--आगरा

शीर्षक—

(१) ऐतिहासिक वर्णन ।

(२) जलवायु और उपज, प्राकृतिक वर्णन ।

(३) प्रबन्ध ।
(४) दर्शनीय वस्तुएँ तथा इमारतें ।
(५) कारीगरी तथा प्रसिद्ध वस्तुएँ ।

आगरा

१—यह नगर उत्तर प्रदेश में यमुना नदी के तट पर स्थित है । इसका प्राचीन नाम अकबराबाद अकबर बादशाह का बसाया हुआ है । यमुना जी के तट पर सुदृढ़ लाल पत्थर का क़िला बना हुआ है । यह मुसलमान बादशाहों की राजधानी रहा । मुग़लों की यह मुख्य राजधानी था धीरे-धीरे इसका नाम आगरा हो गया । मुग़ल बादशाह शाह-जहाँ ने शहर से २ मील के फासले पर ताजमहल बनवाया जो बहुत सुन्दर इमारत है ।

२—यहाँ का जलवायु गर्मी में अधिक गर्म, सर्दी में अधिक सर्द और यहाँ वर्षा भी काफी होती है । इस लिए यहाँ का जलवायु मातदिल है । यहाँ पर सब प्रकार के अनाज तथा साग-तरकारियाँ पैदा होती हैं और रेती में गन्ने बहुत पैदा होते हैं ।

३—नगर का प्रबन्ध म्यूनिस्पल बोर्ड करती है, यही शहर में सफाई, रोशनी, पानी तथा शिक्षा का प्रबन्ध करती है । यहाँपर कितने ही लड़कों तथा लड़कियों के स्कूल हैं, सड़कों तथा गलियों में लालटेनें लगी हैं । कई अस्पताल भी खुले हैं जिनमें इलाज किया जाता है ।

४—यहाँ पर बादशाही इमारतें जैसे :—ताजमहल, मोती मसजिद, जुम्मा मसजिद, क़िला, रामबाग़ और ऐत्माद्दौला देखने योग्य हैं और राधास्वामियों का दयालबाग़ भी बहुत अच्छी

दर्शनीय जगह है।

५—यहाँ पर पत्थर तथा संगमरमर का काम अच्छा होता है और दरी, नेंचे, दालमोंठ और पेठा बहुत ही प्रसिद्ध हैं। यहाँ के जूते भी अच्छे बनते हैं जो दूसरी जगहों को भेजे जाते हैं।

अभ्यास

१—ऊपर दिये हुए संक्षिप्त निबन्ध का विस्तार करके पूरा निबन्ध लिखो।

बिना शीर्षक के लेखों के नमूने

जूते की आत्म-कहानी

संसार बड़ा स्वार्थी है। कोई मरे या जीये, लोगों को अपने काम से काम। वे रात-दिन हमें कुचलते रहते हैं और हम सदैव उन्हें अपने हृदय में स्थान देते है, फिर भी मेरी दशा पर किसी को तरस नहीं आता। किसी ने मेरा चरित्र तक नहीं लिखा। लोग यदि कोई अच्छा काम करते हैं तो अपनी प्रशंसा चाहते हैं। वक्ता और लेखक यही देखा करते हैं कि उनकी तारीफ होती है या नहीं। कविगण तो अपनी प्रशंसा आप कर लेते हैं, समालोचक गण अपने मित्रों की तारीफ के पुल बांध देते हैं। यदि किसी से उनके गुण गाते न बन पड़े अथवा दोषोद्घाटन हो जाय तो उनके हिमायती हाथ धोकर पीछे पड़ जाते हैं। आलोचक बाल की खाल निकाल कर विपक्षियों को मूर्खता की उपाधि से विभूषित करते और पक्ष वालों की श्रेष्ठता का मुकुट पहना कर बरजोरी उच्चासन पर बिठा देते हैं। यही तमाशा देखकर तो आज मैं स्वयं अपनी कहानी लिखने बैठा हूँ। पाठकगण मुझे आत्म-गुण-गाने और अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनने का दोष न दें।

आप मानें या न मानें परन्तु मैं भी द्विज हूँ। मेरा पहला जन्म प्राणियों के जन्म के साथ होता है। मैं उनके शरीर की रक्षा करता हूँ। यदि मैं न रहूँ तो हड्डियों को कौन सम्हाले? गर्मी और सर्दी, धूप मेंह सब मुझी को सहने पड़ते हैं।

मेरा जन्म जीवों के मरने पर होता है। मनुष्य चर्म तो किसी के काम नहीं आती किन्तु मैं तो उन जीवों के चर्म से बनता हूँ जिन्हें सभ्यताभिमानी मनुष्यों ने पराधीन कर रखा है और उन्हें वे पशु के नाम से पुकारते हैं। उस समय की वेदना का स्मरण कर मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं, आँखों से अविरल अश्रु-धारा बहने लगती है। मैं बड़ी बेरहमी के साथ शरीर से जुदा किया जाता हूँ। कभी कभी तो लोग जीवित अवस्था में गला काट कर मुझे निकाल लेते हैं। बेचारे पशु तड़प-तड़प कर प्राण देते हैं। इस निर्दयता पर किसी की दृष्टि नहीं जाती। यह सब कृत्य एकान्त में किये जाते हैं जिससे आँखें मेरी दुर्दशा देख कर कहीं कुपित न हो जाँय। और हृदय पसीज न जाय। फिर भी मुझे बड़ा सन्तोष है कि मैं मनुष्यों के काम आता हूँ।

मेरा जन्म इङ्गलैण्ड की फैक्टरी में हुआ था। मेरा लड़कपन बड़े सुख से बीता। मैं हाथों-हाथ पाला गया। अनेक-अनेक प्रकार से मेरी सेवा कीगई। मैं रंगा और कमाया गया। इस सेवा से मैंने अपनी कठोरता छोड़ कोमलता धारण करली। इसके उपरान्त मैं दूसरे कारखाने में भेजा गया वहाँ मुझे यह रूप दिया गया जिसे आजकल आप देखते हैं। मालिक के नाम पर मेरा नाम 'डासन बूट रक्खा गया। जिन्होंने मेरा नाम किया था मैंने उनका? इसपर आप भी विचारकर लीजिए मैंने खूब दुनियाँ देखी और बड़ा नाम कमाया। मैं खूब चला। यह बात महाकवि अकबर को खटकी। उन्होने एक शेर लिख ही डाला।

बूट डासन ने बनाया, मैंने एक मजमूँ लिखा।
मजमूं तो चलने न पाया, लेके जूता चल गया॥

मेरी जाति वाले मनुष्यों की अनेक प्रकार से सेवा किया करते है। उस पर आप स्वयं एक दृष्टि डाल लें। मैं तो अपनी तथा भाई-बहनों की कहानी कहता हूँ। मेरे अनेक नाम और विशेषण है। मैं आजकल सर्वव्यापी हो रहा हूँ। ऋषि-मुनि लोग मेरा उतना सम्मान नहीं करते जितनी आजकल के शौक़ीन युवक। अतएव मैं उन्हें हृदय से धन्यवाद देता हूँ। वे मुझसे डरते हैं क्योंकि किसी की इज्ज़त ले लेना हमारे बाँए हाथ का काम है।

आजकल मेरे बुढ़ापे के दिन हैं। अवस्था जर्जर होगई है। और चेहरा बिगड़ गया है। मेरा जोड़ा भी फूट गया है। पहिले तो लोग हम दोनों को काँटों में घसीटते थे और पत्थरों पर पटकते थे किन्तु अब मुक्ति मिलगई। अब मैं वियोग में एक कोने में पड़ा २ रोया करता हूँ और जीवन की अन्तिम घड़ियाँ गिन रहा हूँ। बस यही मेरी आत्म-कहानी है।

—मिश्रबन्धु

मोहन का विवाह

तड़ तड़ तड़ तड़ झैयम, तड़ तड़ तड़ तड़ झैयम, की आवाज़ जो मेरे कानोंमें पड़ी, मैं तुरन्त उठ बैठा जहाँ से बाजों की आवाज आ रही थी, दौड़ कर वहीं पहुँचा। मालुम हुआ कि मोहन का ब्याह है। बरात आज ११ बजे की गाड़ी से देहली जायगी। गाँव के सब लोग मोहन के पिता की सहायता में ऐसे जुटे हैं मानो उन्हीं के घर का काम हो। सब लोग बरात में चलने की तैयारी कर रहे हैं। मेरी भी इच्छा बरात में चलने को उतावली करने लगी। चट दौड़ कर घर आया। देखा पिताजी बरात में जाने की तैयारी में लगे हैं। मैंने रोकर कहा कि मैं भी आपके साथ बरात चलूँगा। उन्होंने बहुत रोका, परन्तु मेरा बाल-हठ देखकर वे मुझे साथ ले चलने को राज़ी हो गये। मैं भी कील-काँटे से लैस हो तैयार होगया।

बरात गाजे-बाजे के साथ स्टेशन की ओर चल पड़ी। सब के

आगे मोहन जामा जोड़ा पहने, सिर पर मोहर रक्खे पालकी पर चढ़ा जा रहा था। उसके पीछे सवारियों पर चढ़े बराती लोग थे। स्टेशन आगया। वहाँ भीड़ का कुछ ठिकाना न था। टन टन टन घंटी बजी। मुसाफ़िर अपना-अपना सामान लेकर खड़े हो गये और जिधर से रेलगाड़ी आने वाली थी उधर को देखने लगे। रेल की सीटी सुनकर सब चौकन्ने हो गये। गाड़ी के खड़े होते ही भगदड़ मच गई। जिसके सींग जहाँ समाये वह उसी गाड़ी में घुस गया। गाड़ी सीटी देकर चल दी। भीड़ के मारे नाक में दम था, खड़े होने को भी जगह मुश्किल से मिली। राम-राम करके देहली का स्टेशन आगया। स्टेशन देख कर मैं चकित सा रह गया। ऐसी विशाल और सुन्दर इमारतें मैंने कभी न देखी थीं। मिठाई, फल, चाय, पुस्तकें, अख़बार आदि अनेक चीज़ें वहाँ बिक रही थी। यह देख कर मैं भौचक्का-सा रह गया।

बरात के साथ शहर में आया। मीलों तक आबादी देखकर मैं दंग रह गया। प्रसिद्ध २ स्थान देखे। चौथे दिन बरात के साथ घर लौट आया। देहली के विशाल व्यापार, दौलत, ऐश्वर्य और बाज़ारों की शोभा आज भी मेरी आँखों के सामने नाचा करती है।

अभ्यास

निम्नलिखित विषयों पर शीर्षक बनाओ और उनके आधार पर निबन्ध लिखो।

१—गाय और मोर। (२) तुलसीदास, डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद। (३) लोहा, गुड़ (४) अपने नगर या गाँव का वर्णन, किसी मेले का वर्णन, इलाहाबाद (५) वसंत, वर्षा, शरद। (६) स्काउटिंग, ग्राम पंचायतें। (७) क्रोध, स्त्री-शिक्षा, कपूर।

* समाप्त *

जीवाराम पालीवाल द्वारा आज़ाद भारत प्रेस, आगरा में मुद्रित।